साहित्य अकादमी से पुरस्कृत लेखक

आर. के. नारायण



डार्क रूम



डार्क रूम

डार्क रूम

(आर. के. नारायण के अंग्रेज़ी उपन्यास ‘Dark Room’ का हिन्दी अनुवाद)

आर. के. नारायण

राजपाल

अनुवाद
महेन्द्र कुलश्रेष्ठ

ISBN: 978-81-7028-811-4
प्रथम संस्करण : 2009, चतुर्थ आवृत्ति : 2014
© आर. के. नारायण के कानूनी उत्तराधिकारी
हिन्दी अनुवाद © राजपाल एण्ड सन्ज़
DARK ROOM (Novel) by R.K. Narayan

राजपाल एण्ड सन्ज़
1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट-दिल्ली-110006
फोन: 011-23869812, 23865483, फैक्स: 011-23867791

website : www.rajpalpublishing.com
e-mail : sales@rajpalpublishing.com

1

स्कूल का समय हुआ तो बाबू की तबियत अचानक खराब हो गई और सावित्री ने उसे बिस्तर पर आराम से लिटा दिया। लेकिन वह ज्यादा देर तक आराम नहीं कर सका, क्योंकि रमानी ने आकर पूछा, ‘क्या बात है?’

‘कुछ नहीं’, सावित्री जवाब देकर किचेन में घुस गई। अब रमानी ने मरीज़ की तरफ रुख किया और आवाज़ लगाई, ‘सावित्री!’ सावित्री जवाब देती तब तक उसने दो और आवाजें लगाईं और पूछा, ‘बहरी हो गईं क्या?’

‘नहीं, मैं सिर्फ...’

‘बाबू को क्या हुआ है?’

‘तबियत ठीक नहीं है उसकी।’

‘तुम फौरन उसे बीमारी का सर्टिफिकेट दे देती हो। बाबू, उठो, और स्कूल जाओ। किसी हालत में छुट्टी करने की जरूरत नहीं है।’

बाबू ने सवालिया नजरों से माँ की ओर देखा। सावित्री बोली, ‘लेटे रहो, बाबू। तुम आज स्कूल नहीं जाओगे।’

रमानी ने कहा, ‘तुम अपने काम से मतलब रखो। सुना तुमने...?’

‘लड़के को बुखार है।’

‘कोई बुखार-वुखार नहीं है। तुम किचेन में जो मर्जी हो करो, बच्चे की जिम्मेदारी मेरे ऊपर है। तुम औरतों का इससे कोई मतलब नहीं है।’

‘तुम्हें बच्चे की हालत दिखाई नहीं देती...?’

‘ठीक है, ठीक है। मुझे दफ्तर के लिए देर हो रही हैं,’ रमानी ने चिढ़कर कहा और खाने के कमरे में चला गया।

बाबू ने कपड़े पहने और स्कूल की तैयारी की। सावित्री ने उसे एक गिलास दूध पिलाया और रवाना कर दिया। इसके बाद वह किचेन में पहुँची। पति ने खाना शुरू कर दिया था, रसोइया उसे परोस रहा था।

सावित्री ने फिर कहना शुरू किया, ‘तुम्हें दिखाई नहीं दिया कि लड़का कितना बीमार है?’

रमानी ने इस बात का जवाब नहीं दिया, उलटे एक नया सवाल पूछ लिया, ‘आज खाने की सब्ज़ी किसने चुनी है?’

‘क्यों?’

‘बैंगन, ककड़ी, गाजर और पालक-साल के बारहों महीने और महीने के तीसों दिन यही सब्ज़ियाँ खानी पड़ती हैं। पता नहीं, कब इस घर में कुछ ढंग का खाने को मिलेगा। इसी खाने के लिए मैं दिन भर दफ्तर में काम करता हूँ। और पचास खर्चे करोगी—इसके लिए पैसा चाहिए, उसके लिए चाहिए...। रसोइया ठीक से नहीं बना सकता तो खुद खाना बनाओ। इसके अलावा और क्या काम है तुम्हारा...।’

सावित्री पति और रसोइये के बीच घूम-घूमकर केले के पत्ते में रखी सब्ज़ियाँ देखती रही और कहती रही, यह लाओ, वह लाओ। लेकिन यह काम बहुत आसान नहीं था क्योंकि खाने-पीने के मामले में रमानी की आदतें बहुत अनोखी थीं। ‘न जाने कब से तुम मुझे यह ककड़ी ही खिला रही हो। क्या मैं इसी के लिए ज़िन्दा हूँ?’ ज़रा सी भी देर हो जाती तो वह कहता, ‘अच्छा, इस ककड़ी की सब्जी के लिए मुझे दफ्तर से छुट्टी लेनी पड़ेगी! क्या बात है! और मंडी की सबसे सस्ती सब्जी के लिए भी लोग इतने कंजूस क्यों हो जाते हैं...दो-चार टुकड़ों में ही पूरे परिवार को निबटा देना चाहते हैं। कुछ ज्यादा भी बनाई जा सकती थी यह...। खर्च कम करना है इसलिए...लेकिन और चीज़ों में तो खर्च कम नहीं किया जाता...।’

सावित्री बिना कोई जवाब दिये उसका भाषण सुनती रहती, और उसकी चुप्पी भी उससे बरदाश्त नहीं होती थी। ‘चुप रहकर ताकत इकट्ठी कर रही हो! क्या करोगी इस ताक़त का? जब कोई कुछ पूछता है, तो उसकी बात का जवाब न देकर तुम उसकी इज्ज़त नहीं बढ़ातीं।’ लेकिन जब वह कुछ जवाब देती—कभी-कभी वह बोल भी उठती थी—तो वह चिल्लाकर कहता, ‘चुप रहो! तुम्हारे शब्दों से सब्ज़ी स्वादिष्ट नहीं हो जायेगी!’

खाना खाकर वह अपने कमरे में गया और दफ्तर जाने के लिए कपड़े पहनने लगा। इन पर वह बहुत ध्यान देता था, लेकिन जल्दबाजी भी करता जिससे मामला बिगड़ जाता था। वह नौकर रंगा को बार-बार कहता कि जूतों पर ठीक से पालिश क्यों नहीं हुई है, पैंट की बायीं क्रीज़ एकदम बेकार है, कोट हैंगर पर उलटा-सीधा टँगा है और जेबें बाहर निकली हुई हैं...। कई दफा वह सावित्री से जवाब तलब करता कि बटन क्यों ठीक नहीं लगे हैं या मोज़े के तलवे फटे हुए हैं...या वह रंगा पर नजर क्यों नहीं रखती। हर कपड़े पर वह नुक्ता-चीनी करता, लेकिन जहाँ तक टाई का सवाल है, उसे वह किसी को नहीं छूने देता था और खुद सँभालकर रखता था। टाई की तह बनाये रखने के लिए उन्हें वह तीन मोटी किताबों में दबाकर रखता था—ये किताबें थीं अन्नाडेल की खूब मोटी डिक्शनरी, बायरन के समग्र संकलन का महाग्रंथ और ‘एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका’ का कहीं से प्राप्त एक खंड—इनके पन्नों के बीच वह टाइयों को दबा-दबाकर रखता था।

फिर सिल्क का सूट पहनकर और धूप का टोप लगाये वह दरवाज़े पर आ खड़ा होता और आवाज़ लगाता, ‘अरे, कौन है वहाँ?’ जिसका मतलब होता था, ‘सावित्री, बाहर आओ और मुझे विदा करो।’ सावित्री निकलकर आती तो वह कहता, ‘दरवाज़ा बंद कर लो।’

‘पैसे खत्म हो गये हैं....शाम के लिए सब्ज़ी खरीदनी है।’

‘एक रुपया काफी होगा?’ यह कहकर उसने रुपया उसके हाथ में रख दिया और

बाहर निकल गया। कुछ क्षण तक सावित्री गैरेज से निकाली जाती पुरानी शैवरले गाड़ी की फूँ-फाँ सुनती, जो आसानी से चलने को तैयार नहीं होती थी। फिर जब गाड़ी बाहर सड़क पर चल पड़ती तो चारों ओर शांति छा जाती।

इसके बाद सावित्री का काम होता अपने देवी-देवताओं से संबंध बनाना। वह पूजा के कमरे में जाती, दीपक और धूप जलाती, सामने खड़ी मूर्तियों पर चमेली और कनेर के फूल चढ़ाती और सालों पहले माँ से सीखी सभी प्रार्थनाएं और मंत्र क्रमवार बोल जाती। फिर वह जमीन पर सीधे लेटकर प्रणाम करती—और इसके बाद उठकर किचेन में जाती, और पत्ता लेकर खाने बैठ जाती। रसोइया मुँह फुलाये उसे खाना परसता। वह पूछता, ‘आज का खाना खराब था, मैडम?’ वह अपनी आलोचना से बहुत परेशान होता था और जब तक रमानी किचेन में रहता, काँपता रहता था।

‘आज तुम्हें बैंगन नहीं बनाने चाहिए थे। कल भी तो बनाये थे,’ सावित्री बोली। ‘अब हफ्ते भर इन्हें मत बनाना।’

‘ठीक है, मैडम। आज का खाना बहुत खराब है क्या?’

‘खराब तो नहीं है। हाँ, चटनी में इमली ज़रा कम डालनी थी। तुम्हारे मालिक को इमली ज्यादा पसंद नहीं है।’

रसोइया घुग्घू की तरह चुपचाप उसे खाना खिलाता रहा। रोज़ यह इसी तरह होता था। वह आलोचना और भूख, दोनों से परेशान रहता था, भूख इसलिए कि उसे ही सबसे अंत में खाने को मिलता था... और वह हर वक्त भूख महसूस करता रहता था। दूसरे रसोइये तो इस समस्या का हल बीच-बीच में थोड़ा-बहुत मुँह में डालकर कर लेते थे, लेकिन इसके लिए यह संभव ही नहीं था, क्योंकि सावित्री सब चीजें अलमारी में ताला लगाकर बंद रखती थी और खुद अपने हाथों से उसे जरूरी चीजें निश्चित मात्रा में देकर चली जाती थी।

‘पता नहीं, मालिक क्यों कभी खुश नहीं होते! मैं तो अच्छा से अच्छा बनाने की कोशिश करता हूँ। आदमी इससे ज्यादा क्या कर सकता है?’

पति के भाषण की तरह रसोइये की शिकायतें भी रोज़ की बात थी, इसलिए सावित्री चुपचाप खाना खाती रहती और ध्यान ही नहीं देती थी। अब वह बाबू के बारे में सोचने लगी। बेटा सचमुच बीमार लग रहा था और हो सकता है, क्लास में उसकी हालत और भी खराब हो गई हो। वह सोचने लगी कि वह कितनी बेबस थी, घर के मामलों में कुछ भी नहीं कर सकती थी, और शादी के पंद्रह साल बाद उसकी यह स्थिति थी। बाबू बीमार था लेकिन वह उसे आराम करने को भी नहीं कह सकती थी। वह सोचने लगी कि शादी के बाद शुरू के ही सालों में अगर वह कुछ ज्यादा सख्ती से काम लेती तो आज स्थिति इतनी खराब न होती। आजकल की लड़कियाँ तो शादी के बाद पतियों को पूरी तरह अपने काबू में कर लेती हैं, उसकी सहेली गंगू ही है जिसने अपने पति पर पूरी नकेल डाली हुई है।

खाना खाकर वह हॉल में पड़ी हुई अपनी बेंच पर जा लेटी, मुँह में पान और सुपारी के टुकड़े डाले और तमिल की एक पत्रिका उठाकर पढ़ने लगी। आधे घंटे में पूरे घर में शांति छा गई। नौकर ने उस दिन के कपड़े धोकर सूखने डाल दिये थे और आराम से बीड़ी पीने के

लिए सामने वाली दुकान पर जाकर बैठ गया था; रसोइये ने भी किचेन का काम निबटा लिया था और एक काफी हाउस में अपने दोस्तों के साथ गपशप करने और अपने घरों की राजनीति पर टीका-टिप्पणी करने चला गया था। बगीचे के पक्षियों और कौवों की एकाध आवाज़ कभी-कभी यह शांति भंग कर देती थी। पत्रिका पढ़ते-पढ़ते सावित्री ने भी एक नींद ले ली।

एक्सटेंशन एलीमेंटरी स्कूल में एक बजे की घंटी बजी, तो सावित्री चौंककर उठ बैठी। इन्टरवल की छुट्टी हो गई थी और उसकी दोनों बेटियाँ सुमति और कमला, अभी कूदती हुई आ रही होंगी। सावित्री उनके खाने के लिए भात और दही मिलाने किचेन में जा पहुँची। उसने किचेन में अलमारी को खोला ही था कि गोलमटोल छोटी-सी कमला, पतली-सी चुटिया लटकायें, उछलती-कूदती भीतर घुस आई और पत्ता निकालकर झटपट खाना खाने बैठ गई। दौड़कर आने के कारण वह हाँफने लगी थी।

'मैंने तुम्हें कितना मना किया है कि धूप में इस तरह दौड़कर मत आया करो। सुमति कहाँ है?'

'सहेलियों के साथ आ रही है।'

'तुम उसके साथ क्यों नहीं आईं?'

'वह मुझे अपने साथ नहीं रखती। वे आठवीं क्लास में पढ़ती हैं।'

कमला ने जल्दी-जल्दी कई ग्रास मुँह में भर लिये और उठने लगी। सावित्री ने उसे पकड़कर फिर से बिठा दिया और बोली, 'भात पूरा खत्म करो। मैंने बहुत थोड़ा दिया है।' कमला ने अपने को छुड़ाने की कोशिश की।

'माँ, देर हो रही है। मुझे जाना है। दिन भर खाती ही रहूँगी क्या...?'

'पूरा खत्म कर लोगी तो तीन पैसे मिलेंगे।'

यह सुनते ही कमला खाने बैठ गई और स्कूल की उस दिन की कहानियाँ सुनाने लगी। 'आज टीचर ने सम्बू को छड़ियों से पीटा। बड़ा खराब लड़का है वह। उसने एक लड़के को पत्थर मारा था। वह रोज़ मुझे धमकी देता है कि कापियाँ छीन लेगा।'

खाने के बाद कमला अपनी किताबें और स्लेट उठाकर जाने को तैयार हुई, कि सुमति घर में घुसी। उसने डपटकर पूछा, 'तुम अभी स्कूल जा रही हो?'

'हाँ।'

सुमति बोली, 'माँ, तुम कमला को इतनी जल्दी क्यों जाने दे रही हो? अभी तो आधा घंटा बाकी है।'

'मुझे जाना है...कुछ काम है।' यह कहकर कमला गायब हो गई।

सुमति अपनी मेज़ के पास गई, सवेरे की किताबें सँभालकर रखीं और शाम की क्लासों की किताबें निकालीं, अपनी कापियाँ करीने से एक के ऊपर दूसरी रखीं उनके ऊपर गत्ते का पीला डिब्बा रख दिया जिसमें कई पेंसिलें, एक रबड़ और कुछ रंगीन धागे रखे थे। डिब्बा खोलकर उसने पेंसिलों की नोंकें जाँचना शुरू किया कि ठीक से बनी हैं या नहीं। तभी सावित्री वहाँ आ पहुँची और कहने लगी, 'बड़े आराम से कर रही हो?'

‘आज संगीत का टीचर देर से आयेगा।’

‘भात तैयार है तुम्हारा।’

यह सुनकर सुमति ने चेहरा टेढ़ा करके कहा, ‘माँ, मुझे भूख नहीं है।’

माँ ने घूरकर उसे देखा और बोली, ‘मैडम, मुझे ज्यादा परेशान मत करो।’

‘मैं भात खा-खाकर थक गई हूँ, सवेरे भात, दोपहर को भात, शाम को भात।’

फिर वह चुपचाप किचेन में जाकर बैठ गई। सावित्री उसे खाना खाते देखती और सोचती रही कि यह लड़की दिनों दिन दुबली क्यों होती जा रही है। ग्यारह साल की हो रही है लेकिन उतनी ही है जितनी तीन साल पहले थी और कोई फूँक मार दे तो उड़ जायेगी। यह कुछ बुरी बात भी नहीं है; यह आनुवंशिक भी हो सकता है, दादी पर गई लगती है—वही शक्ल, वही साँवला रंग, छोटा मुँह, छोटी-छोटी आँखें और सीधे खड़े बाल। ‘मेरी माँ भी चालीस साल पहले ऐसी ही रही होंगी।’

सुमति बोली, ‘माँ, मुझे सोमवार को चार आने चाहिए।’

‘किस लिए?’

‘मुझे कढ़ाई की किताब खरीदनी है।’

‘अच्छा। यह बताओ कि तुम कमला को अपने साथ क्यों नहीं लाती, वह अकेली सड़क पर दौड़ती क्यों आती है?’

‘मेरी वह सुनती ही कहाँ है!’

‘लेकिन वह तो कहती है कि तुम उसे अपने साथ रखती ही नहीं!’

‘वह मेरी सहेलियों को परेशान करती रहती है। हरेक से पेंसिल और रबड़ माँगती रहती है। कितने शर्म की बात है!’

‘ठीक है, लेकिन उस पर नजर रखना तुम्हारा काम है।’

सुमति स्कूल चली गई तो सावित्री ने रसोइये को पुकारा, लेकिन उसका कहीं पता नहीं था। दो बज गये थे लेकिन अभी तक वह वापस नहीं लौटा था। उसने कई दफा कहा था कि दो बजे से पहले लौट आया करे। लेकिन ढाई से पहले वह वापस नहीं लौटता था और फिर कॉफी तथा नाश्ता तैयार करने में साढ़े तीन बजा देता था।—इसके फौरन बाद रात के डिनर की तैयारी शुरू हो जाती थी, और इस सबका कोई अंत दिखाई नहीं देता था। ज़िंदगी में सवेरे से रात तक पेट भरने के इस घटिया काम के अलावा और कुछ करने को नहीं है?

ढाई बजे के बाद रसोइये ने घर के भीतर कदम रखा। सावित्री बोली, ‘मैं कॉफी के लिए पानी रखने ही जा रही थी...।’

‘क्यों, मैडम क्यों...इसकी क्या जरूरत थी।’

‘तुम दो बजे घर न आ सको तो मुझे साफ बता दो, मैं खुद नाश्ता तैयार कर लिया करूँगी। मैं और भी बहुत से काम करती हूँ, एक और बढ़ जायेगा तो मुझे कोई फ़रक नहीं पड़ेगा। तुम आराम से लौटना और बचा-खुचा काम कर दिया करना।’

रसोइया गुस्से में भनभनाता किचेन में जा घुसा, ‘आदमी जाता है तो वापस भी आ जाता है...कोई हमेशा के लिए तो नहीं चला जाता। उसे, दो बज गये या ढाई, इसका पता

कैसे चले? 'कोई दो घड़ियाँ एक-सा वक्त नहीं बतातीं। दो बजे जब स्कूल की घंटी बजी, तब होटल की घड़ी पौने दो बजा रही थी। अगर आप चाहती हैं कि मैं ठीक वक्त पर लौटूँ, तो मेरे लिए एक घड़ी क्यों नहीं खरीद देतीं?'

फिर सावित्री जब किचेन में घुसी तो उसने घोषणा की, 'कल से मैं दोपहर को नहीं जाऊँगा, यहीं रहूँगा।' सावित्री बोली, 'मुझे तुम्हारे बाहर जाने पर कोई एतराज़ नहीं है, लेकिन अगर तुम दो बजे वापस नहीं लौटोगे, तो खाने-पीने का यह धंधा दिन भर चलता रहेगा...।' उसने रात के खाने के बारे में कुछ हिदायतें दीं और कहा, 'मैं बाहर जा रही हूँ। बच्चे मेरे लौटने से पहले स्कूल से आ जायें तो उन्हें कॉफ़ी और नाश्ता दे देना। बाबू शाम को लौटेगा। उसकी तबियत ठीक नहीं है। उसे कॉफ़ी देना और नाश्ता न करना चाहे, तो रहने देना।'

उसने मुँह धोया, बाल काढ़े, माथे पर लाल टीका लगाया, और क्षण भर साड़ी को ध्यान से देखा कि इसे बदल कर दूसरी पहनने की जरूरत तो नहीं है, फिर सिर झटककर फैसला किया, 'यह चलेगी...मैं एक्सटेंशन से बाहर तो जा नहीं रही हूँ...।'

अब वह साढ़े तीन बजे निकलकर पड़ोसियों से गपशप के लिए तैयार थी। चलते-चलते उसने रसोइये को फिर आवाज़ दी और कहा, 'बच्चों से कहना, मैं जल्दी लौट आऊँगी। बाबू को कॉफ़ी देना मत भूलना।'

साढ़े आठ बजे रोज़ की तरह सावित्री को शेवरले का भारी हार्न सुनाई दिया और उसने नौकर को आवाज़ दी, 'रंगा, गैराज का दरवाज़ा खोल देना। रमानी ने नियम बना लिया था कि फर्लांग भर की दूरी से ही हार्न देता, दो लंबे हार्न जिनका मतलब था, 'रंगा, अपनी जान की खैर चाहते हो तो मेरे पहुँचते ही गैराज का दरवाज़ा खुला मिले', और सावित्री के लिए यह एक तरह की चेतावनी थी, 'खबरदार, रंगा ठीक से काम करे, यह देखना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है।' कई दफा हार्न की आवाज़ ज़रा हलकी होती, और सावित्री को अभ्यास हो गया था कि इस आवाज़ के हलके-भारीपन से पति के उस दिन के मूड का अंदाज़ लगा ले। आज यह आवाज़ मद्धिम ढंग की थी। इसका अर्थ यह हो सकता था कि वह डिनर के लिए कोई मेहमान भी साथ ला रहा है, या आज उसका मूड अच्छा है, जिसकी वजह यह हो सकती है कि क्लब में पत्ते खेलते हुए उसने कोई जीत हासिल की है। वजह जो भी हो, आज उसे ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं है। अगर वह खुश होता तो सबके प्रति उसका व्यवहार अच्छा होता, बल्कि ज़रा ज्यादा भी अच्छा होता, इतना कि खटकने लगता। अगर कोई मेहमान होता तो वह उसके व्यवहार से इतना प्रभावित होता, कि उसमें घर की असलियत बिलकुल छुप जाती थी। सावित्री को डर भी लगा क्योंकि अगर कोई मेहमान साथ आता तो किचेन में तेल, कढ़ाई, स्टोव वगैरह की खटपट बहुत ज्यादा बढ़ जाती, और बहुत थोड़े समय एक-दो विशेष खाने भी तैयार करने पड़ जाते। रमानी की आदत थी कि मेहमान के आने की सूचना पहले से कभी नहीं देता था, और डायनिंग टेबिल पर कोई ज़रा सी कमी भी बरदाश्त नहीं करता था। वह यूँ ही क्लब से किसी दोस्त को डिनर के लिए साथ ले आता, और अगर

कोई कहता कि मेहमान की सूचना पहले से दे दिया करे, तो एकदम बिगड़ उठता और कहता, ‘हम कोई इतने गिरे-पड़े नहीं हैं, जो बिना बताये आये एक आदमी को भी ढंग से खाना न खिला सकें।’

‘लेकिन इससे कभी काफी खाना बच जाये तो...’, सावित्री ने एक-दो बार सवाल किया।

‘तो क्या, नाली में फेंक दो उसे...।’

‘हम किसी भिखारी को भी तो दे सकते हैं?’ सावित्री ने सुझाव दिया।

‘हाँ, ठीक है, हर रोज़ भिखारियों को खाना दिया करो, नियम बना लो यह...। याद रखना, हमारे दरवाजे से कोई भिखारी लौटना नहीं चाहिए...नहीं तो मैं...।’

लेकिन सावित्री ने इन अचानक आने वाले मेहमानों से निबटने का एक और तरीका निकाल लिया था।

वह कुछ मसाले वगैरह तैयार रखती थी और मेहमान आने पर रोजमर्रा के खाने में ही कुछ तली हुई चीजें डालकर उन्हीं को विशेष बना देती थी। उसकी तरकीबों से ज़रा देर में रोज़ का सादा खाना दावत में तब्दील हो जाता था।

लेकिन आज हार्न की मुलायम आवाज की वजह मेहमान नहीं थी। पति को अकेले गैराज में घुसते देखकर सावित्री का मन हलका हो गया। रमानी के प्रसन्न होने का दूसरा सबूत यह था कि रोज़ की तरह सिर झुकाये घर के दायें कक्ष में घुसने के स्थान पर वह दरवाजे पर ही खड़ा होकर जूता साफ करने लगा, और फिर चारों तरफ नजऱ डाली। उसने सावित्री से यह भी नहीं कहा, ‘देख लेना, रंगा ठीक से गैराज बंद करता है या नहीं’, बल्कि यह पूछा, ‘बच्चों ने खाना खा लिया? और कमरे में घुसते हुए यह हमेशा वाला फिकरा कहा, ‘श्मशान की तरह घर को अंधेरा रखकर बिजली क्यों बचाई जा रही है?’ बल्कि खुद बत्तियां जला दीं। सावित्री ने चैन की सांस ली; और बच्चों ने भी, जो दूसरे कमरे में अपनी मेजों पर चुपचाप किताब खोलकर जा बैठे थे, सुकून महसूस किया। उन्हें संकेत मिल गये थे, आज पापा खुश हैं, जिसका मतलब यह हुआ कि वे डायनिंग रूम के आसपास घूमते रहकर बड़ों की बातें सुन सकते हैं—नहीं तो उन्हें देर तक किताबों में मुँह गड़ाये रहकर ठीक समय पर बिस्तरों पर लेट जाना होता था।

कपड़े उतारने और तरोताज़ा होने के बाद रमानी फुर्ती से डायनिंग रूम में पहुँचा और सावित्री से पूछने लगा, ‘तुमने डिनर कर लिया होगा!’

‘अभी नहीं।’

‘सचमुच पतिव्रता नारी हो तुम। पति से पहले खाना नहीं खाओगी। शास्त्रों में जैसी नारियों का वर्णन हुआ है, उन्हीं जैसी....।’

‘और तुम?’ सावित्री ने सवाल किया—आज वह सवाल कर सकती थी, कुछ भी कह सकती थी। आज वह खूब खुश और आज़ाद हो सकती थी।

‘मैं? मैं हूँ—मेरे लिए तो तुम्हें एक नया ही पुराण लिखना पड़ेगा।’ यह कहकर वह जोर से हँसा और सावित्री की पीठ थपथपाई। वह उसका अर्थ समझ गई : अब वह उस पर

अपना प्यार बरसायेगा, पागलों जैसा प्यार, नौकर और बच्चों, सबके सामने।

खाना खाते हुए उसने देखा कि बाबू किवाड़ के पीछे छिपा खड़ा है तो उसने पूछा, 'तुम अभी तक ज़िन्दा हो बच्चे! सवेरे जिस तरह तुम्हारी माँ ने, तुम्हें बीमार बताया, उससे तो मैंने यही समझा....'

'दोपहर बाद मेरा सिर दर्द खत्म हो गया था, पापा।'

'जरूर हो गया होगा, जिससे तुम शाम को हमेशा की तरह क्रिकेट खेल सको। है न यह बात?' बाबू चुप रहा, फिर भी रमानी ने सवाल कर-करके पता लगा लिया कि शाम को वह किक्रेट खेलने गया था।

'सुनो बच्चे, मैं भी कभी तुम्हारी तरह था और इस तरह के झटके दिया करता था। इसलिए तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते', यह कहकर रमानी ने सावित्री की तरफ रुख किया और पूछा, 'बताओ! अब कौन ठीक निकला?'

सावित्री झेंप गई। फिर भी बोली, 'सवेरे इसके सिर में दर्द था जरूर...', लेकिन यह कहकर वह भी सोचने लगी कि इतनी ज्यादा फ़िक्र करना ठीक नही है।

रमानी कहने लगा, 'सुनो मेरी बात। और इसे याद भी रखना। सिर दर्द का अपना अलग कानून है। वह स्कूल जाने के वक्त शुरू होता है और क्रिकेट खेलने के समय खत्म हो जाता है।' यह कहकर वह खूब हँसा और यह उक्ति बनाने पर खुश भी हुआ। बाबू चुपचाप चला गया। रमानी ने सावित्री से कहा, 'तुम्हें अभी बहुत कुछ सीखना है। अभी तुम बच्ची हो, कुछ समझदार भी हो, लेकिन हो बच्ची ही।'

यह उसके प्यार की शुरुआत थी। इसे समझकर सावित्री ने विषय बदलने की कोशिश की, 'और रामास्वामी का क्या हुआ? तुमने उस बारे में तो मुझे कुछ नहीं बताया।'

'अरे, वह? वह किस्सा तो बहुत दिन पहले खत्म हो गया। मैं हैड आफिस में उसकी शिकायत नहीं करना चाहता था। इसलिए चेतावनी देकर छोड़ दिया। लेकिन उसने रकम वापस कर दी।'

'इसके लिए तुम्हें तो कोई परेशानी नहीं झेलनी होगी?'

'मुझे परेशानी! मैं उन्हें यह सब करने नहीं देता, यही बहुत काफी है। आखिर ये गरीब लोग हैं। कभी लालच में आ जाते हैं। और रकम भी ज्यादा नहीं थी। यूँ उसका काम अच्छा है।'

'लेकिन तुम्हारे अफसर तुम्हारा इस तरह मामला निबटा देना पसंद न करें...।'

'न करें तो रमानी साहब का इस्तीफा हाजिर है। वे जब चाहें इस शाखा के लिए दूसरे सेक्रेटरी की तलाश कर सकते हैं।'

'अगर वे तुम्हारा इस्तीफा मंजूर कर लें, तो?'

'मैडम, मैं मानता हूँ कि इंग्लेडिया इन्श्योरेंस कंपनी काफ़ी बड़ी कंपनी है, लेकिन दुनिया में यह अकेली इंश्योरेंस कंपनी नहीं है। मेरे चार्ज लेने से पहले मालगुडी जिला दस रुपए सालाना की पालिसी नहीं देता था, और सब हर साल दस लाख से ज्यादा का बिज़नेस हो रहा है। इस बारे में आपका क्या कहना है?' सावित्री की चालें हमेशा कामयाब होती थीं।

जब भी रमानी का मूड बदलना जरूरी होता, उसे अपनी नौकरी और धंधे की याद दिलाना काफी होता था। फिर वह बड़े विस्तार से अपनी सफलताएं बयान करने लगता और बताता कि कहाँ-कहाँ से उसके लिए नौकरी के ऑफ़र आ रहे हैं। इन बातों में उसका रोमांस का मूड खत्म हो गया, और तभी दोनों लड़कियाँ वहाँ आ पहुँचीं।

'आह, देवी जी', रमानी ने कमला से पूछा, 'आप अब तक कहाँ छिपी रहीं?'

'मैं अपने लेसन कर रही थी, पापा।'

'अच्छा...लेसन! आप सचमुच देवी हैं। आपको पता नहीं चला कि आपके पापा घर आ गये हैं?'

'पता चला था, पापा...।'

'यानी आप हम गरीबों की ज्यादा परवाह नहीं करतीं', रमानी ने शैतानी से कहा, और अब सुमति की तरफ मुड़कर पूछा, 'और आपके मिज़ाज कैसे हैं?...आप कितनी गंभीर दिख रही हैं...लग रहा है, दादी बन गई हैं आप!'

लड़कियाँ ये बातें सुनकर खिलखिलाकर हँसी, एक दूसरे को गहरी नज़र से देखा, और दोबारा फिर खिलखिलाईं। सावित्री भी हँसी-अगर न हँसती तो रमानी को बुरा लग सकता था। रमानी ने दोनों बेटियों की तरफ उदार भाव से देखा और फिर सावित्री पर नज़र डाली और आँख मारकर कहा, 'पता नहीं, दोनों में से कौन तुम्हारे जैसी बनेगी! लेकिन, हाँ...तुमसे आधी भी बन जाय...और आज मुझे तुम्हारे बालों का जूड़ा बहुत अच्छा लग रहा है।'

सावित्री उठने लगी, बोली, 'चलो, अब उठो और हाथ धोओ...।'

2

सावित्री साउथ एक्सटेंशन के बीसियों घरों में आती-जाती थी लेकिन उसकी सहेलियाँ दो ही थीं—गंगू और जानम्मा।

गंगू उसे बहुत आकर्षक लगी। उसे हँसना आता था, हलके-फुलके कामों में वह उस्ताद थी और उसकी महत्वाकांक्षाएं भी अद्भुत थीं। उसका पति एक स्कूल में अध्यापक था और चार बच्चे थे। उसकी एक आकांक्षा थी कि फिल्म-स्टार बने, जबकि न वह शक्ल-सूरत से कुछ खास थी और न उसे अभिनय करना आता था; वह गायिका भी बनना चाहती थी हालांकि आवाज़ उसकी एकदम माशाअल्ला थी; उसे उम्मीद थी कि किसी दिन वह ऑल इंडिया वुमेन्स कान्फरेंस की मालगुड़ी प्रतिनिधि बनकर बाहर जायेगी; वह स्थानीय निकाय और विधान सभा में चुनकर जाना चाहती थी; और यह भी कि वह कांग्रेस की नेत्री बन जाये। वह अपने दिन इनमें से किसी न किसी आकांक्षा की पूर्ति के लिए तैयारी में बिताती रहती थी। सार्वजनिक कार्यों में आगे बढ़ने के लिए, वह सोचती थी कि उसे अंग्रेज़ी कुछ ज्यादा अच्छी आनी चाहिए, उससे ज्यादा जितनी से वह परी कथाएं पढ़-समझ लेती थी या शादी के बाद शुरू के वर्षों में पति को पत्र लिखने के लिए जितनी की जरूरत होती थी। इसलिए उसने एक ट्यूटर से पढ़ना शुरू किया, जो उसे स्कॉट के उपन्यास पढ़ने के लिए देता था और ऊटपटाँग सवाल करके उनके अंग्रेजी में जवाब देने को कहता था। फिल्मी जीवन की तैयारी के लिए वह हर हफ्ते दो तमिल फिल्में देखने जाती और उन दिनों चल रहे गानों को तरह-तरह से गुनगुनाकर उनका अभ्यास करती, कुरमुरी क्रेप की साड़ियाँ पहनती और बालों का जूड़ा काफी तिरछा करके लगाती थी। वह गैर जिम्मेदाराना ढंग से बात करना और साउथ एक्सटेंशन के बुजुर्गों में चर्चित होने के तरीके सीख रही थी। वह, जब मर्ज़ी होती, घर से बाहर निकल जाती, जहाँ मन होता घूमती-फिरती, सब जगह अकेली जाती, लोगों के घूरने का जवाब उसी तरह उनकी तरफ घूरकर देती, और काफी जोरदार आवाज़ में बात करती। उसका पति उसकी किसी बात में दखल नहीं देता था और वह जो चाहती, करने देता था, और इस तरह स्त्री-स्वातंत्र्य का समर्थक बनकर प्रसन्न होता था। और कहता था कि मैं तो मतदान और तलाक हर चीज़ को सही मानता हूँ।

मुहल्ले में लोग उसे बरदाश्त करते थे, उसकी हरकतें पसंद भी करते थे, लेकिन इस सबके बावजूद वह बड़ी धार्मिक थी, नियमित रूप से मंदिर जाती थी, और चरित्र भी उसका सही था।

दूसरी सहेली जानम्मा बिलकुल अलग किस्म की स्त्री थी। ज्यादा उम्र की, पैसे वाली और गोल मटोल। उसके पति सरकारी वकील थे। वह समाज में घुलती-मिलती भी नहीं थी। सावित्री उसकी बड़ी इज्ज़त करती थी और जब भी कोई मुसीबत पेश आती, उसी से सलाह लेती थी।

सावित्री इन दोनों की मित्र थी, हालांकि ये दोनों एक-दूसरे के बिलकुल खिलाफ़ थे। जानम्मा गंगू को 'चिलबिली चुहिया' कहती थी, और गंगू उसके आकार और चाल को लेकर मज़ाक करती थी, उसे 'मंदिर का रथ' कहती थी। जानम्मा सावित्री से पूछती कि वह इस बेवकूफ लड़की का साथ क्यों इतना पसंद करती है। गंगू उससे सवाल करती, 'तू इस जैसे प्राणी के साथ गपशप कैसे कर लेती है? पास से उसका चेहरा काफ़ी डरावना नहीं लगता? जब हम स्कूल में पढ़ते थे तब हमारी हेडमिस्ट्रेस बिलकुल इसी की तरह थी।'

इन दोनों जानी दुश्मनों के बीच सावित्री बहुत खूबसूरती से संतुलन बनाकर रखती थी। बस, सिर्फ एक दफ़ा वह मुश्किल में पड़ गई—जब दोनों उसके घर पर आ पहुँचीं। हुआ यह कि गंगू दिन में उससे मिलने आई थी और शाम को जानम्मा भी वहाँ पहुँच गई। सावित्री हॉल में पड़ी बेंच पर गंगू के साथ बैठी थी। जानम्मा को आते देख गंगू की तो जान ही निकलने लगी। लेकिन वह उठकर जाने को भी तैयार नहीं थी। जानम्मा भी उसे देखकर बीच में ही ठिठक गई, जैसे पैर किसी जाली में पड़ गया हो। सावित्री ने कहा, 'आओ, भाभी आओ', और बेंच पर ही जरा सा सरक कर उसके बैठने की भी जगह कर दी। अब उसके दोनों तरफ एक-दूसरे के जानी दुश्मन बैठे थे। कुछ देर तक चुप्पी बनी रही। फिर सावित्री ने मौसम के बारे में एक फालतू-सी बात कही कि आज गर्मी ज़रा ज्यादा ही है। इसका किसी ने जवाब नहीं दिया और लगा कि बात अपने आप खत्म हो रही है, तो सावित्री ने बात जारी रखने के लिए इसी सिलसिले का दूसरा फालतू सवाल किया, 'गंगू, तुम्हें गर्मी महसूस नहीं हुई?'

'हाँ, कुछ महसूस हुई', गंगू ने मरा-सा जवाब दिया।

अब सावित्री को लगा कि वह एक को ही ज्यादा महत्व दे रही है, जिसका दूसरे को बुरा लग सकता है, तो उसने फौरन जानम्मा की ओर मुड़कर कहा, 'इन दिनों तो इतनी गर्मी पड़ती नहीं थी...तुम्हारा क्या ख्याल है?'

'हो सकता है', जानम्मा का जवाब था।

फिर चुप्पी। सावित्री को यह स्थिति बड़ी हास्यास्पद लगी कि तीनों एक-दूसरे के बगल में स्कूल के बच्चों की तरह बैठे हैं लेकिन बोल एक ही सकता है। तभी जानम्मा बेंच से उठी और सामने जमीन पर यह कहती जा बैठी कि 'मुझे जमीन पर ज्यादा आराम मिलता है।'

अब सावित्री बड़ी मुश्किल में पड़ गई क्योंकि बड़ी उम्र की जानम्मा तो जमीन पर बैठी थी, और वह भी गंगू को छोड़कर उसके साथ नीचे नहीं बैठ सकती थी। इसलिए सावित्री ने नया उपाय निकाला, वह उठी और ऐसी जगह जाकर खड़ी हो गई जहाँ से उसकी दूरी दोनों से बराबर ही लगती थी। गंगू दीवार पर लगी एक तस्वीर को एकटक देखे जा रही थी और जानम्मा सीधे दरवाजे पर नजर गड़ाये थी—और सावित्री बेचारी समझ ही नहीं पा

रही थी कि क्या करे क्या न करे।

इस स्थिति का अंत किस प्रकार हो? दोनों में से कोई पहले उठकर जाने को तैयार न था। सावित्री जितने भी अच्छे ढंग से जो भी बात कर सकती थी, करती रही—उस दिन नाश्ते में क्या बनाया था, सब्ज़ियों की कीमतें बढ़ती ही चली जाती हैं, अच्छी सब्ज़ियाँ तो मिलती ही नहीं, कुछ सब्ज़ी वाले कितने चालाक और मक्कार होते हैं, हर रोज़ बाज़ार खरीद-फ़रोख्त करना कितना मुश्किल होता है, नौकरों और रसोइयों के साथ क्या-क्या परेशानियाँ झेलनी पड़ती हैं, वगैरह, वगैरह। ये सब बातें वह सामने खड़ी, बिना किसी की तरफ देखे, करती रही। उसे दो दफ़ा बैठने को कहा गया और दोनों दफ़ा उसने घुटने में दर्द की बात कही।

यह भयंकर स्थिति समय के सहारे ही हल हुई। सात बजे और सरकारी वकील के घर लौटने का समय हुआ तो जानम्मा को कहना पड़ा कि अब वह चलेगी क्योंकि पति के लौटने पर उसका वहाँ होना जरूरी है। जब वह घर से बाहर निकल आई तो गंगू ने विजयी भाव से कहा, ‘वह यह समझती होगी कि मैं उससे डरकर पहले चली जाऊँगी।’

3

एक शाम जब सावित्री जानम्मा के घर पर थी, कमला दौड़ती हुई आई और बोली, 'पापा फ़ौरन बुला रहे हैं।'

'पापा! घर आ गये क्या?'

यह अनोखी बात थी। सावित्री का दिल तेज़ी से धड़कने लगा। क्या उनकी तबियत खराब हो गई? या कुछ और हो गया या घर को कुछ हो गया? आज क्लब क्यों नहीं गये? 'कमला, पापा जल्दी घर कैसे आ गये?' उसने पूछा।

'मुझे नहीं पता, माँ। मैं तो कुट्टी के घर में खेल रही थी कि उन्होंने बुलाया और जल्दी से तुम्हें ढूँढ़ लाने को कहा। मैं तो पापा से बात भी नहीं कर सकी, वे बड़े गुस्से में दीख रहे थे।'

सावित्री उठी और जानम्मा से बोली 'तो मैं चल रही हूँ,' और यह कहकर वह भागती हुई घर की ओर चली। कमला उसके आगे उछल-उछलकर चल रही थी। 'कमला, तुम सीधे क्यों नहीं चलतीं? इस तरह अपनी गर्दन तोड़ लोगी।'

'माँ, मैं देखना चाहती हूँ कि हम दोनों में से पहले घर कौन पहुँचता है।'

जब वह अपनी सड़क पर मुड़ी तो देखा कि गाड़ी बाहर ही खड़ी है। 'कमला, उन्होंने तुम्हें यह नहीं बताया कि इतनी जल्दी क्या जरूरत है। कमला ने सिर हिलाया और कहा, 'सुमति और बाबू को घर में न देखकर वे बहुत नाराज़ हुए।'

'बच्चे शाम के वक्त घर में कैसे रह सकते हैं? उन्हें नहीं मालूम कि बच्चों के खेलने का यही समय है?'

पति को देखते ही सावित्री का गला खुश्क हो गया। वे बरामदे के सामने तेज़ी से चहल कदमी कर रहे थे। कोट उतार दिया था और नीले रंग की जर्सी पहन ली थी। पत्नी को घूरकर देखा और बोले, 'आधे घंटे से इन्तज़ार कर रहा हूँ। कोई दफ्तर से थका-माँदा आता है और उसे दरवाजे और खिड़कियाँ ही देखने को मिलती हैं। सब कहाँ चले गये? कोई भी आये और सारा सामान उठाकर चलता बने।'

'रसोइया घर पर था...।'

'वह पहरेदार नहीं है। तुम चाहती हो कि वह सड़क पर चूल्हा रखकर खाना भी बनाये और घर की देखभाल भी करे?'

लेकिन सावित्री का संदेह दूर हो गया था। न रमानी बीमार था और न कोई गलत बात

हुई थी। वह जानती थी कि रमानी या तो उससे डिनर पर चलने को कहेगा या किसी और काम के लिए कार पर साथ ले जायेगा। उसने घड़ी देखते हुए कहा, 'देर हो रही है। मेरे साथ सिनेमा देखने चल रही हो या नहीं?'

'इस वक्त?'

'हाँ, अभी।'

'सुमति और कमला कहाँ हैं? बाबू खेलने गया होगा। रंगा को भेजकर इन्हें बुलवाओ, मैं तब तक कपड़े बदलती हूँ।'

'बच्चे फिर किसी दिन देख आयेंगे। आज हम अकेले ही जायेंगे।'

'अच्छा', यह कहते हुए उसे बुरा लगा। लेकिन जानती थी कि कहने-सुनने का कोई मतलब नहीं है। फिर भी बोली, 'इन्हें भी चलने दो, ये भी देखे लेंगे...।'

'बच्चे हमेशा बड़ों के साथ जायँ, यह अच्छा नहीं है।'

'कमला को ही साथ ले लो', सावित्री ने कहा।

'पापा, मुझे भी सिनेमा देखने ले चलो।'

'तुम्हें इस तरह अपने लिए नहीं कहना चाहिए।'

'मैं नहीं कहूँगी तो मुझे कोई नहीं ले जायेगा', कमला ने जवाब दिया और माँ की तरफ देखकर बोली, 'मुझे भी साथ ले चलो, माँ। सुमति और बाबू बुरा नहीं मानेंगे।'

रमानी यह देखकर गुस्से से भभक उठा कि कमला माँ से ले चलने की ज़िद कर रही है, और चीख कर बोला, 'माँ से इस तरह ज़िद करने की जरूरत नहीं है।' सावित्री से उसने कहा, 'तुम भी चलोगी या मैं अकेला ही चला जाऊँ? फिर प्यारी बिटिया को लाड़ लड़ाती रहना।'

'हम किसी और दिन चले चलेंगे', सावित्री ने कहा।

'नहीं मैं चाहता हूँ कि तुम आज ही चलो। बच्चे किसी और दिन चले जायेंगे। मैं इतनी दूर से 'किसी और दिन' सुनने नहीं आया हूँ। मैं कोई आवारा नहीं हूँ जो आऊँ और जो चाहता हूँ, उसे किये बिना चला जाऊँ। जाओ, फ़ौरन तैयार हो जाओ। सवा छह बज गये हैं। ज्यादा वक्त नहीं है।'

सावित्री भीतर चली गई। कमला भी पैर पटकने और रोने का नाटक करती उसके पीछे चली। रमानी ने फौरन उसे डाँटा, 'मैंने तुम्हारी ज़रा भी आवाज़ सुनी तो पिटाई कर दूँगा। अच्छे बच्चे ऐसा नहीं करते।' फिर सावित्री से बोला, 'देखो, मैं साठ तक गिनती गिनूँगा। तुम्हें इससे पहले तैयार हो जाना चाहिए।' लेकिन गिनती गिनने की जगह वह बोलता रहा, 'औरतें कितना परेशान करती हैं! कोई बेवकूफ़ ही उनको झेल सकता है। कपड़े पहनने में घंटों लगाती हैं? इससे अच्छा है कि हमेशा ही अच्छे कपड़े पहने, न यह कि जब कहीं जल्दी जाना हो, तभी अपना मेक-अप शुरू करें। अच्छी साड़ियों के गट्ठर बँधे पड़े होते हैं, और जब कहीं जाना हो, तभी उन्हें पहना जाता है। घर पर मामूली चिथड़े ही पहने रहेंगी। हमारा काम तो पैसे चुकाते ही खत्म हो जाता है। बाहर वाले ही उनको अच्छे कपड़ों में देख पाते हैं। हुँह!'

सन् 1935 में बिलकुल नए ढंग का सिनेमाघर पैलेस टाकीज़-बनवाकर मालगुड़ी एकदम आधुनिक युग में आकर खड़ा हो गया, और टूटी-फूटी खपरैलों से बना वैरायटी थियेटर, जो पुराने जमाने से नाटक और बेआवाज़ फिल्में दिखा कर शहर का मनोरंजन करता था, इसके बाद बंद कर दिया गया।

रमानी पहले दर्जे की सीट पर अपनी पत्नी के साथ बड़ी शान के साथ बैठा था। उसे अपनी पत्नी पर बड़ा घमंड था। वह बड़ी गोरी-चिट्टी थी और उसके नाक-नक्श बड़े तीखे थे, और नीली सिल्क की साड़ी पहनकर वह बड़ी आकर्षक लगती थी। उसने सावित्री को एक नजर ऊपर से नीचे तक देखा और इतनी सुंदर स्त्री का स्वामी होने पर बड़े संतोष का अनुभव किया। जब लोग मुड़-मुड़कर उसकी ओर देखते तो उसका संतोष और भी गहरा हो जाता। उसने सावित्री को बताया, ''कुचेला' पिक्चर दिखा रहे हैं।'

'हाँ, मैंने बाहर पोस्टर में पढ़ लिया था।'

'तमिल फिल्म है यह। मैंने सोचा, तुम्हें अच्छी लगेगी।' उसने सावित्री को बताया क्योंकि यहाँ वही उससे बात कर सकता था, इससे उसका महत्व बढ़ता था। उसे यहाँ पति का रोल निभाना बहुत अच्छा लग रहा था, और वह बार-बार पूछता था कि कुर्सी आरामदेह तो है, कोई तकलीफ़ तो नहीं दे रही, कि पर्दा साफ़ दिखाई दे रहा है या नहीं, और कुछ ठंडा तो नहीं पीना है।

हॉल में अँधेरा छा गया और फिल्म शुरू हुई। हॉल में मौजूद दूसरे लोगों की तरह सावित्री को भी फिल्म की कहानी पता थी, बचपन से आज तक वह इसे बार-बार सुनती आई थी। पुराणों के कृष्ण और उनके मित्र कुचेला की कहानी, जो भगवान की पूजा-पाठ में इतना व्यस्त रहता था, कि दाल-रोटी कमाने का वक्त ही नहीं निकाल पाता था, इसलिए उसने अपने सत्ताईस बच्चों को खिलाने का काम अपनी पत्नी को सौंप दिया था...

इस कहानी में सब कुछ था : कृष्ण भगवान का बचपन, अपने साथियों के साथ मिलकर लोगों का दूध-दही चुराकर खा जाना—इतने ज्यादा बर्तनों का दही खत्म कर देना भी कोई आसान बात नहीं थी। गाँव की सैकड़ों औरतों का लंबी-लंबी लाइनों में चलता जुलूस, उनके सिरों पर दूध-दही की मटकियाँ, दोनों तरफ खड़े, ऊँचे-ऊँचे पेड़ जिनकी शाखाओं में कृष्ण और उसके साथियों का दल छिपा बैठा है। औरतें इनके नीचे रुक जाती हैं मानो खुद इन बाल डाकुओं को निमंत्रण दे रही हों। सब उन पर टूट पड़ते हैं, मटकियाँ टूटने लगती हैं, दूध-दही चारों तरफ बहने लगता है और वे कह उठती हैं, 'हाय, कितना बरबाद कर दिया दूध-दही!' फिर कृष्ण का पीछा करने लगती हैं। और कक्षा में कृष्ण के अपने साथियों से हँसी-मज़ाक, कक्षा का मानीटर बेचारा कुछ कर नहीं पाता, उसकी परेशानियाँ देखते ही बनती हैं। सावित्री यह सब देखकर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी और पति से बोली, 'बाबू यह फिल्म देखता तो बहुत खुश होता।'

'अब बाबू की चिंता मत करो, नहीं तो तुम पूरा मज़ा नहीं ले पाओगी', पति ने जवाब में कहा।

सावित्री को फिल्म बेहद पसंद आई। यह पूरे चार घंटे की थी। फिल्म-निर्माताओं ने

इसे बड़े आराम और बहुत धीमी गति से इस तरह बनाया था कि हर घटना पूरे विस्तार से सामने आती और दर्शक, तिगुना पैसा वसूल हुआ, यह मानकर बहुत खुश होते थे। बहुत से गाने थे जिन्हें पात्र जब तक चाहें गाते ही चले जाते थे; घरेलू हँसी-मज़ाक था जो खत्म होने में ही नहीं आता था; एक बहुत लंबा जुलूस था जिसमें हाथी-घोड़े और तरह-तरह के बाजे थे, और पूरा जुलूस निकलने में ही आधा घंटा निकल गया; एक जबरदस्त तूफान भी आया जिसने थियेटर को भी हिला दिया; अदालत का एक दृश्य था जिसमें एक नर्तकी अपना नाच भी दिखा रही थी, और जो अपने आप में एक स्वतंत्र दृश्य था; और बीच-बीच में कहानी से एकदम अलग भी बहुत से दृश्य थे जो दर्शकों को मज़ा तो देते थे, लेकिन जिन्हें देखते हुए वह असली कहानी ही भूल जाता था।

सावित्री को कुचेला की पत्नी पर बड़ी दया आई, वह पति की तरफ देखकर बोली, 'बेचारी!'

इस पर रमानी ने कहा, 'और देखो, कितना धीरज है इसमें, कोई शिकायत भी नहीं करती।'

सोते समय एक खूब मोटे पति और उसकी बीवी का एक डायलाग सुनकर सावित्री को बड़ी शर्म आई; जुलूस की भव्यता देखकर वह गद्गद हो उठी; और अंत में जब कृष्ण ने अपने मित्र की ग़रीबी दूर कर उसे मालामाल कर दिया, तो वह बहुत प्रसन्न हो उठी। यह फिल्म देखकर वह आदमी की रोज़मर्रा की जिंदगी और उसकी बेहिसाब तकलीफें भूल गई और देवी-देवताओं की अलौकिक खुशियों से सराबोर हो उठी। देवी-देवताओं के गलत-सलत उच्चारण, भद्दी गलतियाँ, गत्तों पर चिपके पोस्टरों की तेज़ हवा में लगातार हो रही खड़खड़, और फिल्म की अतिशयोक्तियों, शोर-शराबे वगैरह पर उसका ध्यान बिलकुल नहीं गया। सावित्री फिल्म की रौ में बेखबर होकर बहने लगी और आखिरी सीन में जब कुचेला पूजा के कमरे में खड़ा होकर धूप-दीप जलाता भगवान की मूर्ति के सामने हाथ जोड़कर उनकी वंदना करने लगा, तब सावित्री ने भी हाथ जोड़ लिये और वंदना में शमिल हो गई।

दस बजे रात पहला शो खत्म हुआ। हॉल की बत्तियाँ जलीं और लोग बाहर निकलने लगे। इधर नीला कोट पहने उसका पति अँगड़ाई लेकर नींद से उठने लगा, जो एक तरह उसे उस समय की भावना के विरुद्ध था। सावित्री ने कहा, 'बच्चों को कल ही फिल्म दिखा देना।' फिर दोनों गाड़ी में बैठे और बूढ़ी शैवरले काफ़ी देर तक घुरघुराने के बाद आगे बढ़ी। सावित्री यह सोचकर झूँझला सी उठी कि घर पहुँचकर साड़ी बदलनी पड़ेगी। खाना खाना पड़ेगा, फिर सोना होगा। रात की ठंडी हवा उसके चेहरे पर लगी जो उसे ताज़ा कर गई। पति के साथ बैठकर उसे अच्छा लग रहा था, वह उसके प्रति कृतज्ञता और ढेर सारा प्यार महसूस कर रही थी, और बगल में लटके चमड़े के सूटकेस की हलकी गंध पी रही थी।

जब दोनों घर पहुँचे तो रंगा और रसोइया बरामदे में बैठे थे। सुमति और बाबू भी वहाँ थे। कमला हाल में पड़ी बेंच पर सो रही थी। 'बेचारी बेंच पर ही सो गई,' सावित्री ने धीरे से कहा। फिर पूछा, 'बच्चों ने खाना खा लिया। हमारे जाने के बाद कमला ज्यादा रोई तो नहीं? बाबू, तुम्हें यह फिल्म जरूर देखनी चाहिए। बहुत अच्छी है।'

‘हिन्दुस्तानी फिल्म!’ बाबू ने मुँह टेढ़ा करके कहा।

‘छोटा-सा लड़का कृष्ण का कितना अच्छा रोल करता है, इतना छोटा लड़का यह रोल कैसे कर सका...। लाजवाब!’

बाबू मुस्कराया और बोला, ‘इसका मतलब यह कि आपने शर्ले टेंपिल की फिल्में नहीं देखीं। उसे ऐक्टिंग के हर हफ्ते हजार पौंड दिये जाते हैं। एक दफा भी ‘कर्ली टॉप’ देख लो तो कुछ और देखने का नाम भी नहीं लोगे।’

सुमति ने उसकी बात काटी, ‘नहीँ, यह झूठ बोल रहा है। इसने यह फिल्म नहीं देखी हैं।

‘मैंने कब कहा कि मैंने देखी है। मेरे दोस्त ने दो दफ़ा देखी है और उसी ने मुझे इसके बारे में सब कुछ बताया है।’

‘तुम यह फिल्म देखना और फिर बताना। तुम्हारे पापा ने कल तुम सबको दिखाने का वादा किया है।’

‘माँ, मुझे हिन्दुस्तानी फिल्में पसंद नहीं हैं। मैं तो ‘फ्रैंके स्टाइन’ देखना चाहूँगा। जो अगले हफ्ते लग रही है।’

सुमति बोली, ‘मुझे अंग्रेजी फिल्में अच्छी नहीं लगतीं। मैं तो इसी को देखने जाऊँगी।’

‘तुम्हें इसलिए अच्छी नहीं लगतीं क्योंकि तुम्हें अंग्रेज़ी समझ में नहीं आती,’ बाबू ने कहा।

‘और तुम जैसे अंग्रेजी के मास्टर हो और फिल्मों का हर डायलॉग समझ लेते हो। इतने बन क्यों रहे हो?’ सुमति ने जवाब दिया।

झगड़ा बढ़ने लगा था, इसलिए सावित्री ने दखल दिया, ‘अब चुप हो जाओ। लड़ने की जरूरत नहीं है।’

4

सितंबर का महीना शुरू हुआ तो सड़कों पर गुड़िया बेचने वालों की आवाज़ें सुनाई देने लगी, जो इस बात की सूचना थी कि नवरात्रि का पर्व आ रहा है।

'माँ, इस साल हम नवरात्रि के लिए नई गुड़ियाँ नहीं खरीदेंगे?'

'इस साल नई-नई गुड़ियाँ खरीदने की ज़रूरत क्या है? इतनी ज्यादा गुड़ियाँ रखने की हमारे घर में जगह ही कहाँ है?'

'पड़ोस के घर में दस रुपए में राम और सीता का जोड़ा खरीदा गया है जो बच्चे के बराबर हैं।'

'हमारे पास इतनी गुड़िया हैं जितनी हम संभाल सकते हैं और ज्यादा का क्या करेंगे?'

'नहीं, माँ, कुछ तो नई खरीदनी ही चाहिए।'

'हमारे पास गुड़ियों से भरे पूरे तीन बक्स हैं।'

त्यौहार से एक दिन पहले तीनों बक्से गोदाम से निकालकर खोले गये। रंगा के लिए इन्हें साफ करने का नया काम पैदा हो गया। लेकिन वह खुश था कि झाडू लगाने, कपड़े धोने और बाजार से सामान लाने से यह काम ज्यादा अच्छा था। उसे इसमें बहुत मज़ा आया और वह एक टेढ़ी-मेढ़ी पगड़ी बाँधकर और धोती कमर में खोंसकर इसमें जुट गया।

उसे देखते ही कमला चीखी, 'अरे, रंगा की पगड़ी तो देखो।'

'बिलकुल गाय लग रहा है, 'सुमति ने जोड़ा।

'सचमुच? तो देखो', यह कहकर रंगा गाय की तरह रँभाने लगा, और बच्चे खिलखिला कर हँसने लगे।

'अब वक्त बर्बाद मत करो। बक्से खोलकर गुड़ियाँ निकालो,' सावित्री ने कहा।

रंगा ने कागज़ों में लिपटी गुड़ियाँ निकालकर उनकी सुतलियाँ खोलनी शुरू कीं। 'ध्यान से खोलना, नहीं तो टूट जायेंगी।' थोड़ी ही देर में पुराने कागज़ धूल और डरे हुए काक्रोच रंगा के एक तरफ जमा हो गये और दूसरी तरफ साफ-सुथरी गुड़ियाँ शान से खड़ी हो गईं। इनमें से ज्यादातर सावित्री को उसकी माँ ने दी थीं, और बाकी समय-समय पर खरीदी गई थीं। कितनी थीं ये—गुड़ियाँ, मूर्तियाँ और तरह-तरह के रंगों और आकार-प्रकार के खिलौने-सिपाही, चौकीदार, मोटे व्यापारी; चिड़ियाँ, जानवर; देवी-देवता और राक्षस; फल और बर्तन; मिट्टी, लकड़ी, कांसे और कपड़े की बनीं।

रंगा बक्सों के भीतर से हाथ और मुँह डाल-डालकर इन्हें एक-एक कर निकालता,

बिलकुल जादूगर लग रहा था जो खेल दिखा रहा हो। वह फुर्ती से व्यापारी या घास बेचने वाले का खिलौना निकालकर कहता कि ये उसे बरदाश्त नहीं हो रहे क्योंकि ये गालियाँ बक रहे हैं। खाने-पीने के खिलौने निकालते हुए वह इन्हें खाने का नाटक करता और कहता जाता कि बहुत स्वादिष्ट हैं। बच्चे साँस रोककर अगले खिलौने का इन्तजार करते कि अब क्या निकल रहा है, और रंगा की टिप्पणियों का मज़ा लेते। 'अब तोता आ रहा है, मेरा खास दोस्त...लेकिन यह तो मुझे चोंच मार रहा है।' यह कहकर अपनी उंगली से ज़रा सा खून निकालकर दिखाता और कहता कि त्यौहार खत्म होते ही वह इसकी गर्दन मरोड़ देगा। चीते या साँप निकलते ही वह जोर की चीख मारता और बच्चे हँस पड़ते। यह ड्रामा सब को अच्छा लग रहा था।

सावित्री भी सामने बैठ गई और धीरे-धीरे सबकी सफाई करने लगी; ये गुड़ियाँ उसे बचपन की यादें दिला रही थीं। उसने लकड़ी का एक झुनझुना उठाया, जिसकी रंगीन परतें उखड़ने लगी थी।—इससे वह तब खेलती थी, जब कुछ ही महीने की थी। उसकी माँ ने उसे यह बताया था। एक छोटी-सी बाँसुरी थी जिसमें वह बचपन में फूँक मारती रहती थी। बचपन की ये सब बातें सोचकर वह आत्म-मुग्ध हो उठी, फिर अपनी माँ के लिए उसके मन में ढेर सारा प्यार उमड़ने लगा जिसने उसके हर एक खिलौने को बड़े जतन से सँभालकर रखा और नवरात्रि पर जिन्हें वह हमेशा निकालती थी। सावित्री की इच्छा होने लगी कि वह किसी तरह तुरंत अपनी माँ के घर पहुँच जाय। उसे अपने आप पर गुस्सा भी आया कि उसने माँ की अच्छी तरह देखभाल नहीं की है, और पिछले कई महीने से उसे खत भी नहीं लिखा है।...इन गुड़ियों और उनको सजाने की समस्याओं को लेकर दोनों बहनें कितना लड़ती थीं। इसकी वजह से एक साल की नवरात्रि तो बिलकुल बरबाद हो गई थी क्योंकि दोनों ने एक-दूसरे का मुँह बुरी तरह नोंच डाला था और बातचीत भी बंद कर दी थी। तब कोई सोच भी नहीं सकता था कि यही लड़की मेट्रन की तरह तगड़ी होकर अपने डाक्टर पति और सात बच्चों के साथ, हम सबसे बहुत दूर, बर्मा जाकर रहने लगेगी। इसी बात से उसे याद आया कि पिछले महीने आये उसके खतों का अब तक जवाब नहीं दिया गया है। उसने तय किया कि इसी बृहस्पतिवार को वह जरूर जवाब लिख देगी जिससे वह शुक्रवार के स्टीमर से बर्मा रवाना हो जाए।

अब रंगा ने एक भूरे बालों और लाल-लाल गालों वाली गुड़िया निकालकर सामने रखी, तो सावित्री को अपने पिता की याद हो आई। एक शाम जब वह सो रही थी, तब पिताजी ने उसे जगाकर गुड़िया का डिब्बा पकड़ा दिया था। उसे यह डिब्बा और गुड़िया बेहद पसंद थीं और वह चुपचाप उसे चावल और चीनी खिलाया करती थी।...उसके पिता अब कितने दुर्बल हो गये हैं।...

तभी चट की आवाज़ से उसकी यादें भंग हो गईं। रंगा ने एक नीले रंग का बिल्ली के बराबर हाथी गिरा दिया था।

'गधे, सो गये थे क्या?'

'यह तो टूट गया', सुमति बोली।

कमला ने कहा, ‘इससे कहो, नया खरीदकर दे। तनखा मत देना इसकी।’

सावित्री को हाथी टूटने का बड़ा रंज हुआ। यह हाथियों के उस जोड़े का था जिसे उसकी मां को उसकी नानी ने दिया था। यह जोड़ा माँ ने सावित्री की बहन को न देकर उसे इसलिए दिया था कि वह इनकी ज्यादा अच्छी तरह देखभाल कर सकती थी, बहन पर माँ को विश्वास नहीं था। दरअसल माँ इसे देना ही नहीं चाहती थी, और देते समय उसने सावित्री को इसकी रक्षा के बारे में बहुत सी हिदायतें दी थीं।

‘मैंने तुमसे कहा था कि इसे बहुत सँभालकर उठाना’, सावित्री ने रंगा से कहा, ‘लेकिन तुम गधे निकले...।’

रंगा ने हाथी को उठाया और खुश होकर बोला, ‘इसकी सूँड ही टूटी है...।’

‘हाथी में सूँड के अलावा और होता ही क्या है...,’ सावित्री ने दुख से कहा।

रंगा ध्यान से टूटे हुए हाथी को देखता रहा, फिर कहने लगा, ‘अब यह साँड़ लग रहा है। इसे अब साँड़ बनाकर शो में क्यों न रख दें, मैडम?’

‘बेवकूफ, मज़ाक बंद कर।’

कमला बोली, ‘इसे तो कुछ फिक्र ही नहीं।

‘बिटिया, अब मैं समझ गया कि साँड़ कैसे बनते हैं।’

‘कैसे?’ उसकी बात से कमला की रुचि जाग गई।

‘हाथियों की सूँड निकाल दो तो साँड़ बन जायेंगे,’ रंगा ने कहा। फिर बोला, ‘अब इसे मैं ले लूँ, मैडम?’

‘हरगिज़ नहीं’, कमला ने कहा। ‘माँ, इसे हाथी मत देना। इसके पैसे भी काट लेना।’

सावित्री पूछने लगी, ‘अब तो यह टूट गया है। इसका तुम क्या करोगे?’

‘मेरा छोटा बेटा इसके गले में डोरी बाँधकर घर में घुमायेगा और कहेगा, यह उसका कुत्ता है। कुत्ते के लिए वह मुझे बहुत दिन से परेशान कर रहा है।’

कमला बोली, ‘यह तुम्हें हरगिज़ नहीं मिलेगा,’ और हाथी उसके हाथ से छीन लिया।

अब सारे खिलौने, पाँच सौ से ज्यादा सामने पड़े थे, एक-दूसरे में गड्डमड्ड, उन्हें देखकर लगता था कि झक्की दिमाग वाला ईश्वर सृष्टि को बनाने के लिए प्रयोग कर रहा है।

बाबू सबसे कह गया था कि मंच पर खिलौने सजाने का पूरा काम वह खुद करेगा और इसमें किसी को भी शामिल नहीं होने देगा, इसलिए स्कूल से लौटने तक उसका इन्तजार किया जाय। लेकिन लड़कियाँ बेचैन हो रही थीं। ‘यह काम लड़कों का नहीं है, यह पूरी तरह हमारा काम है। हम उसका इन्तज़ार क्यों करें?’

ठीक पाँच बजे बाबू वहाँ आ धमका और पूछने लगा, ‘तुमने मंच बना लिया क्या?’

जवाब सावित्री ने दिया, ‘नहीं, हम तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं। लेकिन कोई जल्दी नहीं है, तुम नाश्ता करकेआ जाओ।’

वह दो मिनट में नाश्ता खत्म करके आ गया। लड़कियों ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा, ‘तुम तो लड़के हो, जाकर क्रिकेट खेलो। यह काम हम लड़कियों का है।’

‘बकवास मत करो, नहीं तो मैं सब कुछ तोड़ डालूँगा।’ लड़कियाँ यह सुनकर चीख

उठीं। फिर उसने रंगा को बाजार भेजकर कई चीजें मँगवाईं। बहुत सी खपच्चियों और सुतलियों की मदद से उसने कई सीढ़ियों का मंडप तैयार किया। फिर घर के सब बिस्तरों से सफेद चादरें खींच-खींचकर इन पर ऊपर से नीचे तक बड़ी सुन्दरता से बिछा दीं। सीढ़ियाँ खड़ी करने के लिए उसे सहारों की जरूरत थी, तो उसने घर की बहुत सी चीजें अस्त व्यस्त करके डिब्बे, टीन वगैरह जो भी मिला, उसे निकाल-निकालकर जहाँ ठीक लगा, लगा दिया। फिर वह लंबे-लंबे बाँस लाया और उनसे मंडप के चारों तरफ बाड़ लगाई और रंगीन कागज़ काट-काट कर उन्हें बाँसों के इर्द-गिर्द चिपका दिया। इसके बाद छत और दीवारों पर रंगबिरंगी झालरें लटका दीं। वह बड़े ध्यान से पूरा काम खुद कर रहा था, जिसे दोनों लड़कियाँ चुपचाप बैठी देख रही थीं। वे कुछ भी कहतीं तो बाबू गुर्राने लगता और उन्हें डरा देता। उसने रंगा को भी चुटकुले सुनानें का वक्त नहीं दिया, बल्कि उसे मेज़ कुर्सियों पर चढ़ाकर सारा काम करवाता रहा।

दो घंटे में गुड़ियों के शो के लिए शानदार मंडप तैयार हो गया। बाबू ने दूर खड़े होकर कमरे का निरीक्षण किया और माँ से बोला, 'अब अपने खिलौने वगैरह जहाँ चाहो, लगा दो।' फिर बहनों की तरफ मुड़कर चेतावनी दो, 'यहाँ बहुत सँभलकर काम करना। अगर किसी ने कोई शैतानी की या किसी चीज़ को इधर से उधर किया, तो मैं कुछ कर गुजरूँगा।'

सावित्री ने लड़कियों से कहा, 'तुम इतना अच्छा बना सकती थीं क्या? जब उसने काम शुरू किया तब तुम बहुत बड़बड़ कर रही थी।' सुमति ने तो इसे मान लिया लेकिन कमला ने उलटकर जवाब दिया, 'अगर मुझे भी कागज और रंग मिल जायँ तो मैं भी ऐसा बना सकती हूँ। अरे, कोई मुश्किल काम है यह!' सावित्री बोली, 'अब तुम दोनों सँभल-सँभलकर गुड़ियाँ उठाओ और एक-एक करके उन्हें सजाओ। सुमति, तुम कमला से लंबी हो, इसलिए तुम ऊपर के चार पटरों पर गुड़ियाँ लगाओगी, और कमला, तुम नीचे के चार पटरों पर—ठीक है? और ध्यान से काम करना, आपस में लड़ना मत।

घंटे भर में एक शानदार दुनिया आँखों के सामने खड़ी हो गईः सभी तरह के ईश्वर और देवी-देवता, उनके बनाये विभिन्न रूपों में स्त्री-पुरुष, पशु-पक्षी, कोई बड़े, कोई छोटे, सब रंगों में रँगे, एक-दूसरे के ऊपर-नीचे लड़ते-झगड़ते प्यार करते खड़े थे। हरे तोते थे जो हाथियों के अगल-बगल लेकिन आकार में उनसे बड़े चोंच उठाये खड़े थे; सफेद, पीले और हरे रंग के घोड़े बड़े-बड़े बैंगनों से बातें कर रहे थे; उँगली के आकार का छोटा-सा तुर्की सिपाही जो हथियारों से लैस था; एक बड़े पेट वाला गोल-मटोल सेठ, नंगे बदन पर सिर्फ एक कोट पहने बैठा सामने रखे अनाज के ढेर को बड़े संतोष से देख रहा था, उसके एक तरफ़ चीनी मिट्टी से बना टेढ़ी पूँछ वाला कुत्ता और दूसरी तरफ शेर उसे घूर रहे थे। बीच-बीच में आदमियों, पशु-पक्षियों और फल-फूलों के बीच देवी-देवता सिर उठाये खड़े थे—नीले रंग के भगवान राम हाथों में तीर-कमान ताने पत्नी सीता के साथ बेहद शानदार लग रहे थे—बगल में रखी चीज़ों का, लकड़ी की लाख से रंगी चम्मच, लाल रंग की साड़ी पहने गटापारचे की बिलकुल छोटी-सी गुड़िया, मुँह में सुनहरा पक्षी दबाये चालाक लोमड़ी और हरे रंग की ब्रीचेज़ पहने करतब दिखाता एक नट, इन सबका उनकी गंभीरता पर कोई असर नहीं पड़ रहा था। थोड़ी ही दूर

पर कालिया नाग के फन पर खड़े बाँसुरी बजाते भगवान श्री कृष्ण, अपने बगल में बाजे पर थाप मारते काले भालू से डरे बिना सीधे खड़े थे। रंगीन कागज़, लकड़ी, चीनी और सादा मिट्टी से बनाई देवी-देवताओं, स्त्री-पुरुषों, पशु-पक्षियों और रोज़मर्रा के इस्तेमाल की तरह-तरह की वस्तुओं से बनाई यह दुनिया अत्यंत आकर्षक बन गई थी।

सावित्री कहने लगी, 'यह सब बहुत बढ़िया बन गया है लेकिन नौ दिन बाद जब इन्हें एक-एक करके फिर से बक्सों में बंद करना पड़ेगा, तब कितनी मुश्किल हो जायेगी...।'

'माँ, इन्हें हटाने की क्या जरूरत है? क्यों न इन्हें हमेशा के लिए इसी तरह बना रहने दिया जाय? इन्हें जब हटाकर साफ करके फिर से बक्सों में बंद करना होता है, तब कितना बुरा लगता है, घर भर में कितनी उदासी छा जाती है...!'

दूसरे दिन बाबू ने अपने काम का फिर से मुआयना किया और तय किया कि यह मंडप और अच्छा बनाया जा सकता है। कागज़ और गोंद से जो काम किया, वह तो ठीक-ठाक है, लेकिन रोशनी का इन्तज़ाम बहुत घटिया है। मंडप की जो भी रोशनी थी वह उसे कुछ दूर हॉल में लगे बिजली के बल्ब से ही मिल रही थी। वह अपने दोस्त चंद्रू को बुलायेगा और उसकी मदद से सारे मंडप में रंगीन बल्बों की लड़ियाँ टाँग देगा- फिर उसका यह गुड़िया मंदिर पूरे एक्सटेंशन का सबसे शानदार मंदिर बन जायेगा।

दोपहर बाद वह चंद्रू को बुला लाया। चंद्रू उससे काफी बड़ा था लेकिन बाबू अपना ज्यादा वक्त उसी के साथ बिताता था। वह इन्टर में पढ़ता था और बिजली का इंजीनियर माना जाता था। उसने बिजली की घंटियां, डायनामो और तार भेजने के यंत्र बना लिये थे।

सुमति और कमला बहुत खुश हुईं। 'अब हमारा गुड़िया मंदिर पुलिस इंस्पेक्टर के गुड़िया मंदिर से बाजी मार ले जायेगा', दोनों ने जोश में भरकर कहा। चंद्रू तार और हथौड़ी की मदद से जादू कर दिखाता था। उसने ज़रा-सी देर में एक बिलकुल नया सरकिट बना दिया, जिसका स्विच भी अलग था। जब स्विच दबाया जाता, एक सेकिंड में रंगीन छोटे-छोटे बल्बों की झालरें चमकने लगतीं और दो बड़े बल्ब पूरे मंदिर में नीली रोशनी फेंकने लगते।

काम पूरा करके चंद्रू ने बाबू को हिदायत दी, 'शाम को स्विच जलाओ तो सावधानी से जलाना', और चला गया।

बाबू के लिए यह बड़ी विजय थी। उसे गर्व हुआ कि बिजली का सारा काम उसने ही कराया है। बोला, 'तुम चाहो तो मैं उससे बिजली की रेलगाड़ी भी बनवा दूँगा। उससे मजा आ जायेगा।'

शाम को पाँच बजते ही लड़कियों ने रोशनी जलाने के लिए बाबू को परेशान करना शुरू कर दिया। लेकिन उसने कहा कि रोशनी जलाने का टाइम उसे पता है, और यह कि स्विच को कोई बिलकुल हाथ न लगाये। 'रोशनी छह बजे की जायेगी,' उसने घोषणा की।

लेकिन लड़कियों ने इसका विरोध किया, कहा कि 'छह बजे तो हम लोगों को निमंत्रित करने जायेंगे। अब हमारे बहुत से दोस्त हमें अपने यहाँ बुलाने के लिए आना शुरू कर देंगे, इसलिए उन्हें भी यह रोशनी देखने को मिले तो कितना अच्छा लगेगा...प्लीज़ भैया।'

लेकिन बाबू का रुख नरम नहीं पड़ा। 'तुम मेरा पीछा छोड़ती हो या नहीं? मैं जानता हूँ कि मुझे कब और क्या करना है, इसलिए अपने काम से काम रखो तुम लोग।'

अब सावित्री ने दखल दिया, 'इतनी सख्ती नहीं करते! तुमने इन्हीं के लिए यह सब बनाया है, फिर जल्दी क्यों नहीं रोशनी कर देते?'

'ठीक है, साढ़े पाँच बजे जला दूँगा।'

साढ़े पाँच बजे तक करीब एक दर्जन लोग आ गये थे। सब चमकदार सिल्क के कपड़े पहने थे और गुड़िया मंदिर की शोभा देख रहे थे। हॉल में बहुत सी स्त्रियों को देखकर बाबू दरवाजे पर आकर रुक गया और सोचने लगा कि अब वह मंडप में लगे स्विच तक कैसे पहुँच सकेगा। उसने सुमति को बुलाया और कहा, 'उँगली से उस छोटी वाली रॉड को ज़रा बायीं तरफ कर दो।...बहुत धीरे से करना।'

सुमति ने स्विच को धीरे से दबाया, फिर ज़रा जोर से दबाया, और बाबू अपना सारा संकोच भूलकर वहाँ जा पहुँचा और खुद उसे बार-बार दबाने लगा—लेकिन कुछ नहीं हुआ। न सिर्फ शमियाने की रोशनियाँ बंद पड़ी रहीं, हॉल के बल्बों ने भी जलने से इनकार कर दिया। बाबू ने सुमति को घूरकर देखा और बोला, 'मैं जानता था कि तुम लोग हाथ लगाओगी तो ज़रूर कुछ न कुछ गड़बड़ कर दोगी।' उसने नए सरकिट पर एक नजर डाली, स्थिच को एक दफ़ा फिर दबाया और यह कहकर कि इसके साथ जरूर किसी ने छेड़खानी की है, और अभी वह उसका पता लगाता है, वहाँ से चलने लगा। चलते-चलते, वह बड़बड़ाता रहा कि लड़कियों की शैतानियों का कोई अंत नहीं है। लेकिन मेहमानों को कुछ पता नहीं लगा कि वहाँ क्या हो रहा है, क्योंकि उस समय सूरज की काफी रोशनी थी।

साढ़े सात बजे हालत बिलकुल खराब थी—सारा घर अँधेरे में डूबा हुआ था। मेहमानों का लालटेन की पीली रोशनी में स्वागत किया जा रहा था, और मंदिर में पूजा घर से लाये दीयों से रोशनी की जा रही थी, उदासी का माहौल था। लड़कियाँ गुस्से से पागल हुई जा रही थीं। 'माँ, अब समझ में आया कि हम इस मामले में किसी लड़के का दखल नहीं चाहते थे! जैसे, रोशनी के बिना पता नहीं क्या हो जायेगा! उसके बिना भी बहुत अच्छा लगता! किसने कहा था कि रोशनी लगवाओ, हमने तो लड़के को नहीं बुलाया था?'

बाबू बेहद निराश था। चंद्रू सिनेमा देखने गया हुआ था और दस बजे से पहले वापस नहीं लौटने वाला था। और कोई लड़का बिजली का काम नहीं जानता था।

सावित्री बोली, 'किसी को बिजली वालों के दफ्तर भेज दो।'

बाबू ने पूछा, 'मैं चला जाऊँ?'

सावित्री हिचकिचाई। इतनी रात उसे अकेले कैसे जाने देती!' रंगा को साथ ले लो।'

और रंगा के साथ वह सुरक्षित बिजली दफ्तर के लिए रवाना हुआ—जो 'मार्केट रोड पर यहाँ से दो मील दूर था।

दफ्तर पहुँचकर बाबू ने सामने ही खड़े पहले आदमी से कहा, 'साउथ एक्सटेंशन में हमारे घर में बिजली चली गई है।'

'भीतर चले जाओ और वहाँ जो भी मिले, उससे कहो,' यह कहकर वह चलता बना।

बाबू भीतर गया और उसे एक कमरे में भेज दिया गया, जहाँ तीन लोग बैठे बीड़ी पी रहे थे और गप लड़ा रहे थे। एक ने पूछा, 'लड़के, कौन हो तुम?'

'साउथ एक्सटेंशन में हमारे घर की बिजली चली गई है।'

'स्विच दबाओ तो जल जायेगी,' एक ने कहा और सब हँसने लगे।

बाबू को बुरा लगा लेकिन कुछ तो करना ही था। उसने मिन्नत की, 'आप कुछ कर सकते हैं? हमने स्विच देख लिये हैं।'

'फ्यूज़ उड़ गया होगा। तुमने मीटर की जाँच की, कि फ्यूज़ सब सही हैं।'

'यह तो नहीं देखा। घर में कोई नहीं है।'

'कोई नहीं है तो रोशनी की क्या जरूरत है? फ्यूज़ जल गया है तो उसे ठीक करना हमारा काम नहीं है। हम तो तभी आते हैं जब खंभे का फ्यूज़ जल जाय। जाकर चेक करो कि मीटर में फ्यूज़ ठीक हैं या नहीं।'

बाबू घर लौटा तो उसने देखा कि पिताजी आ चुके हैं। वे गुस्से से बौखला रहे थे। रंगा घर पर नहीं था। इसलिए गैराज का दरवाजा खोलने में देर लगी जिससे उन्हें गुस्सा आ गया। घर में घुसे तो चारों तरफ निपट अँधेरा था। फिर यह जानकर कि करंट ही नहीं है, उनका गुस्सा एकदम सातवें आसमान पर पहुँच गया। दरवाजे पर खड़े होकर वह चिल्लाये, 'क्या है यह सब?' सावित्री ने सवाल चुप्पी से खत्म कर देने की कोशिश की। लड़कियाँ तो जवाब देने की हिम्मत ही नहीं कर सकती थीं। वह और जोर से चिल्लाया, 'घर में सब मर गये क्या...?'

सावित्री यह बात बरदाश्त नहीं कर सकी और तीखे स्वर में बोली, 'आज के दिन और इस वक्त ऐसी बात कही जाती है क्या? तुम्हारे जैसा आदमी जो त्यौहार के दिन ऐसे शब्द कहे, मैंने कोई नहीं देखा।'

'तो फिर तुमने अपना कीमती मुँह खोलकर मेरी बात का जवाब क्यों नहीं दिया?'

'बात कुछ भी नहीं है। तुम्हें दिखाई नहीं देता कि करंट नहीं है, इसलिए रोशनी नहीं आ रही?' यही बात है, और कुछ नहीं...।'

'बिजली दफ्तर गया है कोई?'

'बाबू गया है।'

'बाबू...कितना बड़ा आदमी भेजा है!'

यह फिजूल का तर्क सुनकर सावित्री को गुस्सा आ गया लेकिन वह चुप रही।

रमानी बड़बड़ाता हुआ कपड़े बदलने चला गया। अँधेरे में खड़े होकर वह घर भर को ही नहीं, सारी दुनिया को बुरा-भला कहता रहा। 'रंगा, रंगा...कहाँ है...,' वह पूरा जोर लगाकर चीखा।

'मैंने बताया नहीं कि रंगा बाबू के साथ बिजली दफ्तर गया है,' सावित्री बोली।

'सब बिजली दफ्तर चले गये? बाबू लड़की है जो उसकी रक्षा के लिए कोई साथ चले? यह किसने कहा था?' वह फिर चीखा, 'रोशनी लाओ।'

सावित्री ने कमला के हाथ लालटेन भेज दी।

उसने लालटेन जमीन पर रख दी तो रमानी ने घूरकर कहा, 'लालटेन रखने की यह जगह है क्या? रोशनी मेरे पैरों को चाहिए? तुम्हारी ट्रेनिंग बिलकुल गलत है..एकदम बकवास...।' उसने लालटेन उठाई और रखने की जगह ढूँढ़ने लगा। 'तुम्हें पता होना चाहिए कि लालटेन लाओ तो उसे रखने के लिए कागज़ का एक टुकड़ा भी लाना चाहिए। यह सब तुम कब सीखोगी?'

'ठीक है पापा, सीखेंगे...', उसके रुख से डरकर कमला से यही कहते बना।

उसकी इस नम्रता से रमानी प्रसन्न हुआ। बोला, 'तुम्हें अच्छी लड़की बनना चाहिए। नहीं तो लोग तुम्हें पसंद नहीं करेंगे।' लालटेन उसने खिड़की में रख दी। कमला वापस जाने लगी और कुछ कदम रखे, कि रमानी ने कहा, 'बच्चे, पैर घसीट कर नहीं चलते।'

'पापा, अब मैं ठीक से चला करूँगी।'

यह सुनकर वह और भी खुश हो गया।

सोचने लगा, इस पर ज़रा ज्यादा ध्यान देना चाहिए—कुछ बात करके ही उसका सम्मान बढ़ाऊँ। 'आज शाम से ही अँधेरा है?'

'नहीं पापा, छह बजे तक बिजली थी, और फिर—', इतना कहकर वह हिचकी।

'हाँ, फिर क्या हुआ?'

'बाबू के दोस्त ने गुड़ियों के लिए नए बल्ब लगाये और जब बाबू ने स्विच दबाया तो कुछ हुआ और बिजली गायब हो गई।'

बाबू जब घर में घुसा तो पिता को बीच में खड़े होकर चिल्लाते सुना। बाबू को देखते ही रमानी चीखा, 'ओ पागल, तुम्हें बिजली से छेड़छाड़ करने के लिए किसने कहा था?' बाबू एकदम सहम गया।

'चुप रहकर बचने की कोशिश मत करो। माँ की नकल करने से कोई फायदा नहीं होगा।'

'नहीं, पापा।'

'तो बताओ, बिजली से छेड़ छाड़ क्यों की?'

'मैंने तो बिजली को छुआ तक नहीं। काम चंद्रू ने किया था जो बिजली के बारे में जानता है।'

रमानी ने आगे बढ़कर बाबू के कान जोर से मरोड़े और कहा, 'मैंने तुमसे कितनी दफ़ा कहा है कि किताबों में मन लगाओ और बाकी कुछ मत करो।'

'पापा, चंद्रू जैसे ही लौटेगा, मैं बिजली ठीक करा दूँगा।'

'लेकिन तुम्हें गुड़ियों के पास जाने को कहा किसने? लड़की हो क्या तुम? बताओ, लड़की हो?'

बार-बार एक ही सवाल करते हुए वह कान को और भी ज्यादा जोर से मरोड़ता जा रहा था। उसके हाथों की गर्मी से बाबू का शरीर हिलने लगा था। 'नहीं पापा, मैं लड़की नहीं हूँ।'

'फिर तुम गुड़ियों के पास क्यों गये?' अब उसने दूसरा कान भी धर दबोचा। 'ऐसे

काम फिर करोगे? बताओ, फिर करोगे?’

असहाय क्रोध से बाबू की आवाज़ बंद हो गई। अब रमानी ने उसे एक थप्पड़ मारा। ‘पापा, मारिये मत...,’ यह सुनकर उसने और भी कई थप्पड़ रसीद किये। तब तक सावित्री वहाँ आ गई और बाबू को बचाने लगी। उसे पकड़कर एक तरफ ले गई और पति को गुस्से से देखने लगी। ‘छोड़ दो उसे, ज्यादा प्यार की जरूरत नहीं है।’

सावित्री गुस्से से बेसुध हो रही थी। लेकिन कह इतना ही सकी, ‘उसे मार क्यों रहे हो?’ और फिर खुद रोने लगी। उसे रोता देख बाबू भी रोने लगा, ‘मैं नहीं जानता था...नहीं जानता था कि नए बल्ब लगाना ठीक नहीं है...।’

रमानी यह कहकर चलता बना कि उसे यह रोने-धोने का नाटक समझ में नहीं आता। वह हाथ-मुँह धोकर वापस लौटा और बोला, ‘अब खाना लगाओ। रोशनी के बिना ही काम चला लेंगे।’ लेकिन सावित्री हाथों में मुँह छिपाये फर्श पर ही बैठी रही। ‘अब मैं समझ गया कि तुम नाटक कर रही हो। मैं और यह तमाशा नहीं देख सकता। तुम खाने आती हो या नहीं?...ठीक है, मैं जाता हूँ, तुम्हारी जो मर्जी हो, करो।’ यह कहकर वह डायनिंग रूम की तरफ चला। रास्ते में बोला, ‘वह लड़कीनुमा लड़का कहाँ है...तुमने खा लिया या नहीं? बाबू, खाना खाने आओ।’

जब रमानी चला गया, सावित्री उठी और स्टोर के बगल वाले अँधेरे कमरे में जाकर जमीन पर लेट गई। कुछ देर बाद रसोइया उसे ढूँढ़ते हुए आया और खाने के लिए कहने लगा, लेकिन उसने इनकार कर दिया। फिर एक-एक करके बच्चे भी आये लेकिन उसने किसी की बात नहीं सुनी। दीवार की तरफ मुँह करके आँखें बंद कर लीं।

दूसरे दिन सवेरे रसोइया कॉफी का गिलास लेकर आया तो सावित्री ने कॉफ़ी पी ली। फिर रसोइये ने धीरे से पूछा, ‘आज क्या बनाऊँ?’

‘मुझसे मत पूछो’, उसने जवाब दिया।

‘घर में सिर्फ दो आलू हैं। कुछ सब्ज़ियाँ मँगानी पड़ेंगी और सरसों भी।’

‘सब्ज़ियों और सरसों के बिना जो चाहो बनाओ या जिनको खाना है, उनसे जाकर पूछो। मुझसे इस बारे में कोई बात मत करो।’

रसोइया सिर झुकाये चला गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। बिना सरसों के खाना बनाना किसी ने सुना है! लेकिन कुछ देर बाद उसने फिक्र करना छोड़ दिया और इस स्थिति का मज़ा लेने लगा। उसके दिमाग में आया कि जैसा भी जो बने, बना ले और मालिक जब गुस्सा करें तो उन्हें बता दे कि सरसों के लिए उसने काफी देर इंतज़ार किया। फिर उसे दूसरा विचार यह आया कि ईश्वर ने उसे यह एक अवसर दिया है। इस वक्त वह अपनी पूरी योग्यता दिखा सकता है। रंगा घर के पीछे लकड़ी काट रहा था। रसोइये ने उससे कहा, ‘मालिक और मालकिन जब लड़ते हैं तो मुसीबत हमारी होती है।’

रंगा ने कहा, ‘रात भर दोनों में बातचीत नहीं हुई। हालत काफी गंभीर लगती है।’

‘बाप जब बेटे को डांट-पीट रहा हो तो माँ को बीच में दखल नहीं देना चाहिए। यह बुरी आदत है। बेटा कुट-पिट कर ही मजबूत आदमी बनता है।’

रंगा बोला, 'मेरी बीवी भी इसी तरह की है। मैं बेटे पर नज़र भी डालूँ, तो वह मुझ पर टूट पड़ती है। पिछले साल जब मैं गाँव गया था तो मेरे बड़े बेटे ने बड़ा गलत काम किया था। उसने पड़ोसी के लड़के को पत्थर मारा जिससे उसके सिर से खून बहने लगा। ऐसी हालत में बाप क्या करेगा, तुम्हीं बताओ।'

'तुम दुकान जाकर कुछ सब्जी ले आओ,' रसोइये ने कहा।

'लेकिन पहले मुझे बात पूरी कर लेने दो,' रंगा ने चिढ़कर कहा। 'बताओ, बाप क्या करे ऐसी हालत में? मैंने लड़के को एक ही चपत लगाई कि उसने जोरों से चीखना शुरू कर दिया...बाप रे। मैंने ऐसा रोना कभी नहीं सुना था। उसे सुनते ही मेरी बीवी न जाने कहाँ से निकल आई और बड़ा सा बर्तन मेरे ऊपर दे मारा। उसके बाद मैंने तय कर लिया कि बेटा कुएँ में कूद जाय, तो भी मैं कुछ नहीं कहूँगा। औरतें तो भयंकर होती हैं!'

महरी जो नल के नीचे बर्तन साफ कर रही थी, यह सुनकर बोली, 'तुम लोग तो यही कहोगे।'

'तुम क्या जानो, माँ क्या होती है! जब उसका बच्चा दुखी होता है तो उसके दिल में आग लग जाती है।'

रसोइया बोला, 'मेरी बीवी ने एक ही दफा इस तरह दखल दिया था, तो मैंने उसकी हड्डी-पसली तोड़कर रख दी थी। उसके बाद उसने अलग रहना सीख लिया। औरतों को उनकी जगह बता देना जरूरी होता है।

इसके बाद उसने यह बात खत्म कर दी और उस वक्त की समस्या पर ध्यान दिया। 'आज घर की जिम्मेदारी मेरी है। और मैं दिखा दूँगा कि मैं क्या कर सकता हूँ। मालकिन ने कहा,—'जो ठीक समझो, करो, मुझसे कुछ मत पूछो।' मैं ऐसा खाना पका सकता हूँ जिसे कुत्ता भी न छुए, लेकिन इस घर में पाँच साल काम करने के बाद ऐसा कुछ करना मुझे शोभा नहीं देगा। रंगा, सुनो, इस वक्त आठ बजे हैं। दो घंटे बाद मालिक खाने के लिए आयेंगे। तुम नायर की दुकान पर जाओ और दो आने की प्याज़, चार आने के आलू, दो नींबू, एक पैसे का धनिया ले आओ!' वह जानता था कि मालिक को खाने में क्या पसंद है, और वह यह सब बनायेगा। 'नायर से कहना, पैसा बाद में पहुँच जायेगा।'

कमला माँ के पास गई और पूछने लगी, 'माँ तुम अभी तक गुस्सा हो?' सावित्री ने कोई जवाब नहीं दिया।

'पापा अब बाबू को नहीं मारेंगे। अब तुम उठ जाओ।' उसे माँ का इस तरह पड़े रहना अच्छा नहीं लग रहा था, और वह भी नवरात्रि के दिनों में। 'माँ, रात को बाँटने के लिए क्या मिठाई बनेंगी?'

सावित्री को भी अच्छा नहीं लग रहा था। वह अपने मूड को दोष देने लगी, कि कितनी जल्दी निराश हो जाती है। इस तरह तो सारा त्यौहार ही चौपट हो जायेगा।

'मुझे झगड़े पसंद नहीं हैं', यह कहकर कमला चली गई। उसे बहुत बुरा लग रहा था। स्कूल की छुट्टी थी, इसलिए वह गुड़िया मंदिर में मजे कर सकती थी, पड़ोसियों के यहाँ जा सकती थी, और मिठाइयाँ खा सकती थी। लेकिन माँ थी कि दीवार की तरफ मुँह किये पड़ीं

थीं। उसे लग रहा था कि इस सबकी जड़ बाबू है, इसलिए वह बार-बार उसे घूरकर उस पर अपना गुस्सा जाहिर कर देती थी।

बाबू गुड़िया मंदिर की उपेक्षा करता हुआ अपना काम कर रहा था। उसके व्यवहार से लग रहा था, 'लड़कियों के मामलों में दखल देने से यही होता है। इस बकवास त्यौहार के लिए उन्हीं के स्कूलों में छुट्टी है, लड़कों के स्कूल खुले हैं। अब मुझे किसी काम के लिए मत कहना।' लेकिन माँ के लिए वह परेशान था। बाप के चाँटे तो उसे पड़े थे, फिर माँ को कमरे में जाकर लेटे रहने की क्या जरूरत है, जैसे घर पर कोई विपत्ति आ पड़ी हो। शायद उसे ही लड़कियों की तरह रोने नहीं लगना चाहिए था। अब उसे अपनी यह बात गलत लग रही थी। उसने अपने को बुरा-भला कहा और फैसला किया कि जिंदगी में वह कभी नहीं रोयेगा। स्कूल जाने से पहले वह अँधेरे कमरे में गया और माँ से बोला, 'तुम यहाँ क्यों पड़ी हो, माँ? पापा ने मुझे मामूली सी चपत मारी थी, तुम इसे इतनी बड़ी बात क्यों मान रही हो? मैं स्कूल जा रहा हूँ।'

'खाना खा लिया?' सावित्री ने पूछा।

'हाँ, अब उठ बैठी और अपना काम करो।'

रमानी, सही समय पर, आफिस जाने से पहले, डायनिंग रूम में आया। उसने फैसला कर लिया था कि सावित्री की अनुपस्थिति की पूरी तरह उपेक्षा करेगा। वह उसे दिखा देना चाहता था कि रूठने का उस पर कोई असर नहीं पड़ता। अपनी उपेक्षा प्रकट करने के लिए उसने एक गाना गुनगुनाना शुरू कर दिया, ज़ोर-ज़ोर से सीटियाँ भी बजाईं और दोनों लड़कियों से, जो गुड़िया मंदिर में ही बैठी थीं, बड़े प्यार से बातें भी कीं। मंदिर की सजावट को ध्यान से देखकर बोला, 'तुमने तो सबका गड़बड़ झाला बना दिया है। अरे, जानवरों को एक लाइन में लगाओ, आदमियों को दूसरी में, और बाकी सब भी इसी तरह करीने से रखो। शाम को अपनी सहेलियों को तुम क्या-क्या मिठाइयाँ खिलाओगी?'

लड़कियों ने एक दूसरे की तरफ देखा और कहा, 'पता नहीं क्या...।'

'कोई बात नहीं। मैं दो रुपए की मिठाइयाँ खरीद लाऊँगा।' यह बात उसने काफी जोर से कही, जिससे सावित्री को इसकी सूचना मिल जाय। इसका अर्थ था कि तुम्हारी रूठा-रूठी से त्यौहार पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

वह डायनिंग रूम में भी सीटी बजाते हुए घुसा। उसने मुस्कराकर रसोइये से पूछा कि आज क्या बनाया है, और जवाब सुनकर उसी भाव से बोला, 'बहुत बढ़िया।' रसोइये ने खाना सचमुच बढ़िया तैयार किया था क्योंकि पकाने के सामान का अधिकार उसके पास था, इसलिए उसने शुद्ध घी, और भुने हुए मसालों का उपयोग बड़ी उदारता से किया था—सावित्री होती तो घी की जगह तेल देती, और नारियल वगैरह तो बिलकुल भी नहीं देती। रमणी ने मज़ा ले-लेकर खाना खाया और खा चुकने के बाद हॉल में बैठी लड़कियों से ज़ोर की आवाज़ लगाकर पूछा, 'कमला, तुमने यह आलू और प्याज की सब्ज़ी डटकर खाई?'

'जी, पापा।'

'तुम्हारी बहन ने भी खूब-खूब खाई?'

'जी, पापा।'

फिर उसने पूछा, 'अच्छा यह चटनी और केले की कतलियाँ खूब जायकेदार बनी हैं न?' यह भी संबंधित लोगों के लिए इस बात की सूचना थी कि जिंदगी में कोई भी आदमी इतना जरूरी नहीं है कि उसके बिना काम ही न चले।

रसोइया मालिक की बातें सुन-सुनकर खुशी से फूला नहीं समा रहा था, और किचेन में मिली आज़ादी ने साढ़े दस बजे लगने वाली अपनी जबदरस्त भूख को भी जिसमें वह चुपचाप कुछ खा लेता था उसने भुला दिया था।

दफ्तर जाने से पहले रमानी ने लड़कियों को बुलाया और कहा, 'दफ्तर जाते हुए मैं बिजली घर जाऊँगा और वहाँ से किसी को भिजवा दूँगा। आज शाम ये बत्तियाँ जल जायेंगी।'

'अच्छा, पापा। और ये रंगीन बल्ब भी रहेंगे?'

'ठीक है, तुम्हारी इच्छा है तो जरूर रहेंगे।'

'लेकिन बाबू कह रहा था कि चंद्रु को बुलाकर वह इन्हें उतरवा देगा।'

'उससे कहना कि यह न करे। कहना कि मैंने कहा है। बिजली वाला आये तो उससे कहना कि इन्हें भी देख ले।'

गाड़ी जैसे ही चलने को हुई तो कमला पीछे जाकर चिल्लाई, 'और मिठाइयाँ मत भुलना।'

'नहीं भूलूँगा', यह भी उसने इतने जोर से कहा कि, गाड़ी की भड़भड़ के बीच भी अँधेरे कमरे में पड़ी सावित्री यह बात सुन ले।'

दोपहर के दो बजे तो लड़कियों को डर लगने लगा। माँ ने बिलकुल कुछ नहीं खाया था और कमरे में ही पड़ी थीं। सुमति मंडप में बैठी सोचने लगी कि क्या किया जाय। माँ की अनुपस्थिति से घर में मातम सा छा गया था। कमला भी कमरे का दसवाँ चक्कर लगाकर वापस आ गई।

'माँ क्या कह रही हैं?' सुमति ने पूछा।

'कुछ जवाब ही नहीं देतीं। मैंने पूछा कि आज मुझे क्या पहनना है तो भी नहीं बोली।'

सुमति ने कहा, 'तुम तो बेवकूफ हो। हर दफ़ा एक ही सवाल पूछती हो!'

'नहीं, यह सवाल मैंने तीन दफा ही पूछा है। मैंने यह भी पूछा कि आज किस-किसको बुलायेंगे।'

'हम बाहर कब चलेंगे, बिजली कब जलाई जायेगी और क्या-क्या मिठाइयाँ लेनी हैं। इससे ज्यादा सवाल मेरी समझ में ही नहीं आये।'

बच्चों का सोचना था कि माँ किसी सवाल का जवाब देंगी तो उन्हें बातों में लगाया जा सकेगा, और फिर अँधेरे कमरे से बाहर निकलने के लिए भी मनाया जा सकेगा। यह बड़ा राजनीतिक कदम था और पहले तो सावित्री ने संक्षिप्त से जवाब भी दिये, लेकिन जब इनका उद्देश्य उसकी समझ में आ गया तब उसने कुछ भी कहना बंद कर दिया।

कमला बोली, ‘अब तुम भी जाओ और कोशिश करके देखो।’

लेकिन सुमति कुछ और सोच रही थी। यह कि जानम्मा आंटी के पास जाये और उन्हें यहाँ ले आये। लेकिन वह आंटी को बतायेगी क्या?

कमला ने कहा कि तुम उनसे सिर्फ यह कहना कि बाबू ने कल रात बिजली गुल कर दी। इसलिए माँ परेशान है। ज़रा चलकर देख लें।

उस समय जानम्मा घर के बाहरी कमरे में चटाई बिछाये आराम कर रही थी। सुमति चटाई के बगल में जाकर चुपचाप खड़ी हो गई। वह सोचने लगी कि उन्हें जगाये या नहीं, लेकिन इस तरह तो वह शाम को छह बजे तक सोचती ही रहेगी। तब माँ का क्या होगा? इसलिए उसने धीरे से पुकारा, ‘आंटी, आंटी!’

‘अरे सुमति, तुम हो बेटा? क्या बात है?’

‘आंटी, आप अभी मेरे साथ चलकर जरा माँ को देखे लें।’

‘उन्हें क्या हुआ है?’

‘पता नहीं।’

‘बीमार है क्या?’

‘पता नहीं...शायद।’

‘वह कर क्या रही हैं?’

‘सो रही होंगी। आप फौरन चलकर उन्हें उठायें और नहा-धोकर खाना खाने को कहें।’

जानम्मा उठकर सुमति के साथ चल दी और अँधेरे कमरे के सामने आ खड़ी हुई। ‘सावित्री’, उसने धीरे से पुकारा।

सावित्री ने आँखें खोलीं। उसे आवाज़ पहचानने में कुछ सेकिंड लगे।

‘अरे, भाभी, आओ...बैठो। कमला, चटाई ले आना।’

‘मुझे चटाई नहीं चाहिए। मैं जमीन पर बैठ जाऊँगी। अच्छा मालूम है इस वक्त क्या बजा है? दो बजे हैं लेकिन तुम अब तक न नहाई-धोई हो, न खाना खाया है। बात क्या है?’

सावित्री बोली, ‘मेरी तबियत ठीक नहीं है।’

‘तुम्हारे घर में बीमार होने पर लोग यहाँ इस तरह सोते हैं? सुनो, मैं तुमसे उम्र में बड़ी हूँ, मुझसे कुछ नहीं छिप सकता। सुमति ने आकर जब मुझे बताया तो मैं सच बात समझ गई। नहीं मत करना।’

‘लड़की तुम्हें तकलीफ देने तुम्हारे घर पहुँच गई!’

‘और क्या करती बेचारी? जब बड़े झगड़ते हैं तो परेशानी बच्चों को ही होती है।’

‘झगड़ा कुछ नहीं हुआ। मैंने तो एक शब्द भी नहीं कहा।’

‘यह तो और भी बुरी बात है। तुम या तो जो ठीक समझती हो, कह डालो, नहीं तो मान लो कि पति की हर बात सही है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैंने सारी जिंदगी पति से कभी कुछ नहीं कहा और उसकी हर बात मानी है। कभी कोई सुझाव दिया हो तो दिया हो, लेकिन इससे ज्यादा कुछ नहीं किया। पति सही ही करता है और पत्नी को उसकी हर बात

माननी चाहिए।'

अब सावित्री ने खुलकर बताया, 'लेकिन भाभी, अगर वह बच्चे को बेरहमी से पीटे...।'

'आदमी भावनाओं के गुलाम होते हैं। कभी वे गुस्सा करते हैं, फिर एकदम प्यार बिखेरने लगते हैं। उन्हें बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है, इसलिए कभी-कभी वे गलती भी कर जाते हैं।'

'मैं अपने लिए सब कुछ बर्दाश्त कर सकती हूँ लेकिन जब बच्चे को...।'

'दअसल पुरुष ही बच्चों को सही ट्रेनिंग दे सकते हैं, हम नहीं दे सकते। अगर वे कभी सख्ती भी बरतते हैं तो बाद में इसके लिए पछताते भी हैं।' जानम्मा घंटे भर तक इस तरह की बातें कहती रहीं और स्त्रियों को धीरज की मिसालें देती रहीं—उनकी अपनी दादी जिंदगी भर दादा को सहन करती रहीं, उनकी तीन रखैलें, घर में ही रहती थीं, उनकी चाची को चाचा रोज़ पीटते थे लेकिन वह बर्दाश्त करती थीं। और पचास साल तक उन्होंने यह सहा; उनकी माँ की एक सहेली पति के कहने पर कुएं में भी कूदने को तैयार थीं, वगैरह, वगैरह...और अंत में सावित्री सचमुच सोचने लगी कि वह बड़ी बेवकूफी का व्यवहार करती रही है।

'सावित्री, अब उठ बैठो, नहा-धोकर सबसे बढ़िया साड़ी पहनो और खाना-पीना खाकर तैयार हो जाओ। इस वक्त तुम न जाने कैसी लग रही हो! चलो, उठो...।'

सावित्री फिर भी बड़बड़ाई कि उसकी तबियत ठीक नहीं है और उसे भूख नहीं है।

'मैं तब तक यहाँ से नहीं उठूँगी जब तक तुम इस कमरे से बाहर नहीं निकलोगी, 'जानम्मा ने जोर देकर कहा। सावित्री शायद कुछ और सुनना चाहती थी इसलिए जब जानम्मा ने कहा, 'और नवरात्रि के पर्व पर तो ऐसा करना पाप है,' तो उसे अपनी गलती बहुत बड़ी लगने लगी। अंत में जानम्मा ने कहा, 'तुम इन दोनों बच्चियों की खुशी भी खत्म कर रही हो। नवरात्रि साल में एक ही बार आती है...।'

सावित्री अब अपने को पूरी तरह दोषी मानने लगी, उसे अपने से नफरत होने को हुई...

'लड़कियो, तुम्हारी माँ नहाना चाहती है। देखो, गर्म पानी तैयार है?'

'मैं अभी रसोइये से पानी गर्म करवा देती हूँ", यह कहकर सुमति तेजी से दौड़ी। कमला भी दौड़, जैसे खुशी से नाच रही हो। दोनों चिल्लाईं, 'पानी गर्म करो। माँ नहाना चाहती हैं।'

5

नए साल में इंग्लेडिया इंश्योरेन्स कंपनी ने फैसला किया कि अपनी शाखाओं में कुछ महिला कर्मचारियों को दफ्तर और बाहर के कार्यों में प्रशिक्षण दिया जाय, जिनका बाद में महिलाओं का बीमा करने के कार्य में उपयोग किया जाय। कंपनी ने बड़े ज़ोर-शोर से योजना का विज्ञापन और प्रचार किया, जिसका परिणाम भी बहुत संतोषजनक निकला।

रमानी के दफ्तर में महिला प्रार्थियों के प्रार्थना पत्रों का ढेर लग गया। रमानी ने एक बहुत खुश्क सा मज़ाक करते हुए अपने कार्यालय प्रबंधक परेरा से कहा, 'हम तरह-तरह की सुंदरियों से अपना कार्यालय सजाने को आतुर नहीं हैं, हमें तो स्त्रियों को अपना बीमा कराने के लिए तैयार करने में इनका उपयोग करना है।'

'अब इन अर्ज़ियों का क्या करना है सर?'

'इन्हें पंद्रह और बीस तारीखों के बीच इन्टरव्यू के लिए बुलाइये। हर रोज़ कितनों को बुलाना है, यह तय कर लेते हैं।'

'इनमें से बहुत सी तो दूसरे शहरों से आयेंगी।'

'यह खर्चा उन्हें खुद करना पड़ेगा।'

परेरा ने अकाउंटेन्ट कान्तंगार से कहा, 'बॉस ने बड़ी ज़ोरदार दावत का इंतज़ाम कर दिया है। पंद्रह और बीस के बीच तुम अपने हरम के लिए अपना चुनाव कर लेना। इन दिनों दफ्तर से छुट्टी मत करना।'

कान्तंगार ने कहा, 'मेरे लिए तो यही ठीक होगा कि अपने परिवार में ही छिपा रहूँ।' वह इस योजना के सख्त विरोध में था। 'ये लोग कंपनी को चकला बनाना चाहते हैं?'

'नहीं, यह बढ़िया योजना है', परेरा बोला।

रमानी को भी यह योजना एकदम नई और शानदार लग रही थी, और मद्रास में हेडऑफिस भी बड़े जोश-खरोश से इस पर काम कर रहा था। पंद्रह और बीस जनवरी के बीच के दिनों में उसने बहुत सी स्त्रियों के इन्टरव्यू लिये, लेकिन हर रोज़ जिन तीस-चालीस युवतियों से वह बात करता, उनमें से एक भी उसे कंपनी और दफ्तर के किसी काम की नहीं लगीं। इनमें से कुछ तो बिलकुल लड़कियाँ थीं, मैट्रिक या इंटर तक पढ़ी, जो बहुत छोटी और नासमझ लगने पर भी अपने को बड़ी और समझदार दिखाने की कोशिश कर रही थीं। कुछ विधवाएं थीं और कुछ तो वेश्याएं ही थीं जो फालतू समय का उपयोग करना चाहती थीं। रमानी को लगा कि ये कंपनी के फायदे का कोई भी काम नहीं कर सकेंगी, भले ही जिन

दिनों वे इन्टरव्यू देने दफ्तर में आती-जाती रहीं, यहाँ का वातावरण खूबसूरत और रंगीन हो गया हो।

कान्तंगार इन दिनों ज़रा ज़्यादा ही सिर नीचा किये काम करता रहा और काम भी उसने रोज़ से ज्यादा किया, हालांकि मन में वह पूरे समय परेशानी महसूस करता रहा, दफ्तर के दूसरे क्लर्क वगैरह भी यह तकलीफ़ झेलते रहे। सिर्फ परेरा ने इसे जश्न के तौर पर लिया। उसने दफ्तर के एक सुरक्षित स्थान में इनके बैठने का प्रबंध किया और दिल भर कर चुहलबाज़ी करता रहा।

रमानी ने इन्टरव्यू तो लिये लेकिन बोरियत के साथ, उसे हेड ऑफिस का यह काम पसंद नहीं आ रहा था।

हरेक से वह निश्चित सवाल पूछता और कह देता कि आपको बाद में सूचित किया जायेगा।

आखिरी दिन सबसे अंत में एक महिला आई। उसे देखते ही रमानी अपनी कुर्सी के पीछे की ओर खड़ा हो गया—यह उसने अभी तक किसी के सामने नहीं किया था। परेरा ने, जो प्रार्थी के पीछे आया था, यह देखकर अपनी मूँछ पर अपनी उँगली फिराई, जैसे उसने यह अंतर नोट कर लिया है।

‘तशरीफ रखिये,’ रमानी ने कहा और महिला के बैठने के बाद ही अपनी कुर्सी पर बैठा। उसने खंखार कर अपना गला साफ किया और सामने रखी लिस्ट पर नजर डालकर कहा, ‘आप मिसेज़ शान्ता बाई...।’

‘जी’, उत्तर आया।

उसने परेरा पर नजर डाली जो वहीं टहल रहा था। परेरा ने दूसरी बार अपनी मूँछों पर उँगली फिराई और धीरे से बाहर निकल गया।

‘आप किस जिले से आई हैं?’ उसने प्रश्न किया।

‘मैंगलोर से,’ शान्ता बाई ने उत्तर दिया।

‘मैंगलोर’ रमानी ने दोहराया और भद्रता से कहा, ‘मैं कभी आपके जिले में आना चाहूँगा।’

‘अच्छा,’ उसने कहा, ‘लेकिन वहाँ कुछ खास नहीं है। आपको वह जगह पसंद नहीं आयेगी।’

रमानी को लगा कि उसकी बात का असम्मान किया गया है लेकिन जिस खूबसूरती से बात कही गई थी, वह उसे अच्छी लगी। वह मुस्कराया और उसी फुर्ती से यह चेतावनी देने के लिए उसे धन्यवाद दिया, नहीं तो मैंगलोर की यात्रा में उसका पैसा और वक्त दोनों ही बरबाद होते। लेकिन इस टिप्पणी पर महिला ने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। रमानी को इससे चोट लगी। वह सोचने लगा, ‘यहाँ बड़ा कौन है?—मैं।’ उसने अपने तेवर बदले और तीखा सा सवाल किया, ‘आप वहाँ अपने लोगों के साथ रहती हैं?’

‘यह मुश्किल सवाल है और इसका जवाब देने में काफी वक्त लगेगा।’

रमानी को फिर अपना अफसरपन पिघलता सा लगा। अपने को संयत करके उसने

दूसरा सवाल किया, 'आप विवाहित लगती हैं।'

'जी', उसने दयनीय स्वर में धीरे से उत्तर दिया, और रमानी को उसके व्यक्तिगत जीवन के बारे में और कोई सवाल करने की हिम्मत नहीं हुई। उसने क्षमा माँगने के लहज़े में कहा, 'व्यक्तिगत प्रश्न पूछने के लिए मुझे माफ करें, लेकिन मुझे हेडऑफिस को रिपोर्ट भेजनी होती है। अगर आपको चुना जाता है तो वे आपके बारे में सब जानना चाहते हैं, कि कहीं आपके काम में आपके लोग बाधा न डालें...।'

'इसका आप उन्हें विश्वास दिला सकते हैं। अगर मुझे परिवार की ओर से कोई बाधा होती तो मैं यहाँ अर्जी ही नहीं देती।'

'ठीक है, मुझे कुछ और बातों की जानकारी चाहिए', रमानी ने कहा। इससे पहले जो भी प्रार्थी आये, वे सब उसकी कृपा पर निर्भर थे लेकिन अब वह इस प्रार्थी की दया पर निर्भर हो रहा था। उसे उसकी स्पष्टवादिता पसंद आई। अब तक उसने ऐसे सुकोमल ओठों से इस प्रकार के शब्द निकलते नहीं सुने थे। उसका व्यवहार भी पसंद आया। उसने अपनी जीवन-कथा कुछ इस तरह सुना दी जैसे उस पर दया कर रही हो: 'मेरी कहानी यह है। मैं मैंगलोर में पैदा हुई। बारह साल की उम्र में मेरी शादी परिवार के ही एक रिश्तेदार से कर दी गई जो जुआरी और शराबी था। जब मैं अठारह साल की हुई और यह समझ गई कि यह तो नहीं बदलेगा, तो मैंने उसे छोड़ दिया। मेरे माता-पिता को यह पसंद नहीं आया और मुझे अपना घर भी छोड़ना पड़ा। मैं पाँचवे दर्जे तक पढ़ी थी, अब मैंने मिशन स्कूल में दाखिला ले लिया। अपनी एक चाची की मदद से मैंने मैट्रिक पास किया और मद्रास जाकर वुमेन्स कालेज ज्वाइन कर लिया। तीन साल पहले मैंने बी.ए. कर लिया और उसके बाद से इधर-उधर घूम रही हूँ। मैंने कई जगह पढ़ाया है और कई पैसे वालों के बच्चों की देखभाल भी की है। कुल मिलाकर मैंने बड़ा संघर्ष किया है। यह कहना बकवास है कि शिक्षा में नारी की मुक्ति है। इससे उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं होता। इसके बाद भी वे दूसरे मर्दों की तरह बेरोज़गार बनी रहती है।'

'आपकी बातें सुनकर मुझे ताज्जुब हो रहा है', रमानी ने कहा, यह सोचकर कि अब उसे भी कुछ कहना चाहिए।

'दूसरों को भी होगा, और सबसे ज़्यादा हमको खुद होगा। संघर्ष करके हम बी.ए. कर लेते हैं और सोचते हैं कि अब हम सबसे आगे आ गये, लेकिन होता क्या है, हम पाते हैं कि हमारे जैसे हज़ारों दुनिया में ठोकरें खा रहे हैं।

उसकी आवाज़ भी बहुत मीठी थी और अच्छी लग रही थी। इसलिए रमानी का मन हुआ कि उससे पूछे कि क्या आप गाती भी हैं, लेकिन अपने पर नियंत्रण रखकर बोला, 'आपकी कहानी बहुत प्रभावित करती है। तो, आपने हमारा विज्ञापन देखा होगा?'

'जी, देखा था। मैंने आपकी सब शाखाओं के दफ्तरों में अर्जी भेजी लेकिन जवाब आपके ही यहाँ से प्राप्त हुआ।'

'उस समय आप कहाँ थी?'

'मैंगलोर में, पुराने मित्रों के साथ ठहरी थी और काम की तलाश कर रही थी। अब मैं

यहाँ आपके सामने हूँ। अगर आप मुझे योग्य समझें और काम दे सकें तो मैं बड़ी कृतज्ञ होऊँगी।'

यह सुनकर रमानी के बदन में एक सनसनी सी दौड़ गई, ऐसी सुंदर स्त्री उसकी कृतज्ञ हो रही थी। वह गर्व से फूल उठा और बोला, 'मैं आपके लिए पूरी कोशिश करूँगा। यह तो आप जानती होंगी कि अंतिम निर्णय हेडऑफिस करता है...लेकिन मैं हर संभव कोशिश करूँगा।'

'आपका बहुत बहुत धन्यवादप', उत्तर मिला।

'मैं अब आपको यह भी बता दूँ', वह अफसरी के मूड में आ गया और अपने से छोटे कर्मचारी से बात करने के लहज़े में उसे बताने लगा कि 'इंश्योरेन्स का काम कोई बहुत आसान काम नहीं है। यह दुनिया के सबसे मुश्किल कामों में गिना जाता है। मुझे इसमें काम करते पंद्रह साल हो गये हैं...,' उसकी यह आत्मकथा और उपदेश की बातें तब तक चलती रहीं जब तक परेरा कागज़ों का एक गट्ठर लेकर सामने न आकर खड़ा हो गया।

रमानी को पता लगा कि वह होटल में ठहरी हुई है। यह तो एकदम गलत बात थी। दूसरे दिन उसने परेरा को बुलाया और पूछा, 'गलियारे से लगा जो कमरा है, उसमें क्या हो रहा है?'

'कुछ खास नहीं, सर। कुछ पुरानी कुर्सियां और फाइलें पड़ी हैं।'

'ये सब चीजें कहीं और रखकर उसे रहने लायक नहीं बनाया जा सकता! मिसेज़ शांता बाई किसी गंदे से होटल में रह रही हैं, हम उन्हें यह कमरा दें दें...जब तक उन्हें कोई और जगह न मिल जाय? इसमें कोई हर्जा भी नहीं है।'

'जी नहीं सर, बिलकुल कोई हर्जा नहीं है।'

'किसी महिला का होटल में रहना अच्छा नहीं लगता...है न?'

'सर, आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं। इस शहर में कोई अच्छा होटल है ही नहीं। कुर्सी-मेज़ तो मैं कहीं और रखवा दूँगा लेकिन फाइलें और रिकार्ड जरूरी हैं। उन्हें यहाँ आपके कमरे में रखवा दूँ?'

'यहाँ?' रमानी को अपने कमरे में कुछ और रखवाना अच्छा नहीं लगा। 'उसे भी किसी और जगह रखवा दो।'

'ठीक है, सर। कल तक कमरा ठीक करवा दूँ?'

'हाँ, जितनी जल्दी हो जाय...थैंक यू!'

बाहर आकर परेरा ने कान्तंगार से कहा, 'आयंगर, मैं दफ्तर में एक शादी घर बनाने जा रहा हूँ।'

'यह आदमी करना क्या चाहता है? बड़ी गलत बात है। सारा शहर इसकी चर्चा करेगा।'

'नहीं, इससे दफ्तर में ज़्यादा लोग आने लगेंगे।'

दफ्तर के अन्य कर्मचारियों को भी यह बात पसंद नहीं आई क्योंकि फालतू फर्नीचर

उन्हीं के कमरों में रखा गया, और चौकीदार इसलिए नाराज़ हो गया क्योंकि गलियारे का इस्तेमाल वह अपने घर की तरह करता था।

रमानी ने अपने घर पर भी पूछताछ की, 'वह बेकार पड़ी चारपाई कहाँ है?'

'वह तो महीनों पहले कृष्णैयर के घर चली गई थी—जब उसे गठिया की शिकायत हुई थी, और तब से वह वापस नहीं आई है।'

'उसे वापस मँगवा लो। मुझे दफ्तर के लिए चाहिए। वहाँ मैं एकगेस्ट रूम बना रहा हूँ।'

'किसके लिए?'

'बाहर से बहुत लोग आते हैं। कई महत्वपूर्ण लोग काम के सिलसिले में आते हैं। उन्हें ठहराने की अच्छी व्यवस्था करनी है।'

'ऑफिस के लिए चाहिए तो ऑफिस के पैसे से ही खरीद लेना चाहिए। हम अपनी चारपाई क्यों दें?' सावित्री ने यह सुझाव देने की हिम्मत कर ली क्योंकि इस शाम उसका मूड बहुत अच्छा था।

'तो सुनो मेरी बात। हमारे अपने घर में जो कुछ भी है, स्टोर में रखे अनाज समेत, वह सब भी दफ्तर की ही संपत्ति है क्योंकि उसे भी दफ्तर के ही पैसों से खरीदा जाता है।' लेकिन सावित्री ने जबरदस्त बहस की और कहा कि हमारे लिए यह दान का पैसा नहीं है और चारपाई देने से इनकार कर दिया। रमानी ने बहुत समझाया और मान-मनौव्वल भी की लेकिन वह तैयार नहीं हुई। आज उसे मनाना अच्छा भी लग रहा था। 'चारपाई मुझे कुछ ही दिन के लिए चाहिए। जब नया फर्नीचर खरीदा जायेगा, तब यह वापस आ जायेगी। अब ज्यादा वक्त भी नहीं है; कल एक खास मेहमान आ रहा है। मुझे तुम्हारी बेंच और एक कुर्सी, और एक-दो बर्तनों की जरूरत भी होगी।'

'तो तुम्हें घर की हर चीज़ चाहिए।'

टीक लकड़ी की यह बेंच उसे बहुत प्रिय थी।

'तुम बेंच ले जाओगे तो मैं दोपहर को किस चीज़ पर सोऊँगी?'

'मैं तुम्हारे लिए मखमल का कोच ला दूँगा', वह बड़ी रोमान्टिक अदा के साथ बोला। 'मैं तुम्हारे लिए दुनिया की हर चीज़ खरीदने को तैयार हूँ। बस, तुम्हें कहने भर की जरूरत है।' यह सुनकर वह खुश हो गई।

हेड ऑफिस ने एक हफ्ते में शांता बाई की नियुक्ति कर दी। रमानी ने जिस तरह सिफारिश की थी, उसे रद्द करना उनके लिए संभव नहीं था। उसे छह महीने की परख अवधि का नियुक्ति पत्र दिया गया था, साथ ही यह शर्त थी कि पहले दो महीनों में दस हजार रुपए का बीमा पूरा करके दे, और अगर वह इसमें असफल रहती है तो उसे हटाकर दो नंबर के प्रार्थी को यह अवसर प्रदान किया जाय। इस अवधि में उसे साठ रुपए प्रति मास दिया जायेगा, इसके बाद डेढ़ सौ रुपए वेतन कमीशन के साथ, दिया जायेगा, और वह शाखा की

प्रमुख स्त्री एजेंट के रूप में कार्य करेगी।

जिस दिन नियुक्ति पत्र आया, रमानी ने उसे अपने कमरे में बुलाया और बड़े नाटकीय ढंग से यह कागज़ उसके सामने रख दिया। उसने यह भी दिखाने की कोशिश की कि इस बात को वह महत्व नहीं दे रहा है; वह मेज के कागज़ों को ही उलटता-पुलटता रहा। जब शांता बाई नियुक्ति-पत्र पढ़ रही थी, वह अपने कागज़ देखते हुए भी चुपचाप उसकी वेशभूषा पर भी नज़र डालता रहा और ज़ोरदार धन्यवाद की प्रतीक्षा भी करता रहा।

लेकिन शांता बाई ने धन्यवाद के स्थान पर कहा, 'मुझे तो इससे निराशा ही हो रही है।'

रमानी ने चौंककर सिर उठाया।

'मैं सोचती थी कि प्रारंभिक वेतन दो सौ से कम नहीं होगा', शांता बाई ने कहा और एक क्षण सोच में डूबे रहकर धीरे से बोली, 'लेकिन मुझे यह सोचना ही नहीं चाहिए था क्योंकि विज्ञापन में वेतन का जिक्र ही नहीं था।'

रमानी ने दुखी होकर सोचा कि कहीं यह पचास रुपए के लिए नौकरी अस्वीकार करने तो नहीं जा रही है, इसलिए फौरन उसे समझाना शुरू कर दिया, 'लेकिन आप इस बात पर ध्यान नहीं दे रही हैं कि दो साल बाद आपका वेतन दो सौ ही हो जायेगा। वेतन में बढ़ोतरी का कालम जरा ध्यान से पढ़िए। इसके अलावा आपको वेतन के साथ कमीशन भी प्राप्त होगी।'

'ठीक है, आपकी बात मान लेती हूँ। आप जो भी कहेंगे, मैं करती जाऊँगी।'

रमानी यह जानकर खुश हुआ कि वह उसे इतना महत्व दे रही है। क्षण भर के लिए वह विचार में पड़ गया। सादी वॉयल की साड़ी इस पर कितनी अच्छी लगती है! बीवियाँ इतनी आकर्षक क्यों नहीं बन पातीं?

'मैंने सोचा था कि अगर मुझे दो सौ रुपए वेतन मिलेगा तो मैं अपने लिए एक बेबी आस्टिन गाड़ी खरीद लूँगी।' फिर जैसे एक आह भरकर बोली, 'किसी के सभी सपने पूरे नहीं होते।'

'मुझे विश्वास है कि कमीशन से आपको जो आय होगी, उससे आप बहुत जल्द बेबी नहीं, बड़ी आस्टिन ही खरीद लेंगी।...क्या मैं हेड ऑफिस को लिख दूँ कि आपको शर्त मंजूर हैं और बाकी कार्यवाही भी पूरी कर दी जाय।'

'जैसा ठीक समझें', उसने जवाब दिया।

रमानी सोचने लगा, इतना साफ़ रंग मैंगलोर के लोगों का ही होता है; नसों में बहता खून भी दिखाई देता है। फिर ज़ोर से बोला, 'मैं कोशिश करूँगा कि प्रोबेशन की अवधि कम हो जाय और इन महीनों का वेतन भी कुछ बढ़ा दिया जाय। लेकिन इस सब में समय लग सकता है। आप निश्चिंत रहें, आपके हित मेरी देख रेख में पूरी तरह सुरक्षित रहेंगे।'

'ठीक है। तो मैं कब से शुरू करूँ?'

'कल से। अब आप चाहें तो जा सकती हैं।'

वह उठी और बाहर निकल आई। रमानी उसे बाहर जाते देखता हुआ विचार मग्न हो

गया। कैसी खुशबू छोड़ गई है! वह पति कितना मूर्ख और गधा होगा जो इतनी प्यारी चीज़ को अपने पास न रख सका! दफ्तर के स्टाफ में इतनी आकर्षक कर्मचारी रखना भी एक नई बात होगी। यह पूरे शहर की चर्चा का विषय बन जायेगा। उसे उम्मीद थी कि स्टाफ के दूसरे लोगों को इसके कारण ज्यादा परेशानी नहीं होगी; उन्हें आदत पड़ जायेगी। मर्द और औरत अलग-अलग डिब्बों में रहे, यह सब बकवास है। औरतें भी मर्दों जैसी ही होती हैं और इसी ढंग से उनसे व्यवहार किया जाना चाहिए। उसने परेरा को बताया, 'हेडऑफिस ने नियुक्ति मंजूर कर ली है।'

'बड़ी खुशी की बात है', परेरा बोला।

'वह कल से काम शुरू करेगी। तुम्हें कहीं उसके लिए मेज़, कुर्सी वगैरह का इन्तज़ाम करना है। उसे कहाँ बैठाना ठीक रहेगा'

परेरा ने क्षण भर सोचा, फिर बोला, 'दफ्तर में काफी जगह है। जरूर कुछ इन्तज़ाम हो जायेगा।'

तभी उसे कान्तंगार का ख्याला आया, उसे तो यह सुनकर फिट पड़ने लगेंगे। रमानी ने पूछा, 'इससे हमारे स्टाफ़ को तो कोई परेशानी नहीं होगी?'

'बिलकुल नहीं। हॉल में एक दर्जन लोग बैठते हैं।' फिर वह रुका और मूँछें सहलाता हुआ बोला, 'बीच में स्क्रीन लगा दी जाय?'

'यह जरूरी है क्या?'

'पता नहीं, सर, लेकिन मेरा ख्याल है कि मैडम को यह अच्छा लगेगा।'

'हाँ...अगर तुम्हें यह लगे कि उसके कारण टाइपिस्टों के काम में बाधा पड़ेगी, तो स्क्रीन लगाई जा सकती है।' यह कहकर वह ज़रा सा हँसा, जितना अफसरी रूआब के लिए सही था।

बाहर निकलकर परेरा कान्तंगार के पास पहुँचकर बोला। अपनी मेज़ खाली करो और उस कोने में चले जाओ। मैं तुम्हें दूसरी मेज दे रहा हूँ।'

'क्या मतलब है तुम्हारा?'

'ऑर्डर है बॉस का। यहाँ परी आकर बैठेगी। उसे सबसे अच्छी जगह देनी है, इसलिए तुम्हें यहाँ से हटना है।'

'यह गलत बात है। मैं इस्तीफा दे दूँगा।'

'और अपने परिवार को सड़क पर खड़ा कर दोगे...।'

'वह चाहता क्या है?'

'औरतें और बच्चे सबसे पहले, प्यारे भाई। तुम जैसा लकड़ी का खुरदरा टुकड़ा कहीं भी रखा जा सकता है, और गुलाब के फूल को ढेर सारी ताज़ा हवा और रोशनी वगैरह चाहिए, और काफी बड़ी मेज़ भी-तभी उसकी खुशबू बनी रह सकती है।'

कान्तंगार पागल हो उठा था, उसके लिए यह काफी नहीं था कि टूटी-फूटी मेज़-कुर्सियाँ यहाँ भर दीं और हॉल की रौनक ही खत्म कर दी, अब उसे भी यहाँ लाया जा रहा है।'

‘ये दोनों चीज़ें एक जैसी नहीं हैं। हालांकि तुम्हारा घटिया दिमाग इन्हें एक करके देख रहा है। इससे मुझे याद आया कि मैडम जब यहाँ बैठेंगी तो इस सब कबाड़ को पर्शियन कारपेट से ढक दिया जायेगा।’

‘मेरी समझ में यह नहीं आता कि वह उसे यहाँ क्यों बिठा रहा है? क्यों नहीं उसे अपने ही कमरे में, और चाहे तो अपनी गोद में ही क्यों नहीं बिठाता?’

‘इसका भी वक्त आयेगा। अब मैं यह बताऊँ कि बॉस ने तुम्हारी कुर्सी दीवार की तरफ मुँह करके रखने को कहा है। उन्होंने कहा, “ध्यान रखना कि अकाउंटेंट उसे देखकर मस्त न हो जाय और जोड़-बाकी करना ही भूल जाय। इसलिए उसकी आंखें दीवार की तरफ होनी चाहिए।”’

‘वह समझता है कि मैं भी उसकी तरह औरतों का शिकार करता हूँ? वैसे, अगर मुझे ऐसी चीज़ों की चाह होती...।’

‘तो कम से कम सौ औरतें तुम्हारे इर्द-गिर्द मँडराती? हो भी सकता है...। खैर, तुम सचमुच चाहते हो कि तुम्हारी सीट जहाँ है वहीं रहे और तुम्हें परेशान न किया जाय?’

‘मुझे यहाँ से हटाया गया तो मैं इस्तीफा दे दूँगा...’, कान्तंगार ने गुस्से से कहा।

’हम तुम्हें छोड़ ही नहीं सकते। ठीक है, मैं बॉस से कहूँगा कि तुम्हें यहीं रहने दिया जाय, लेकिन एक शर्त पर...कि तुम उसे देखते ही त्यौरियाँ नहीं चढ़ाओगे। मुझे समझ नहीं आता कि तुममें इतना कड़वापन क्यों है? मैं खुद उसका स्वागत करता हूँ। उसके कारण यहाँ का वातावरण बदलेगा। लेकिन मेरे लिए यह मुश्किल भी होगा, यह देखना कि टाइपिस्टों के काम में उसकी उपस्थिति से बाधा न पड़े। बॉस ने भी यही कहा, ‘टाइपिस्टों और अकाउंटेन्ट पर नज़र रखना।’

6

एक रात क्लब से घर लौटते हुए रमानी जब रेस कोर्स रोड पर स्थित अपने दफ्तर के सामने से गुजर रहा था, उसे गाड़ी रोककर दफ्तर देखने की इच्छा हुई। पहले तो उसने सोचा कि इस वक्त वहाँ जाना उचित नहीं होगा, इसलिए वह आगे बढ़ने लगा, लेकिन गाड़ी कुछ ही कदम आगे बढ़ी होगी कि उसे दूसरा विचार आया, कि उसे कभी-कभी रात के समय दफ्तर का मुआयना जरूर करना चाहिए। इससे चौकीदार ज्यादा सतर्क रहकर ड्यूटी देगा। उसे यह भी देखना जरूरी है कि पैसों की तिजोरी और फाइलों की अलमारी के ताले ठीक-ठीक लगे हैं या नहीं। इन दिनों दफ्तरों में चोरियों और डाकेपड़ने की खबरें अक्सर आने लगी थीं। अब तक गाड़ी रेस कोर्स रोड और मार्केट रोड के चौराहे तक पहुँच चुकी थी, लेकिन उसने गाड़ी को वापस मोड़ा और दफ्तर के सामने आ खड़ा हुआ।

उसने देखा कि चौकीदार सीढ़ियों के नीचे आराम से पड़ा सो रहा है। रमानी उसके सामने खड़ा होकर गुस्से से भनभनाने लगा, 'आठ बजे ही सो गया! कल परेरा को बताऊँगा' फिर वह सीढ़ियों पर चढ़ा। उसे गलियारे के बगलवाले कमरे की खिड़की से रोशनी दिखाई दीं। एक क्षण रुककर उसे देखा, फिर अपने कमरे में आ गया। बत्ती जलाई, फाइलों की अलमारी और तिजोरी पर नजर डाली और उनके ताले खींचकर देखे। अब वह सोचने लगा कि क्या करूँ। मुआयना खत्म हो गया था। दराज़ खोली और उसमें पड़े कागज़ों को उलटता-पलटता रहा; फिर कुछ देर पिन-कुशन से पिनें निकालने और उन्हें वापस घुसाने का खेल खेलता रहा; मेज पर रखे कलम और उनकी निबें चेक कीं; तिजोरी और अलमारी के ताले दोबारा इधर-उधर हिलाये, बत्ती बुझाई और कमरे से बाहर आ गया। इसके बाद दो सीढ़ियाँ उतरा और सोचा कि फौरन घर जाय क्योंकि सावित्री और नौकर इन्तज़ार कर रहे होंगे। लेकिन अचानक रुक गया; सीढ़ियाँ ऊपर चढ़ा और गलियारे से सटे कमरे के दरवाजे पर दो दफ़ा हलकी-हलकी थाप दी।

'कौन है?'

रमानी की एकदम समझ में नहीं आया। कि क्या बतायें वह कौन है। इसलिए बोला, 'आप परेशान न हों। घर लौटते हुए मुझे किसी काम की याद आई और मैं दफ्तर आ गया।'

शांता बाई ने उसकी आवाज़ पहचान ली और दरवाज़ा खोल दिया। 'मैं तो डर गई थी। लगा, कोई मुझे भगाने को आया है।'

'भगाने को?' रमानी अजीब ढंग से हँसा। 'मुझे दरअसल शक हुआ कि आज तिजोरी

में ताला लगाया है या नहीं। इन बातों से परेशानी हो जाती है। अखबारों में रोज़ छपने वाली खबरें याद आने लगती हैं कि आज कहाँ डाका पड़ा और कहाँ चोरी हुई। इतनी बड़ी जिम्मेदारी निभाना भी आसान काम नहीं है।'

'यह बात तो सही है, यह बड़ा मुश्किल काम है। कुछ भी हो जाय, आप ही जिम्मेदार माने जायेंगे।'

'मुझे जेल भेजा जा सकता है। एक भी कागज़ नहीं खोना चाहिए, न हिसाब में एक भी पैसे की कमी हो।'

वह रमानी से बातें कर रही थी, और गलियारे में लगे बल्ब की रोशनी में उसकी आँखें दिप-दिप कर रही थीं। वह सफेद साड़ी पहने थे और बालों में चमेली के फूल महक रहे थे। अचानक वह बोली, 'भीतर क्यों नहीं आ जाते? बाहर क्यों खड़े हैं?'

'मैंने सोचा, आपको यह रिवाज के मुताबिक नहीं लगेगा।'

'अरे, मुझे रिवाज में दिलचस्पी नहीं है', वह बोली। 'नहीं तो मैं यहाँ न होती, खाना पका रही होती और बच्चे पाल रही होती। आइये, आइये, और देखिए मैंने अपना घर कितना अच्छा बना लिया है।'

रमानी खुश होकर भीतर आ गया और शांता बाई की परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढालने की योग्यता पर आश्चर्य करने लगा। दफ्तर में उसने उसकी उपेक्षा करने का व्यवहार अपनाया था, जिसे उसने उसी तरह स्वीकार कर लिया था, लेकिन यहाँ वह कितनी प्रसन्नता और उत्साह से उसका स्वागत कर रही है। कमरे के दरवाज़ों पर उसने छपे हुये खद्दर के पर्दे टाँग दिये थे, दीवार पर कालेज के दिनों के ग्रुप फोटो लगा दिये थे, बिस्तर पर फूलदार चादर बिछा दी थी और कुर्सी पर सिल्क की गद्दी रख दी थी। 'यह यहीं नहाती-धोती है और कपड़े बदलती है,' यह सोचकर रमानी के बदन में झुरझुरी होने लगी जिसकी वजह वह समझ नहीं पा रहा था। उसने चारों तरफ नजर दौड़ाई और कहा, 'वाह! कितना बदल दिया है!'

'तशरीफ़ रखिये।'

'महिला खड़ी रहे तो मैं कैसे बैठ सकता हूँ,' उसने भद्रता से कहा।

'ठीक है,' यह कहकर वह मुड़ी और बिस्तर पर जाकर बैठ गई। रमानी टीक की बेंच पर बैठ गया। शांता बाई ने हाथ ऊपर फैलाकर उन्हें सीधा करने की कोशिश की, 'मेरे जोड़ सख्त होने लगे हैं। लगता है, बूढ़ी हो रही हूँ।'

रमानी ने इसे मज़ाक के रूप में लिया और ज़ोर से हँसा।

'मैं सीधे होकर न बैठूँ तो आप बुरा तो नहीं मानेंगे?' उसने पूछा।

'नहीं, बिलकुल नहीं। जैसे चाहे, आराम से बैठिये।'

वह तकिये पर झुक आई, और पैर फैलाकर बोली, 'मैं सीधे नहीं बैठ सकती। कालेज के दिनों में भी मैं लेटकर ही सारी रात पढ़ती रहती थी।'

रमानी की नजर उसके शरीर के प्रत्येक अंग और उनकी गतिविधियों पर पड़ रही थी। वह थोड़ी-थोड़ी देर बाद सिर को झटका देती, ज़रा से ओठ निकालती और भाँहें दबाती थी।

रमणी को विचार आया कि दफ्तर में उसके प्रति उपेक्षा बरतना क्रूरता से कम नहीं है, और इस समय उसकी सफाई देना ठीक रहेगा। 'मुझे अभी याद आया—अगर दफ्तर में आप मुझे कुछ अलग पायें तो दुखी न हों।'

'नहीं, मैं किसी बात से दुखी नहीं होती। दफ्तर में आप सबसे बड़े अफसर हैं, लेकिन यहाँ—'

'आपका भाई हूँ—अगर यह कहने की इजाजत दें।'

'आप मुझे अपनी बहन मान सकते हैं—इसमें मेरी पूरी सहमति है।'

'ओह, आप बहुत अच्छी हैं। आफिस में मैं नहीं चाहता कि लोग कोई अंतर महसूस करें। इसलिए मैं सबके साथ एक जैसा व्यवहार करता हूँ—।' यह बात वह तरह-तरह से देर तक दोहराता रहा।

रमानी को भाई के पद की सौगात देने के बाद वह अन्तरंग बातें करने लगी। पति उस पर जो अत्याचार करता था...इस कहानी ने रमानी का दिल दहला दिया। उसने दूसरी बार जिंदगी में संघर्ष करते हुए आगे बढ़ने की उसकी कथा गहरी रुचि से सुनी। उसने बताया कि दो दफा पुरुषों ने उसकी इज़्ज़त पर हाथ डालने की कोशिश की...ऐसे लोगों को कोड़े से पीटना चाहिए। रमानी को उसका जीवन-दर्शन बहुत सही लगा। हर दस मिनट बाद वह कहती थी, 'मेरे लिए तो जिंदगी है...,' या 'आज जी भर कर जिओ, कल की फिक्र छोड़ दो', 'इज़्ज़त ही स्त्री की सबसे कीमती चीज़ है'...ऐसे बहुत से फ़िकरे उसकी ज़बान से निकलते ही आ रहे थे। रमानी ये सब जानता न हो, ऐसी बात नहीं, लेकिन शांता के मुलायम ओठों से निकलकर उनमें एक नई ताज़गी और नया रंग भर जाता था। रमानी ने उसे विश्वास दिलाया कि वह उसकी पूरी मदद करेगा और शांता ने उसे बताया कि कंपनी की नौकरी में वह क्या-क्या करना चाहेगी। और दर्शन, आत्मकथा और भविष्य की कल्पनाओं की गहन चर्चा के बीच दफ्तर की घड़ी की आवाज़ें सुनाई देने लगीं।

'अरे, दस बज गये,' रमानी ने जेब से घड़ी निकालकर देखी, 'मैं तो सोचता था कि साढ़े आठ या ज्यादा से ज्यादा नौ बजे होंगे।' यह कहकर उसने आह भरी और उठ खड़ा हुआ।

'अगर मुझे ज़रा भी पता होता कि आप आ रहे हैं तो मैं आपके लिए कुछ खाना बनाकर रखती,' वह कहने लगी। 'मैंने यह बहुत गलत किया कि इतनी देर बातों में उलझाये रही और अब खाली पेट वापस भेज रही हूँ।'

वह सीढ़ियों से नीचे उतरी और रमानी के साथ उसे कार तक पहुँचाने गई। उसने गाड़ी स्टार्ट की और अचानक पूछा, 'ड्राइव पर चलेंगी।'

'इस वक्त?'

'हाँ, क्यों नहीं?'

'आपको भूख नहीं लगी है?'

उसने भूख को ज्यादा महत्व न देने का भाव दिखाते हुए कहा, 'मेरे लिए इस वक्त भूख से ज्यादा जरूरी अपनी बहन को घुमाना है।'

'नहीं, अब मैं आपको ज्यादा तकलीफ नहीं दूँगी। आपने कुछ खा-पी लिया होता तो मैं खुशी से चल पड़ती।'

रमानी को उसकी यह भावना बहुत अच्छी लगी, लेकिन कहा, 'दरअसल मैं क्लब में काफी खा-पी आया हूँ और इससे ज्यादा कुछ खा भी नहीं पाऊँगा।'

'आपने इंजन क्यों बंद कर दिया।'

'गाड़ी चल ही नहीं रही।'

'अच्छा? कुछ खराबी है क्या?'

'इसे एक और सवारी चाहिए, तब यह खुशी से चलेगी', वह बोला।

यह मज़ाक सुनकर वह हँसी और पूछने लगी कि अगर दूसरी सवारी रात भर नहीं मिलेगी, तो भी यह इन्तज़ार करती रहेगी? उसने बड़े उत्साह से 'हाँ' में उत्तर दिया, और फिर कहा, 'मेरा सुझाव है कि पहले रेस कोर्स रोड का एक चक्कर लगाया जाय, फिर, अगर आप मान लें, तो नदी पर चला जाय। रात को कभी उसका नज़ारा देखा है?'

'तब बहुत सुंदर लगती है क्या?'

'खुद चलकर देख लीजिए,' वह बोला।

'आपको ज्यादा तकलीफ़ तो नहीं होगी?'

'बेवकूफी के सवाल मत कीजिए!'

वह अपना कमरा बंद करने ऊपर चली गई।

रमानी ने रूमाल निकालकर उसके बैठने के लिए बगल की सीट साफ की और उसका इन्तज़ार करने लगा। वह वापस आकर गाड़ी के पीछे का दरवाज़ा खोलने लगी, तो रमानी ने टोका, 'नहीं, वहाँ नहीं, यह आगे का दरवाज़ा खुला है।'

'मुझे पीछे की सीट पसंद है,' उसने कहा।

'हो सकता है, लेकिन जब तक आगे दो लोग नहीं बैठेंगे, इंजन स्टार्ट नहीं होगा। यहाँ मुझसे डर लगेगा क्या?'

'हरगिज़ नहीं', वह बोली और आगे की सीट पर बैठ गई। रमानी भी ड्राइवर की सीट पर बैठा और गाड़ी स्टार्ट कर दी। इंजन ने हमेशा की तरह लंबी-लंबी साँसें भरी, फूँ-फूँ और हा-हू किया और एक सुर में घुर्र-रे-र्र करने लगी। शांता बाई ने कहा, 'आसमान कितना साफ़ है और सितारे कैसे चमक रहे हैं! हवा कितनी ताजी है और मुँह पर कितनी अच्छी लग रही है!' यह कहकर उसने सिर को एक झटका दिया और लंबी साँस खींची।

'हाँ, बिलकुल,' रमानी ने उसकी बातों का हार्दिक समर्थन किया और पूछा, 'आपको चाँदनी रातें ज्यादा अच्छी लगती हैं या अँधेरी रातें?'—क्योंकि उसे लग रहा था कि अब कोई काव्यात्मक बात करनी चाहिए।

रात को दो बजे रमानी घर पहुँचा। उसने कम से कम शोर किये गाड़ी गैराज में रखी और दरवाज़ा तथा गैराज भी खुद ही खोले। इसके बाद, गैराज बंद करके भीतर कदम रखते हुए उसे अपने ऊपर गुस्सा भी आया, 'क्या मैं कोई चोर हूँ जो इस तरह अपने ही घर में घुस रहा हूँ?'—और दरवाज़े पर जोर से ठक-ठक करके आवाज़ दी, 'सावित्री, सावित्री...।' उसे

दस-बारह बार आवाज़ लगानी पड़ी, तब कहीं सावित्री उठकर बाहर आई।

रमानी के पीछे-पीछे उसके कमरे में जाते हुए सावित्री अभी भी अधनींदी थी; उसने पूछा, 'खाना खा लिया?' उसने उस पर एक तीखी नजर डाली और चिढ़ते हुए कहा, 'लगता है, तुम्हें नींद आ रही है और खाना नहीं परोस सकतीं। रसोइये को अभी नहीं भेजना था। आदमी को कभी-कभी देर भी हो जाती है, और वह डिनर के लिए लौटने की जल्दी नहीं कर सकता। रात को रसोइये को छुट्टी क्यों दे देती हो? तुमने उन्हें ज्यादा ही सुविधाएँ दे रखी हैं।'

सावित्री ने सिर झटककर नींद को भगाने की कोशिश की, किचेन की तरफ चली और वहाँ की लाइट जला दी।

रमानी को अब चिंता सताने लगी थी। शांता बाई को अब दफ्तर में एक महीना पूरा हो रहा था लेकिन बीमा करने के काम में वह कोई रुचि नहीं ले रही थी। हेड ऑफिस ने पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि उसे पहले दो महीनों में कितना काम लाकर दिखाना है, और इस शर्त पर वह अटल था। वहाँ से एक रिमांइडर भी आ चुका था। अगर दो महीने पूरे होने पर उसने उतना बीमा नहीं किया तो उसे हटा दिया जायेगा। रमानी ने सूची में यह देखने के लिए नज़र डाली कि दूसरे नंबर पर कौन है, तो गविपुरम की एक शारदम्मा का नाम सामने आया। क्या उसे बुलाना पड़ेगा? उसके लिए यह सोचना भी दुखदायी था। जब परेरा कमरे में आया तो उसने शांता बाई को भेजने के लिए कहा!

थोड़ी देर में शांता बाई वहाँ आकर खड़ी हो गई। 'बैठ जाइये,' रमानी ने कहा। 'अब आपको यहाँ काम करते एक महीना हो रहा है। आप क्या समझती हैं, दूसरा महीना पूरा होने पर आप दस हजार रुपए का बीमा कर पाने की शर्त पूरी कर सकेंगी?'

'उम्मीद तो करती हूँ। नहीं तो, मेरा ख्याल है कि मुझे हटा दिया जायेगा।'

'मैं मानता हूँ कि यह शर्त बहुत सही नहीं है, लेकिन क्या करूँ, हेड ऑफिस इस पर जोर देता है' वैसे दो महीने में दस हजार का बीमा ज्यादा भी नहीं है। मैं इसलिए चिंतित हूँ क्योंकि मुझे अभी वहाँ से एक रिमांइडर मिला है। मेरा ख्याल है कि आप दफ्तर का कागज़-पत्रों का काम छोड़कर प्रमुख एजेंट के साथ बाहर जाना शुरू करें। मैं दफ्तर में कहूँगा कि आपको कागज़ों का काम कम दिया जाय। बस, मुझे यही कहना है। थैंक यू!'

वह सिर झुकाये अपनी मेज़ पर वापस आ गईं। परेरा उसके पीछे आया और बोला, 'साहब ने कुछ परेशानी की बात कही?'

'हेड ऑफिस से रिमांइडर आया है', उसने निस्संकोच सब बात बता दी। 'इस शहर की औरतों को बीमे के लिए तैयार करना बहुत मुश्किल काम है! उनकी यह समझ में ही नहीं आता। बीमा नहीं होगा तो मुझे दफ्तर छोड़ना पड़ेगा'

'मैडम, मैं आपको एक सुझाव दूँ तो आप जरूर सफल होंगी। औरतों से मिलने की जगह आप उनके पतियों से मिलें तो ज्यादा सफलता मिलेगी।'

उसने अपनी मेज़ पर पड़े कुछ कागज उठाये और कहा, 'मि. कान्तंगार, ये कुछ कागज़ गलती से मेरी मेज़ पर आ गये लगते हैं। इन्हें ले जाइये।'

'मैडम, आपको आज से अकाउंट्स के बारे में भी कुछ सीखना है। इन कागज़ों में जो आँकड़े हैं, उन्हें चेक कर लीजिए।'

'मैं यह कुछ नहीं करूँगी। बॉस ने कहा है कि कुछ समय के लिए मुझे इन कामों से मुक्त कर दिया जायेगा।'

'कल तो मुझसे कहा था कि आपको अकाउंट्स का काम भी सिखाया जाये। अब आप जो ठीक समझें, करें। ये एजेंसियों द्वारा भेजे रोजमर्रा के आँकड़े हैं। अगर आप कर लेंगी तो आपका ही लाभ होगा। नहीं तो आप कल ये कागज़ मुझे वापस कर दें—लेकिन, आप इन्हें चेक करें या न करें, कल तक ये आपकी मेज पर ही रहेंगे। मैं आदेश की उपेक्षा नहीं कर सकता। थैंक यू।'

'कैसा शैतान है यह आदमी!' शांता बाई ने फुसफुसाकर परेरा से कहा।

क्लब से घर लौटते हुए रमानी दफ्तर के सामने रुका। रोज़ यहाँ आना उसकी आदत बनती जा रही थी। क्लब से सीधे घर जाना संभव ही नहीं होता था। क्लब की आदत बनकर उससे चिपक-सा गया था, शायद यह उसकी जरूरत भी थी—समय होने पर दफ्तर बंद करना ही पड़ता था। क्लब में आजकल उसने ब्रिज खेलना बहुत कम कर दिया था और बिलियर्ड की मेज के तो वह पास भी नहीं फटकता था। क्लब से वह जल्दी उठ जाता, ऑफिस का एक गैर जरूरी चक्कर लगाता, शांता बाई को घुमाता और दस बजे घर पहुँच जाता था।

आज शांता बाई का मूड उखड़ा हुआ था। दफ्तर में हुई घटना से वह परेशान थी। जैसे ही रमानी कमरे में घुसकर कुर्सी पर बैठा, वह बोली, 'कुछ हफ्ते बाद आपको मुझसे छुट्टी मिल जायेगी।' फिर उसने ग्रेटागार्बो की तरह अपने ओठ सिकोड़े और सिर को एक झटका दिया—नखरे वाली हीरोइन की तरह, जो संकट में आ फँसी है। अब रमानी को धीरज बँधाने वाले प्रेमी का रोल अदा करना था। वह उसके पास गया और धीरे से पीठ थपथपाई। लेकिन शांता बाई को चैन नहीं आया। वह भावी संकट के दृश्यों में डूबी हुई थी। 'मुझे पता है कि मेरा भाग्य क्या है और मैं इससे पीछे नहीं हटूँगी।'

रमानी ने उससे कहा कि वह किसी भी तरह हेडऑफिस को यह कठिन शर्त खत्म कर देने के लिए राज़ी करेगा।

'फिज़ूल की बातें मत करो,' वह बोली। 'मैं आपको अपने लिए कुछ विशेष नहीं करने दूँगी।'

उसने रमानी की बाँहों से अपने को छुड़ा लिया और कमरे में घूमने लगी। बोली, 'आप मेरे लिए कंपनी में मज़ाक के पात्र नहीं बनेंगे।' वह योजनापूर्वक, निश्चयपूर्वक और पूरी शक्ति के साथ टूट जाने की तैयारी कर रही थी—और रमानी इसे जानता भी था। वह दो दफा इसका अनुभव कर चुका था। वह इस तरह शुरू करेगी, फिर तकिये पर मुँह रखकर बैठ जायेगी और उसके रोने से पीठ हिलने लगेगी। फिर वह उठेगी, सिर झटककर अपने ऊपर काबू करेगी और हँसकर अपना मूड बदलने की कोशिश करेगी। रमानी को ये दृश्य बहुत

दुखी करते थे। टूट कर रोने की अपेक्षा बाद में अपने ऊपर काबू पाने के उसके वीरतापूर्ण प्रयत्नों से वह बहुत प्रभावित होता था। ऐसे दृश्य उसने पहले कभी नहीं देखे थे; उसकी पत्नी के मूड दूसरी तरह के होते थे। सावित्री को एक ही बात आती थी, कमरे में जाकर पड़े रहना और रोते रहना। वह अपने मूड पर विजय पाने की कोशिश नहीं करती थी। इसी कारण वह स्त्रियों की शिक्षा का पक्षपाती था, क्योंकि इसी से उनमें परिवर्तन आ सकता था। उसे शर्म आई कि वह अपनी पत्नी के बारे में इस तरह सोच रहा है। बेचारी हमेशा उसे प्रसन्न रखने की चेष्टा करती थी, घर चलाती थी। उसने अपने को समझाया कि वह उसकी बुराई नहीं कर रहा है, सिर्फ यह कह रहा है कि शिक्षा के द्वारा वह ज्यादा अच्छी बन सकती थी।

शांता बाई के टूटने का दृश्य समाप्त हो रहा था और वह सिर झटक कर हँस पड़ने की तैयारी कर रही थी, कि रमानी ने लपककर उसे अपनी बाँहों में भर लिया और साहस दिखाने को कहा। उसने अपने को रमानी की बाँहों से मुक्त कर लिया और कहा, ‘आज रात मैं सारी पृथ्वी पर चक्कर लगाती घूमती रहूँगी। आज मैं सोऊँगी नहीं। आज मैं चाहती हूँ कि सारे शहर में घूमती फिरूँ और नदी के किनारे जाकर बैठ जाऊँ। हँसती रहूँ और नाचती रहूँ। यही है मेरी जिंदगी का दर्शन। हँसो, जी भर, हँसो...यह फिल्म मैंने कई साल पहले देखी थी। हँसो, जी भर, हँसो—भले ही तुम्हारा दिल टूट-टूट कर बिखरता रहे—उसे डायलाग के सही शब्द याद नहीं आ रहे थे।

फिर वह अचानक बोली, ‘आज पिक्चर देखने जा सकते हैं?’ यह बात उसने पहली दफा कही थी, इसलिए रमानी एकदम स्तब्ध रह गया। उसने दोबारा और जोर से पूछा, ‘मैंने कहा कि क्या हम आज पिक्चर देखने जा सकते हैं?’

‘इसी रात?’ रमानी ने चिंतित होकर पूछा। दोनों की चर्चा तो होने ही लगी थी, अब उनको एक साथ...

‘हाँ, इसी रात। एक शब्द में जवाब दीजिए हाँ या ना?’

‘हाँ, हाँ, जरूर, जरूर...’, रमानी ने जल्दी से कहा। ‘मैं तो यही सोच रहा था कौन सी फिल्म चल रही है और वह देखने लायक भी है या नहीं। आज कौन सी पिक्चर लगी है?’

‘पिक्चर जो भी हो, मुझे देखना जरूर है। अगर आप साथ नहीं चलेंगे तो मैं अकेली चली जाऊँगी। अगर आप चलते हैं तो मैं आपको खाना भी खिलाऊँगी।’ कुछ देर बाद वह बोली, ‘आप शायद इसलिए नहीं चलना चाहते कि लोग क्या कहेंगे, आपकी पत्नी क्या सोचेगी...।’ लेकिन उसने इन सब संदेहों का जोर देकर खंडन किया। उसने वीरता दिखाते हुए कहा कि वह लोगों की परवाह नहीं करता, उसकी बीवी इस तरह की शिकायतें करती ही नहीं है और न वह उस पर हुक्म चला सकती है।

साढ़े नौ बजे तक वह इसी तरह की बातें करता रहा जिससे फिल्म का टाइम हो जाये और वे चुपचाप किसी सिनेमा हाल में जाकर बैठ जायें।

जब वे थिएटर पहुँचे तो शांता बाई ने पोस्टर देखकर कहा, ‘यह तो कोई बेकार सी हिन्दुस्तानी फिल्म हैं। मैं गार्बो या डीट्रिख की फिल्में देखने के लिए जान भी दे सकती हूँ।’

‘फिर क्या किया जाये?’

'चलिए, फिर यही सही।'अँधेरे हॉल में दोनों एक दूसरे के अगल-बगल बैठ गये और दिखाई जाने वाली फिल्म की फुसफुसाकर आलोचना करने लगे—यह रामायण की एक कहानी थी जिसमें वानरराज हनुमान अपनी पूँछ से लंका में आग लगाते हैं।

शांता बाई बोली, 'क्या वाहियात फिल्म है। हमारे लोग एक अच्छी फिल्म भी नहीं बना सकते। खराब फोटोग्राफी, भद्दी ऐक्टिंग और बदसूरत चेहरे। जब तक हमारे निर्माता पुराणों का पल्ला पकड़े रहेंगे, हमारी फिल्मों का उद्धार नहीं होगा..। चलिए, बहुत देख ली, बाहर निकलें। मैं और बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

रमानी उसके पीछे-पीछे बाहर निकल आया। गाड़ी में वह पूछने लगी, 'हम नदी पर नहीं चल सकते?'

'हाँ, क्यों नहीं,' रमानी ने उत्तर दिया।

'अभी दस बजे हैं। हम नदी के तट पर बैठें और सवेरे तक बैठे रहें।' यह कहकर वह हँसी जैसे यह कोई बड़ा मजाक हो।

रमानी भी आज्ञाकारी सेवक की तरह उसके साथ हँसा और गाड़ी नदी की तरफ मोड़ दी। गाड़ी चलाते वक्त वह उससे सिमट कर आ बैठी और कहने लगी, 'पहले शहर का एक चक्कर लगाते हैं, फिर नदी पर आयेंगे।' रमानी ने गाड़ी रोकी, उसे पीछे घुमाया और शहर की सड़कों पर उसे दौड़ाने लगा। 'आज मैं दरअसल पागल हो रही हूँ', वह कहने लगी 'आप माइंड तो नहीं कर रहे?'

'बिलकुल नहीं,' रमानी ने जवाब दिया।

शहर की प्रमुख सड़कों पर गाड़ी दौड़ा लेने के बाद रमानी ने पूछा, 'अब क्या करना है?'

'नदी पर चलेंगे, नदी पर...,' आज आपका पाला एक पागल औरत से पड़ा है।' फिर नदी किनारे घंटा भर बिता लेने के बाद उसने कमरे पर वापस लौटने की इच्छा जताई। रेस कोर्स रोड पर दफ्तर के सामने उतरकर वह बोली, 'आज मैं रात भर सो नहीं सकूँगी।...आप मेरे साथ आयेंगे? सारी रात हम बातें करते रहेंगे।'

'खुशी से आऊँगा,' रमानी ने कहा और उसके साथ कमरे में चला आया।

दूसरे दिन सवेरे पाँच बजे वह घर लौटा। सावित्री बरामदे में खड़ी दूध वाले को दूध दुहते देख रही थी। रमानी जब सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा, वह बोली, 'मैं रात भर परेशान रही।'

'अच्छा!' वह बोला।

'तुम कुछ खबर ही भेज देते। कहाँ थे सारी रात?'

उसने चिढ़कर कहा, 'जरा सा इन्तजार नहीं कर सकतीं। तुम चाहती हो कि मैं सड़क पर सबके सामने तुम्हें सफाई दूँ?' सावित्री पीछे हट गई और उसे भीतर जाने का रास्ता दे दिया।

वह दूध वाले को देखती रही, दूध की धारा सुर्र-सुर्र करके बर्तन में गिर रही थी। अचानक यह आवाज़ बंद हो गई, दूध वाले ने सिर उठाकर कहा, 'मालिक आज बड़े सवेरे बाहर चले गये...।' यह सुनते ही वह झल्ला उठी और कोई जवाब न देकर बात को खत्म

करना चाहा। लेकिन दूध वाला चुप रहने को तैयार नहीं था, बोला, 'लगता है, मालिक—

अब सावित्री ने जवाब दिया, 'हाँ, आज ये सवेरे ही किसी से मिलने गये थे।'

आठ बजे उसने कॉफी बनाई और इसे पति के कमरे में जाने का बहाना बनाया। कॉफी लेकर वह कमरे में घुसी, तब वह नहाकर निकला था और बाल काढ़ रहा था। उसने शीशे में सावित्री को देख लिया लेकिन दिखाया यह कि उसे देखा नहीं हैं। सावित्री ने शीशे में उसका चेहरा देखकर यह अनुमान लगाने की कोशिश की कि समझौते की गुंजाइश है या नहीं। वह सोचने लगी कि कॉफी मेज़ पर रखकर वापस चली जाय या अपना सवाल भी कर डाले। पिछले कई दिन से उसके मन में संदेह पनप रहे थे और वह बेहद परेशान हो उठी थी, और इस कारण वह खुद से भी चिढ़ने लगी थी। उसे रमानी पर गुस्सा भी आता था और उस पर गुस्सा करने के लिए अपने पर भी गुस्सा आता था। इस तरह उसकी सारी शक्ति खर्च हो जाती थी। अपने मन का यह बोझ उतारने के लिए वह कुछ भी देने को तैयार थी जिससे वह पति के प्रति संदेह मुक्त हो सके। इसके लिए रमानी का एक शब्द भी, गुस्से के बिना कहा एक ही शब्द, काफी था, फिर भले ही यह शब्द झूठ हो, शांतिदायक झूठ। कुत्सित विचारों के कारण उसकी आत्मा लहुलुहान होने लगी थी।

उसने कॉफी मेज़ पर रखी और बड़ी तन्मयता से बाल काढ़ रहे अपने पति का चेहरा देखा, और तय किया कि चुपचाप सहन करते रहना ही ठीक होगा, प्रश्न करने से कोई बात नहीं बनेगी। वह बाहर निकल रही थी, कि पीछे मुड़ी तो देखा कि पति तिरछी नजर से उसे देख रहा है। इसलिए उसकी तरफ घूमकर उसने पूछा, 'मैं जाऊँ?' रमानी अपने भीतर खोये रहने का नाटक कर रहा था। वह बोली, 'कॉफी मेज़ पर रख दी हैं', और बाहर निकल आई।

उसने देखा कि नौकरानी वहीं घूम रही है।

'तुम यहाँ क्या कर रही हो?' सावित्री ने पूछा। 'शायद तुम कुछ पूछने या मांगने की तैयारी कर रही हो, या शाम की छुट्टी करना चाहती हो। अगर शाम की छुट्टी करनी है तो तुम हमेशा के लिए छुट्टी कर सकती हो। तुम जैसी मुझे बीसियों मिल जायेंगी।'

'मालकिन, आप मुझ पर चिल्ला क्यों रही हैं? मैंने क्या किया है?'

'मैं चिल्लाना चाहूँ तो जरूर चिल्लाऊँगी। तुम पूछने वाली कौन होती हो? तुम्हें अच्छा नहीं लगता तो काम छोड़ दो।'

'मैडम एक ही बात कहना जानती है, काम छोड़ दो—हर बात पर यही कहती हैं। मैं तो सिर्फ यह पूछ रही थी कि घर जाऊँ?'

'इतनी जल्दी। सारा काम निबटा दिया?'

'जी, मैडम।'

'पीछे झाड़ू लगा दी?'

'जी, मैडम।'

'सारा घर साफ कर दिया? सब बर्तन साफ कर दिये? दरवाजे पर पड़ा गोबर फेंक दिया?'

'जी, मैडम, सब काम कर दिये हैं।'

'तुम इतनी जल्दी सब काम करती हो और घर जाने की रट लगाने लगती हो। घर, घर, हमेशा घर जाने की पड़ी रहती है। लेकिन हर जगह, हर कोने में धूल जमा रहती है। अब मेरी बात सुनो, तुम दस बजे से पहले कभी घर नहीं जाओगी, काम हो या न हो। समझ में आया? अगर न करना हो तो अभी जा सकती हो।'

नौकरानी एक बूढ़ी औरत थी जो कई साल से इस घर में काम कर रही थी, इसलिए अपनी मालकिन के सब तरह के व्यवहार से परिचित थी? सावित्री भीतर गई तो देखा, किचेन काफी गंदा है। रसोइये को घूरकर देखते हुए वह बोली, 'बैंगन इस तरह काटा जाता है?'

'बैंगन बहुत बड़े-बड़े थे...', रसोइये ने कहना शुरू किया।

'चुप रहो और हर गलती के लिए कोई न कोई बहाने बनाना बंद करो। इस घर में सब नाकारा, बेवकूफ और बरबादी करने वाले लोग आ जुटे हैं...।'

सावित्री हाल में पड़ी दरी पर जाकर बैठ गई। सुमति अपने कमरे से निकलकर आई और बोली, 'माँ! तुम जमीन पर क्यों बैठी हो?'

'और कहाँ बैठूँ? कहाँ है वह बेंच? जिस पर मैं थक जाती, तो लेटकर आराम कर लेती थी, इसलिए अब जमीन पर बैठने के सिवा क्या उपाय है? बेंच भी चली गई। इस घर में कुछ भी नहीं रहता। हर चीज़ दफ्तर भेज दी जाती है। जाओ और अपने पिता से कहो कि मुझे बेंच अभी वापिस चाहिए। वो अपने कमरे में हैं। जाओ और उनसे कह दो।'

सुमति हिचकिचाती वहीं खड़ी रही, और धीरे से बोली, 'माँ, तुम खुद जाकर क्यों नहीं कहतीं? मुझे डर लगता है।'

'डर! उनसे हर कोई डरता है।'

जब रमानी दफ्तर जाने से पहले खाने के लिए बैठा, तो वह मशीन की तरह उसे परोसती वहाँ घूमती रही। वह चुपचाप चावल की तरफ नजर गड़ाये खाना खाता रहा। अचानक उसके मन में रमानी के लिए दया हो आई, जिस शांति से वह बुरी तरह कटे बैंगन की सब्जी खाता रहा, उसे देखकर दया ही उत्पन्न होती थी। हो सकता है, गंगू ने झूठ बोला हो और उसकी कहानी स्कैंडल से ज्यादा कुछ न हो। बेचारा रात भर हिसाब-किताब के रजिस्टर ही देखता रहा हो, और अब बिना आराम किये और भारी खाना खाकर सख्त धूप में फिर दफ्तर जाने के लिए तैयार हो रहा हो...। और यह सब किसके लिए? उसने अफवाहों पर ध्यान दिया, यह सोचकर उसे अपने पर गुस्सा आने लगा। इतने साल एक साथ जिंदगी बिताने के बाद उस पर इस तरह इलज़ाम लगाना सही नहीं है। वह अपने बददिमाग की वजह से सबकी जिंदगी बर्बाद नहीं होने देगी। उसने तय किया कि अब कभी बेंच की बात नहीं करेगी। उसने शांति स्थापित करने का फैसला कर लिया। धीरे से पूछा, 'दही के साथ खाने के लिए थोड़ा सा चावल और दूँ?'

'नहीं,' वह बोला।

'बाबू को गणित में सौ में से साठ नंबर मिले हैं। पास होने वालों में चौथा नंबर है

उसका।'

इस खबर पर भी उसने कोई उत्साह नहीं दिखाया। वह फिर बोली, 'रंगून से कल मेरी बहन का खत आया था। वहाँ सब ठीक-ठाक है। लगता है, उसके पति की नौकरी पक्की हो गई है और बहन ने लिखा है कि कुछ ही दिनों में उसे आठवाँ बच्चा होने वाला है।'

'तुम्हारी बहन तुमसे बहुत आगे निकल गई', उसने खोखली आवाज़ में कहा।

सावित्री ने हँसने जैसी कुछ आवाज़ें निकालीं। हालांकि उसका कड़वापन अब खत्म हो गया था, पर थोड़ी कसक अभी बाकी थी। इस वक्त वह उससे कुछ हँसी-मज़ाक करता तो कितना अच्छा लगता। जो हो, कुछ मिनट पहले उसकी जो हालत थी, वह अब नहीं रही थी।

जब रमानी दफ्तर जाने को तैयार हो गया तो वह बरामदे की सीढ़ियों पर खड़ी थी। सिल्क के इस सूट में वह कितना आकर्षक लगता था! यह खालिस जलन ही होगी। जिसने गंगू वगैरह को उसके खिलाफ बातें करने को उकसाया है; उनके अपने पति सब चालबाज़ और मोटे हैं। उसने अपनी पूरी शक्ति इकट्ठी की और पूछा, 'आज रात भी देर से आओगे?' उसने गुस्से में भरकर सावित्री की ओर देखा। वह बोली, 'मेरा यह मतलब नहीं था...।'

'मैं बेवकूफी के सवाल सुनना नहीं चाहता। तुम सोचती हो कि मैं भी बाबू की उम्र का हूँ?' यह कहकर वह तेजी से गैराज की तरफ चल पड़ा।

दोपहर बाद गंगू चहकती हुई वहाँ आ गई। सावित्री हॉल में दरी पर लेटी पत्रिका पढ़ रही थी।

'यहाँ पहले बेंच पड़ी रहती थी जिस पर तुम आराम करती थीं, वह कहाँ चली गई? तुम जमीन पर क्यों लेटी हो?' गंगू ने आते ही सवाल किया और अनजाने में ही सावित्री के मन की परेशानी फिर से जगा दी।

'कुछ न कुछ तो होता ही रहता है,' सावित्री ने गोलमोल भाषा में उत्तर दिया जिससे सवाल को और ज्यादा हवा न मिले।

गंगू बोली, 'मैंने इसलिए पूछा क्योंकि इसके बिना हॉल बहुत खाली-सा लगता है। मुझे अपना घर बकवास लगा इसलिए मैंने सब चीजें उलट-पुलट कर दीं और यहाँ चली आई। कभी-कभी मेरा मूड भी ऐसा ही हो जाता है।'

'अच्छा, नाश्ता कर आई हो?'

'यही मैंने नहीं किया है। पति जब स्कूल जाने लगे, मैंने उनसे साफ़ कह दिया कि आज शाम को नाश्ता नहीं मिलेगा। अपना पेट कहीं होटल में भर आना।'

'और सब क्या खायेंगे?'

'अगर वे औरों के लिए भी कुछ नहीं लाते तो उन्हें फिर जाना पड़ेगा। यह वो अच्छी तरह जानते हैं।'

'और क्या खबरें हैं दुनिया की?' सावित्री ने पूछा।

'कोई खास नहीं है। तुमने तमिल की नई फिल्म देखी, पैलेस में चल रही है? उसके कुछ गाने बहुत अच्छे हैं, लेकिन हीरोइन का काम ज्यादा अच्छा नहीं—उससे अच्छा तो मैं

कर लेती।...और किसी दिन करूँगी भी—देखती रहो। मेरा ख्याल है, तुम्हारे पति भी गये थे।'

'क्या?'

'मुझसे दो-तीन सीट हटकर ही बैठे थे।'

सावित्री सोचने लगी कि वे दफ्तर में हिसाब-किताब का काम नहीं कर रहे थे... उसका ख्याल गलत था।

गंगू पूछने लगी, 'तुम्हें नहीं मालूम?'

'मैं उनसे नहीं पूछती कि कहाँ और क्यों जाते हैं...।'

'लेकिन उन्होंने बताया नहीं कि पिक्चर देखने जा रहे हैं?'

'मैं खुद न पूछूँ तो वे कुछ नहीं बताते और सवेरे वे इतने बिज़ी थे कि मैं उनसे एक भी बात नहीं कर सकी।'

सावित्री चाहती थी कि यह बात और आगे न बढ़े, इसलिए उसने एक नया सवाल छेड़ दिया, 'मैंने सुना है कि तुम अपने कुछ गानों की रिकार्डिंग करा रही हो?'

'हाँ, मेरे पति एक आदमी को जानते हैं जो किसी और को जानता है जो मद्रास की ग्रामोफोन कंपनी के कुछ लोगों को जानता है। बात काफी आगे बढ़ चुकी है। लेकिन अभी इसे गुप्त रखना है।'

सावित्री सोचने लगीः तो ये रातभर अकाउंट्स चेक नहीं कर रहे थे। हो सकता है, उन्हें सिनेमा में किसी से मिलने जाना हो। तभी गंगू बिना पूछे बोल पड़ी, 'यह मत सोचना कि मैं गप उड़ा रही हूँ और उनके साथ कोई और भी था। हो सकता है, यह वही हो जिसको लेकर शहर में अफ़वाहें फैल रही हैं। मैं तुम्हें बताना नहीं चाहती थी लेकिन फिर सोचा, बता ही क्यों न दूँ, क्योंकि इसमें हर्ज़ ही क्या है?'

सावित्री बैठी फर्श को घूर रही थी, वह बोल नहीं पा रही थी, बुखार-सा चढ़ रहा था। गंगू ने माफी माँगी, 'इतना मन पर मत लो इस बात को। मुझे पता होता कि तुम इतनी नादान हो तो यह बताती भी नहीं।'

सावित्री फिर भी चुप ही रही। लेकिन गंगू जैसी स्त्री को, जो इसकी अभ्यस्त नहीं थी, इससे बड़ी परेशानी हुई। वह सावित्री का मन बदलने के लिए फिल्म की अच्छाइयों और बुराइयों और ऐक्टिंग की चर्चा करने लगी। लेकिन सावित्री की नज़रें फर्श पर ही जमी रहीं। गंगू मानो खुद से ही बातें कर रही थी। अचानक सावित्री ने प्रश्न किया, 'वह देखने में कैसी थी?'

'कौन? हीरोइन? उन्हें चाहिए था—'

'फिल्म की हीरोइन नहीं, असली वाली...'

'अब उसे दफा करो। बेवकूफ की तरह उसी के बारे में मत सोचो। इससे कुछ नहीं हासिल होगा।'

'मुझे जानना है कि वह कैसी लगती है। मैंने तुमसे उसके बारे में नहीं पूछा था, तुमने खुद ही बताया। अब सब कुछ बता दो।'

'तुम्हारे जानने जैसी कोई बात नहीं है।'

'वह कैसी लगती है?'

'वह काफी बूढ़ी है, बदशक्ल, और कोई उसके पास जाना पसंद नहीं करेगा।'

सावित्री रोने लगी। 'मैं जानती हूँ, तुम झूठ बोल रही हो। वह बूढ़ी नहीं हो सकती। शायद मैं ही बूढ़ी और बदशक्ल हूँ। लेकिन मैं क्या करूँ? मैंने बच्चे जने हैं, घर का कामकाज किया है।'

'अरे नहीं, तुम तो बहुत प्यारी हो। सुंदर भी हो, तुम हरगिज़ बूढ़ी नहीं हो।'

सावित्री बोली, 'मेरी उम्र हो चली है। पुराने ढंग की हूँ मैं। लेकिन इसके लिए मैं क्या करूँ? वह जवान और सुंदर होगी। ये हफ्तों से आधी रात से पहले घर नहीं आते। कल तो रात भर नहीं आये, सवेरे आये और मुझसे बात तक नहीं की।' यह कहकर वह नाक छिनकने लगी। 'अब बच्चों की भी परवाह नहीं करते। मुझे सब कुछ बता दो।'

यह सुनकर गंगू खुद रोने लगी, फिर कुछ देर बाद गला साफ़ करके कहने लगी, 'मैं तुमसे कुछ नहीं छिपाऊँगी। ये थिएटर मैं ज्यादा देर नहीं रहे। उसने कुछ कहा और दोनों दस बजे ही बाहर चले गये।'

'लेकिन ये सवेरे से पहले घर नहीं आये', सावित्री ने जोड़ा।

फिर पूछा, 'क्या दोनों एक-दूसरे से सटे बैठे थे?'

'हां'

'वह मुझसे ज्यादा जवान और खूबसूरत है?'

'गोरी बहुत है, लेकिन आजकल हर कोई अपना रूप-रंग निखार सकता है।'

शाम को सावित्री शीशे के सामने जा खड़ी हुई। आँखें सूज गई थीं, नाक लाल थी। लड़कियाँ स्कूल से लौट आईं। कमला ने देखते ही पूछा, 'माँ, तुम्हारी आँखें इतनी लाल क्यों हैं? रो रही थीं क्या?'

'नहीं, मैं क्यों रोऊँगी। मैंने मिर्च के हाथ आँखों में लगा लिये होंगे। और मुझे तेज़ जुकाम भी है।'

'मैंने तो सोचा कि तुम रो रही हो...इससे मुझे बड़ा डर लगा। मुझे लगा कि पापा ने तुम्हें डाँटा होगा या कुछ और हुआ होगा। पापा जब तुम पर चिल्लाते हैं तो मुझे बहुत बुरा लगता है क्योंकि फिर तुम रोने लगती हो।'

'तुम्हारे पापा मुझे क्यों डाँटेंगे? वो तो बहुत अच्छे हैं। और मुझे भी तभी डाँटते हैं जब मैं कोई गलती कर देती हूँ। डाँटे बिना तो यह नहीं समझाया जा सकता कि क्या सही है और क्या गलत? पढ़ाने में भी तो बच्चों को छड़ी लगाई जाती है।'

सुमति बोली, 'मां, इसे रोज़ स्कूल में डांटा-फटकारा जाता है।'

'झूठ बोलती है। इसी को रोज़ फटकारें पड़ती हैं। आज टीचर ने मुझे चाक लाने बाहर भेजा तो मैंने देखा कि यह खड़ी थी, और किसी ने मुझे बताया कि टीचर ने इसे सारे पीरियड खड़ा रखा।'

सुमति चीखी, 'माँ, झूठ है यह।' फिर कमला की तरह मुड़कर बोली, 'मैं इसलिए खड़ी थी कि टीचर ने मुझे क्लास को डिक्टेशन देने को बोला था। मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ।'

फिर दोनों की आपस में सुलह हो गई और दोनों बाहर खेलने चली गईं। तभी बाबू स्कूल से लौटा। कहने लगा, 'माँ, मैं तब तक नाश्ता नहीं छुऊँगा जब तक तुम मुझे कल क्रिकेट की फीस देने का वादा नहीं कर देतीं। मुझे कैप्टेन को चार आने देने हैं।'

'ठीक है, पैसे ले लेना।'

'और मुझे कल एक नोट बुक भी चाहिए।'

'चार दिन पहले ही तो खरीदी थी...'

'हाँ, लेकिन वह पूरी भर गई है। नोट बुक भी हम ज्यादा नहीं खरीद सकते? मेरा दोस्त गोपाल है—उसे हर महीने एक दर्जन नोट बुक दी जाती हैं, और तुम दो के लिए भी भुनभुनाती हो।'

बाबू क्रिकेट खेलने चला गया तो सावित्री फिर शीशे के सामने जा खड़ी हुई। आँखों की सूजन कुछ कम हो गई थी। उसने बालों पर उँगलियाँ फेरीं, और सिर घुमाकर बगल से अपने को देखा। फिर अपने से पूछा, 'वह कैसी लगती है?...मैं भी तो ज्यादा बुरी नहीं हूँ...। वह ज्यादा खूबसूरत होगी...लेकिन मेरा चेहरा भी ऐसा बुरा नहीं है। बस, ये औरतें पाउडर और लिपस्टिक लगाकर इतराने लगती हैं। क्या इस सब के बिना उसका रंग मुझसे ज्यादा साफ़ है?' वह सवेरे देखे पति के नाक-नक्श की याद करने लगी, फिर सोचा, 'शायद मैं ही उनके लायक नहीं रही। मुझे मान लेना चाहिए कि अब मेरा रंग ज्यादा काला हो गया है और आँखों के नीचे काले निशान पड़ गये हैं। मेरे बाल भी सूखने लगे हैं और काढ़ने में भी दिक्कत होती है—उनकी गलती नहीं है कि मैं उन्हें पसंद नहीं आती।'

उसने बालों में खुशबूदार तेल लगाया और देर तक उन्हें काढ़ती रही। फिर खूबसूरती से उनका जूड़ा बनाया। साबुन से चेहरा धोकर उस पर हलका सा पाउडर लगाया। सालों से उसने खुशबूदार तेल और फेस पाउडर का इस्तेमाल बंद कर दिया था। अब शीशे के सामने खड़े होकर उसने भौंहों के बीच खुशबूदार पेस्ट लगाया और उस पर हलका-सा लाल रंग बड़ी सावधानी से लगा दिया, फिर छोटी उंगली से तराशकर उसे एकदम गोल बना दिया। माथे का टीका उसे हमेशा से ज़रा बड़ा ही पसंद आता था। वह शीशे के इतने पास जा खड़ी हुई कि नाक उससे चिपकी जा रही थी। अब उसे अपना रूप काफी ठीक दिख रहा था, सिवाय उन दो सफेद बालों के जो उसे अभी दिखाई पड़े थे, इन्हें उसने बड़ी सफाई से घुमाकर पास की लटों के नीचे छिपा दिया। उसकी साँस से शीशे पर भाप छा गई थी, इसे साफ करके उसने फिर अपने चेहरे पर नज़र डाली। हो सकता है, उसके गाल ज्यादा गुलाबी हों, और बाल भी ज्यादा मोटे और लंबे हों। 'दो गर्भपातों और तीन बच्चों को जन्म देने से पहले मेरे गाल भी खूब गुलाबी थे और बाल भी कमर तक आते थे। बगीचे में जाकर उसने कुछ चमेली और गुलाब के फूल तोड़े, उनका जूड़ा बनाया और सिर के पीछे बालों में गोल करके लगा लिया—उसे सफेद चमेली के बीच लाल फूल और गोलाई से लगाया गया जूड़ा ही ज्यादा पसंद था।

अब वह सोचने लगी कि क्यां शाम के लिए साड़ी भी नई निकालकर पहने, उसे नीली साड़ी ही ज्यादा पसंद आती है। लेकिन इतना सब करना ठीक नहीं होगा। घर पर ही इतना साज-शृंगार करना उसे अच्छा नहीं लग रहा था।

बच्चों ने डिनर कर लिया था। वे उसके चारों तरफ खड़े होकर सोचने लगे कि आज क्या खास बात है? शायद वह किसी शादी में जा रही हों। कमला ने कहा, 'माँ, आज तुमसे बड़ी खुशबू आ रही हैं!'

बाबू बोला, 'मुझे सेंट बिलकुल पसंद नहीं है।'

कमला पूछने लगी, 'माँ, तुम मेरे बाल भी ऐसे ही गोल-गोल बना दोगी?'

बाबू फिर बोला, 'मुझे बालों का इतना टाइट जूड़ा एकदम पंसद नहीं है। बाल थोड़े से कानों पर गिरने चाहिए।'

सावित्री बोली, 'तुम अपनी बीवी से कहना कि वैसे ही बाल बनाया करे।'

'माँ, बेकार बात मत करो। मैं तो शादी ही नहीं करूँगा।'

'जब तीनों बच्चे पढ़ने और सोने के लिए चले गये, सावित्री बैठी-बैठी सोचने लगी, क्या ये आज रात को भी नहीं आयेंगे? आज भी नहीं आये तो बर्दाश्त करना मुश्किल हो जायेगा; ये फूल और खुशबू भी बर्बाद हो जायेगी। वह अपने हाथ मरोड़ने लगी। एक बार फिर शीशे के सामने जा खड़ी हुई और सोचने लगी कि इस वक्त अगर मुझे देखें तो जरूर आकर्षित होंगे। वह चाहती थी कि जिस तरह शादी के बाद पहले हफ्ते में उन्होंने उसे जबरदस्त प्यार किया था, उसी तरह आज भी प्यार करें।...फिर अपने से ही बोली, 'नहीं, आज वे बाहर नहीं रहेंगे, इसलिए भी कि मैंने उनसे सवेरे पूछा भी था। वे बाहर से भले ही रूखे लगते हों लेकिन मेरी भावनाओं का बेहद ख्याल रखते हैं। और कहा क्या था उन्होंने? —कि 'मैं' बेवकूफी के सवालों का जवाब नहीं देता'—ठीक भी है, ऐसे सवाल का जवाब भी क्या हो सकता था? आदमी से यह पूछने का क्या मतलब है कि वह घर लौटेगा या नहीं? इसी वजह से उन्होंने मेरे सवाल का जवाब देने में वक्त बर्बाद नहीं किया।'

वह देर रात तक बैठी इन्तज़ार करती रही। जब बहुत थक गई, तो इस तरह तकिए पर हलके से सिर रखकर लेट गई कि जूड़ा खराब न हो, फूल न टूट जायें। वह कभी भी आ सकते थे और जैसी वह शाम को थी, उसी रूप से उससे मिलना चाहती थी—बिखरे हुए बाल और टूटे हुए फूल उसका चेहरा एकदम बिगाड़ दे सकते हैं। वह सपना देखने लगी कि उसके पति आ गये हैं, उन्होंने उसे बाँहों में भर लिया है और कसम खाकर कह रहे हैं कि जो लोग यह कहते हैं कि उनके साथ एक औरत थी, वे अंधे और बेवकूफ हैं, उनके साथ तो एक रंगीन छतरी ही थी...

सुबह हो गई। आज इतवार था और बच्चों के स्कूल की छुट्टी थी। घर में उनकी उपस्थिति सावित्री की उदासी कम कर रही थी। जब भी बच्चों की आवाजें बंद हो जातीं तो उसका दिमाग उसी बात पर लौट आता—कि वे नहीं आये, नहीं आये, अब वे मेरी परवाह नहीं करते...और वह मुझसे ज्यादा सुंदर है।

जब दोपहर हुई तो कमला पूछने लगी, ‘माँ, पापा को क्या हुआ है?’

‘वो काम से बाहर गये हैं। ऑफिस में उन्हें बहुत काम करना पड़ता है।’

‘उन्हें वहाँ भूख नहीं लगती, और नींद भी नहीं आती?’

‘नहीं, काम करते वक्त आदमियों को न भूख लगती है, न नींद आती है और घर भी याद नहीं आता।’

बाबू बोला, ‘जब मैं बड़ा हो जाऊँगा, तो बहुत बड़ा अफसर बनूँगा और दफ्तर में रहकर रात-दिन काम ही करता रहूँगा। मुझे दफ्तर बहुत अच्छा लगता है।’

‘फिर तुम्हारी बीवी और बच्चों का क्या होगा?’ सावित्री ने पूछा। बाबू ने चिढ़कर दाँत निकाल दिये और कहने लगा, ‘तुम हमेशा शादी की ही बातें क्यों करती रहती हो? मुझे इससे नफरत है। मैं कभी शादी नहीं करूँगा चाहे मुझे जिंदगी गँवानी पड़े।’

‘ठीक है, लेकिन तब मेरा क्या होगा?’ उसने पूछा। ‘तुम दफ्तर में रहने लगोगे तो मैं अकेली पड़ी रहूँगी?’

‘तुम! हाँ...।’

‘तुम मुझे तो भूल ही गये। मुझे तो सब भुला देते हैं। तुम बड़े हो जाओगे तो शायद मुझे पहचानोगे भी नहीं!’

इस पर बाबू ने कसम खाकर कहा कि वह हमेशा माँ का साथ देगा—जिससे सावित्री को काफी राहत मिली।

रात को नौ बजे रमानी की गाड़ी घर के सामने आकर खड़खड़ाई। बच्चे सोने चले गये थे, नौकर भी घर के किसी कोने में पड़कर सो गया था। सावित्री खुद बाहर आई और गैराज का दरवाज़ा खोला। रमानी ने गाड़ी रखी और चुपचाप अपने कमरे में चला गया। बच्चों के सो जाने के कारण घर में एकदम शांति छाई थी। सावित्री गुमसुम बनी काम कर रही थी। उसने तय किया था कि जब तक रमानी खाना नहीं खा लेता, वह एक शब्द नहीं बोलेगी। जब वह खा रहा था, वह वहीं बनी रही और नींद में भरा रसोइया खाना परोसता रहा। खाते-खाते उसने देखा कि सावित्री उसके सामने खड़ी है, तो वह रुककर पूछने लगा, ‘तुमने खाना खा लिया?’

‘हाँ’, उसने जवाब दिया। ‘तुम चाहते हो कि मैं बैठी-बैठी तुम्हारा इन्तजार करती रहूँ?’ उसे अपने इस रुख पर ताज्जुब भी हुआ। रमानी ने सिर उठाकर ऊपर देखा लेकिन कहा कुछ नहीं।

जब रसोइया सोने चला गया, तो उसने सामने का दरवाज़ा बंद किया, बत्तियाँ बुझाईं और बेडरूम में जाकर, गला साफ़ करके बोली, ‘अब यह खत्म हो जाना चाहिए। समझे!’ रमानी बिस्तर में जाकर लेट गया और उपन्यास पढ़ने का नाटक कर रहा था। उसने किताब नीचे की और त्यौरी चढ़ाकर बोला, ‘चुप रहो। जाकर सो जाओ।’

‘मैं तब तक यहाँ से नहीं हटूँगी जब तक तुम मुझसे वादा नहीं कर देते कि अब तुम सही व्यवहार करोगे।’ यह कहकर वह डटकर दरवाजे के सामने खड़ी हो गई।

‘चुप...इतने जोर से मत बोलो। बच्चे जग जायेंगे और पड़ोसी भी सुनेंगे,’ उसने कहा।

'अच्छा, बच्चों की बड़ी फिक्र हो रही है।'

रमानी उठ बैठा, वह समझ गया था कि सावित्री हिस्टीरिया में जाने के लिए अपनी सारी शक्ति एकत्र कर रही है, इसलिए उसने उसके हाथ पकड़कर पास खींचने की कोशिश की। लेकिन सावित्री ने झटककर अपना हाथ छुड़ा लिया और धक्का देकर चीखी, 'मुझे मत छूना।'

'क्यों? तुम्हें आज यह क्या हो रहा है, रानी! मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। क्या हुआ है तुम्हें?'

उसने दोबारा सावित्री को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन उसने फिर अपने हाथ छुड़ा लिये और लंबी साँस लेती हुई बोली, 'मैं भी मनुष्य हूँ। तुम पुरुष लोग कभी यह नहीं समझोगे। हमें तो तुम लोग खिलौना समझते हो जब मन किया सीने से लगा लिया, बाकी वक्त गुलाम हैं तुम्हारी। यह मत सोचना कि जरूरत पड़ने पर तुम हमारा इस्तेमाल कर सकते हो और इसके बाद लात मार कर बाहर कर सकते हो।'

रमानी कोशिश करता रहा कि हँसकर इस बात को टाल दें। 'ठीक है मेरी रानी मैं मंजूर करता हूँ कि तुम मनुष्य हो जो सोचता और महसूस करता है। ठीक है। अब सो जाओ। मुझे भी नींद आ रही है।'

उसकी मनाने की भावना क्षण भर के लिए सावित्री के मन को छू गई और उसकी बात मान लेने से संतुष्ट भी हुई; उसने उसे बाँहों में भरने की कोशिश की, यह भी उसे अच्छा लगा। वह फूटकर रो पड़ी और उसके बगल में जाकर बैठ गई। रमानी ने कहा, 'बस करो, अच्छी लड़की बन जाओ अब! आओ, लेट जाओ।' उसे लगा कि सब मुसीबतें खत्म हो गई हैं, और अब वह छोटी सी बात को इतना बड़ा बनाकर देखने के लिए अपने को दोष देने लगी।

कुछ देर इस तरह बनी रहने के बाद और रमानी की मान-मनौव्वल से उत्साहित होकर उसने सवाल किया, 'अब वादा करते हो कि उसके पास नहीं जाओगे?'

लेकिन आश्चर्य की यह घटना खत्म हो गई थी और रमानी के सहन की सीमा भी समाप्त हो रही थी; अब वह अपनी पुरानी आदत पर फिर लौट आया था। यह सवाल सुनकर वह झल्ला उठा, 'तुम मुझ पर हुक्म चलाओ, यह मुझे स्वीकार नहीं है।' सावित्री ने सवाल दोहराया तो वह सख्ती से बोला, 'बेवकूफ मत बनो।', उसकी आवाज़ में धमकी सुनकर वह अलग हो गई और बोली, 'तो तुम्हें इनकार है?'

'हाँ।'

'तुम इस रंडी को नहीं छोड़ोगे?'

'जबान सँभालकर बात करो।' उसका सिर गुस्से से भन्ना उठा।

'तुम मुझे और उसे एक साथ नहीं रख सकते। समझ लेना। मैं इसी वक्त घर छोड़कर जा रही हूँ।

'जो मर्जी हो, करो। लाइट बुझा दो। मैं सोना चाहता हूँ।' यह कहकर उसने दीवार की तरफ मुँह कर लिया।

उसने भड़ाक से दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ सुनी, मुड़कर देखा तो वह कमरे से

बाहर जा चुकी थी। उसके मन में जबरदस्त गुस्सा भरने लगा; नौकरों की तरह घर छोड़ने की धमकी देकर उसे नाक पकड़कर चलाने की कोशिश कर रही है। कृतघ्न कहीं की! जो कुछ उसके लिए किया है अब तक, वह सब भूल गई! जिन दिनों बैंक में बहुत कम पैसा था, उसकी इच्छा पूरी करने के लिए न जाने किस तरह जरी के काम की साड़ी और ब्लाउज़ खरीद कर दिये थे...और नाक के लिए हीरे से जड़ी... कृतघ्न!

वह बिस्तर से उठा और कमरे में आया। सावित्री हॉल में सो रहे तीनों बच्चों को जगा रही थी। वे बैठे आँखें मल रहे थे और समझ नहीं पा रहे थे कि क्या हो रहा है।

'इन्हें क्यों परेशान कर रही हो?'

'इन्हें भी साथ ले जा रही हूँ... '

'चुप रहो। इन्हें छोड़ो। पागल हो गई हो?' कमला रोने लगी थी। उसने सावित्री को खींचकर उनसे अलग करना चाहा, तो तीनों ने एक साथ रोना शुरू कर दिया। 'रोने की जरूरत नहीं है।' वह चीखा। 'एकदम चुप हो जाओ। कमला अगर मैंने तुम्हारी आवाज़ सुनी तो खाल उधेड़कर रख दूँगा। बाबू, सुमति, दोनों आँखें बंद करके लेट जाओ और मुँह बंद करो। एकदम सो जाओ। सुन रहे हो?'

बच्चे एकदम लेट गये और तकियों पर सिर रखकर आँखें कसकर बंद कर लीं। वे चुप रहने की कोशिश भी कर रहे थे लेकिन बीच-बीच में एकाध आवाज़ निकल ही जाती थी।

रमानी सावित्री की तरफ मुड़कर बोला, 'तुम मेरे धीरज का इम्तहान ले रही हो। यह क्या पागलपन है? जाकर सो जाओ। आखिरी बार कह रहा हूँ, जाकर सो जाओ...।' उसने हाथ पकड़कर सावित्री को बिस्तर पर ले जाने की कोशिश की।

'मुझे हाथ मत लगाना,' वह चीखकर बोली और छिटककर दूर हट गई। 'तुम गंदे हो...अशुद्ध। मैं अपनी चमड़ी को आग में जला लूँ तो भी तुम्हारे स्पर्श की गंदगी को नहीं धो सकती।' रमानी ने दाँत भींच लिये और हाथ उठाये। वह बोली, 'ठीक है। मारो मुझे। अब मुझे तुम्हारा डर नहीं रहा।' यह सुनकर उसने हाथ नीचे कर लिये और बोला, 'औरत, अब यहाँ से जाओ।'

'तुम सोचते हो कि मैं यहां रहूँगी? हम तुमसे खाना, घर और दूसरे आराम पाते हैं और उस पर निर्भर हैं। इसलिए तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारे घर में रहूँगी, तुम्हारी घर की हवा में साँस लूँगी, तुम्हारा पानी पियूँगी और तुम्हारे पैसों से खरीदा अन्न खाऊँगी? नहीं, मैं खुले आसमान के नीचे, उस छत के नीचे जिस पर सबका अधिकार है, भूखी मर जाऊँगी।'

'ठीक है। अपनी चीजें ले लो और इसी वक्त यहाँ से निकल जाओ।'

'चीजें? मेरा कुछ नहीं है इस दुनिया में। औरत के पास उसके बदन के अलावा अपना और क्या है? इसके अलावा सब कुछ उसके बाप का है, पति का है, बेटे का है। और यह सब भी लो...,' यह कहकर उसने अपनी हीरे की अँगूठी, नथ, नेकलेस, सोने की चूड़ियाँ, सब जेवर उतारे और उसके सामने फेंक दिये। अब बच्चो, उठो और मेरे साथ चलो,' यह कहकर उसने बच्चों के पास जाने की कोशिश की। रमानी ने रास्ता रोक लिया। 'इन्हें मत छूना, न बात करने की कोशिश करना। तुम जाना चाहो तो जा सकती हो। बच्चे मेरे हैं।' वह एक क्षण

ठिठकी, फिर बोली, 'हाँ, तुम ठीक कहते हो। बच्चे तुम्हारे हैं क्योंकि तुमने मिडवाइफ और नर्स को पैसा दिया है। तुम इनके कपड़ों और पढ़ाई का खर्चा देते हो। इसलिए तुम्हारा कहना ही ठीक है। मैंने पहले ही कहा था कि औरत का इस दुनिया में कुछ नहीं है। यह कहकर वह फूट-फूट कर रो उठी। बच्चे बिस्तर पर करवटें बदल रहे थे।' मेरे बाद इनका क्या होगा?'

'तुम चिन्ता मत करो। तुम्हारे बिना भी इनका पालन-पोषण होता रहेगा। दुनिया में कोई भी ऐसा नहीं है जिसके बिना काम न चले।'

हीरे और सोने के जेवर उसके पैरों के पास पड़े थे। उसने उन्हें उठा लिया। बोला, 'यह अंगूठी, नथ और नेकलेस तुम्हें मैंने नहीं दिये हैं। तुम्हारे पिता के हैं ये।'

वह पीछे हट गई। 'इन्हें भी रख लो। ये भी पुरुष के ही दिये हैं।'

रमानी ने कहा, 'मुझे नींद आ रही है। तुम्हें जाना हो तो निकलो, मैं दरवाजा बंद कर लूँ।'

उसने बच्चों पर एक नज़र डाली, उसे भी देखा, पीछे मुड़ी और दरवाज़ा बंद करके बाहर निकल आई।

फाटक पर पहुँचने से पहले उसने दरवाज़े में कुंडी लगाने की आवाज़ सुनी, उसने फाटक को ज़रा सा खोला, बाहर निकली और देखा कि हॉल की बत्ती बुझा दी गई है। 'बच्चे वहीं अँधेरे में मेरे बिना सोते रहेंगे?' एक क्षण खड़ी होकर वह पति के कमरे की रोशनी देखती रही, फिर वह भी बुझ गई। आधी रात हो रही थी। वह सड़क पर चलने लगी।

7

सुनसान पड़ी सड़कों पर चलते हुए सावित्री शहर की उत्तरी दिशा में करीब एक घंटे बाद नदी के किनारे जा पहुँची। सरयू मंद गति से लहराती अँधेरे में बही चली जा रही थी। कुछ हफ्ते बाद गर्मी की शुरुआत होनी थी, नदी में कई जगह पानी बहुत गहरा था, लेकिन कुछ ही दिन बाद यह धारा एक पतली सी लकीर में, जिसके चारों ओर रेत ही रेत फैली दिखाई देगी, बदल जानी थी।

उसका दिमाग सुन्न पड़ गया था। नहीं तो वह ऐन आधी रात शहर में अकेली क्यों घूम सकी। अब उसके लिए हर चीज़, हर बात, अपने बच्चे भी, बेमानी हो चुके थे। बच्चे आखिरकार उसके पति के ही थे, उसके नहीं...। लेकिन क्या वह दफ्तर नहीं जा सकती थी, जहाँ उस औरत को घसीट कर बाहर निकाल लेती और नाखूनों से उसका चेहरा लहूलुहान कर देती। फिर पति जब उसे इस हालत में देखता, नुचा हुआ चेहरा और उखड़े हुए बाल, तब का नज़ारा कितना मजेदार होता।

सावित्री नदी के जल में पैर डालकर किनारे बनी सीढ़ियों पर बैठ गई। 'यहाँ सब खत्म हो जायेगा', उसने सोचा, लेकिन यह विचार उसे बहुत अजीब सा लगा। इतना ज्यादा अजीब कि उसने अपने से ही पूछा, 'क्या मैं वही सावित्री हूँ या कोई और। कहीं यह सपना तो नहीं है? जरूर मैं कोई और हूँ जो सावित्री होने का नाटक कर रही हूँ, नहीं तो मुझमें पति का सामना करने की हिम्मत भी होती। मैंने आज तक ऐसा काम कभी नहीं किया। मुझे कभी हिम्मत नहीं हुई कि आधी रात सड़कों पर इस तरह अकेले घूमूँ। मुझे तो बिना किसी को साथ लिये घर से सौ कदम दूर भी जाना संभव नहीं लगता था; मुझे तो दुनिया की हर चीज़ से डर लगता था। डर तो जिंदगी का जरूरी हिस्सा है। पालने से श्मशान तक तो होता ही है, उसके बाद, दूसरी दुनिया में क्या होगा, इसका भी डर बना रहता है।

पति के गुस्से का डर, सवेरे से रात तक और पूरी रातों को भी, उसके लिए क्या-क्या करना जरूरी है, इन सब बातों का डर। कितनी रातों को मैं उनके बगल बिस्तर पर एक किनारे जरा सी जगह में इस तरह, घंटों तक बिना हिले, सोई हूँ कि मेरे हिलने से उनकी नींद में बाधा न पड़ जाय। शुरू की जिंदगी में अपने पिता, स्कूल में अध्यापकों और दूसरों का डर, फिर पति का, बच्चों का और पड़ोसियों का डर...दिल में बसे तरह-तरह के बहुत से डर, जब तक श्मशान में चिता नहीं जल जाती, और इसके बाद ये डर कि यमराज किन्हीं पापों के कारण उबलते तेल में मुझे डाल देगा—और मैंने आजतक कितने सारे पाप किये हैं?—

ज्यादा नहीं, और पूजा भी हमेशा नियमित रूप से की है। मैंने जिंदगी में कभी झूठ नहीं बोला है—बचपन की कुछ बातों को छोड़कर। हां, अपनी बहन के साथ मैंने बोतल का सारा शहद खत्म कर दिया था और कहा था कि मुझे कुछ पता नहीं शहद का क्या हुआ। और उस झगड़े के बाद जब मैंने कह दिया था कि भाई ने शीशे की चिमनी में गेंद मारी है। फिर बेचारा चुपचाप सब मुसीबत सहता रहा, और हम पर हाथ इसलिए नहीं उठाया कि हम लड़कियाँ हैं। उसे देखे युग बीत गये, तामुर की उस बददिमाग़ लड़की से शादी करने के बाद वह एकदम बदल गया... परिवार के हर व्यक्ति से दूर, हैदराबाद में, वह कोल्हू के बैल की तरह जिंदगी बिता रहा है। सालों बीत गए, उसने किसी को खत नहीं लिखा, शायद अपनी बहनों को भूल ही गया है, और अब उसके एक दर्जन बच्चे तो जरूर होंगे।

सावित्री की तीव्र इच्छा हुई कि अपने भाई और माता-पिता से मिले। क्या यह ठीक नहीं होगा कि एक बार सबसे मिल ले, फिर मरने की सोचे? किसी के लिए भी अपने माता-पिता, और भाई-बहनों के सिवा इनसे ज्यादा प्यार देने वाला और कौन होता है?—पति इतना प्यार नहीं देता जितना माता-पिता देते हैं, उन्हीं का प्यार सबसे सच्चा होता है, अपने बच्चों का भी नहीं...। बाबू को नौकरी मिल जायेगी, तो वह दफ्तर में ही समय बितायेगा। और घर से दूर रहेगा। सुमति और कमला शादी करके अपने घर बसा लेंगी और अपने बाल-बच्चों में डूब जायेंगी, और अपनी माँ के बारे में तभी सोचेंगी जब कोई दूसरा काम करने को नहीं होगा।

'मुझे रंगून जाकर अपनी बहन से मिलना चाहिए। अच्छा होगा कि मैं पहले सबसे मिल लूँ, और सबसे आखिर मैं रंगून जाऊँगी और वहाँ से लौटते हुए समुद्र में ही कूद जाऊँगी। ये दोनों पति-पत्नी कितने अच्छे हैं, आपस में कभी झगड़ा नहीं होता, जिंदगी बहुत संतुलित है। वह बचपन से ही भाग्यवान रही है। उसे कभी डांट-फटकार नहीं पड़ती थी, मिठाई और पेंसिलें उसे ही सबसे पहले दी जाती थीं, और पिताजी के मित्र भी उसे ही पहले प्यार करते थे, और शादी में भी भाग्य ने उसी का साथ दिया। शायद यह सही है कि हरेक को उसके अनुरूप ही पति प्राप्त होता है।'

अब वह अपने पति के बारे में सोचने लगी। बेचारा, इतना बुरा आदमी नहीं है, दरअसल इस रंडी ने उसका दिमाग खराब कर दिया है—(क्या वह सचमुच इतनी सुंदर है कि आदमी अपना आपा खो बैठे?) पति ने शादी के बाद पाँचवें दिन जब दोनों की पहली दफा ऊपर वाले एकांत कमरे में बात हुई थी, यह नहीं कहा था कि मुझे देखते ही उसने मुझसे शादी करने का फैसला कर लिया था, और अगर न कर पाता तो आत्महत्या कर लेता? उसने शुरू के दिनों में लिखे गये अपने हर खत में क्या यह नहीं लिखा था कि मेरे जैसा गोरा रंग उसने आज तक किसी का भी नहीं देखा, न ऐसी आँखें, बाल या गाल ही देखे हैं। काश, उसने ये खत सँभालकर रखे होते! वह ये खत उसी पर फेंक कर कहती...। दफ्तर वाली औरत सचमुच बहुत खूबसूरत होगी! मैं उन दिनों वाली सावित्री अब नहीं रही। उसे भी मेरी तरह तीन बच्चे और दो गर्भपात हो जायें तो उसकी भी यही हालत हो जायेगी, मेरे सिवा और कोई इस सबके बाद भी इतनी खूबसूरती बनाये रख सकता है! कल से पहले शीशा देखकर

मुझे इतनी परेशानी नहीं होती थी। शादी के वक्त मैं जैसी थी, वैसी ही इन दिनों भी थी, लेकिन गलती तो पति की थी, वह घर आकर मुझे देख तो लेता। सब मेकअप और फूल बेकार गये। मेरी गलती नहीं कि वह एक दिन बाद आया और तब मुझे देखा।'

तहसील दफ्तर का घंटा बजना शुरू हुआ, और शांत वातावरण में उसकी आवाज़ सुनाई देने लगी। सावित्री गिनने लगी—एक, दो, तीन...। 'यह घंटा मैंने पहले कभी नहीं सुना, इस वक्त तो हमेशा मैं सोई होती थी। वैसे हमेशा तो नहीं, क्योंकि जब बाबू को चेचक निकली थी और सुमति को टायफ़ायड हुआ था, तब भी कई रात जगकर उसने ये घंटे सुने थे। तब भी जब पति को सिर दर्द हुआ था। तब कितनी रातों को मैं रात भर बैठकर उनका सिर दबाती रहती थी। अब अगर उन्हें सिर दर्द हो तो यह औरत उनका सिर दबायेगी? लोग इन बातों को कैसे भूल जाते हैं? कह दिया, 'निकल जाओ, मुझे नींद आ रही है।'

अब तीन बजे हैं, घंटे भर बाद चार बजेंगे, फिर पाँच, फिर छह, और लोग आकर उसे घर ले जायेंगे या पागल कहकर पागलखाने में डाल देंगे। इस तरह इधर-उधर की बातें सोचते हुए नदी किनारे बैठकर वक्त बरबाद करने से क्या फायदा? जो स्त्री अपने ढंग से जिंदगी नहीं बिता सकती, उसे इस दुनिया में रहने का अधिकार नहीं है। 'अगर मैं गाड़ी पर बैठकर माता-पिता के घर चली जाऊँ तो मुझे पिताजी की पैंशन पर निर्भर रहना पड़ेगा। अपने घर जाती हूँ तो पति के पैसों पर जिंदगी कटेगी, इसके बाद बाबू के सहारे। मैं अपने आप क्या कर सकती हूँ? भीख माँगकर ही पेट भर सकता है। अगर मैं कालेज जाकर पढ़ाई कर लेती तो स्कूल में टीचर या कुछ और बन सकती थी। पढ़ाई पूरी न करके मैंने बड़ी गलती की। सुमति और कमला को बी.ए. जरूर कर लेना चाहिए जिससे शादी का सहारा न ढूँढ़ना पड़े। वेश्या और शादीशुदा औरत में फ़र्क ही क्या है?—सिर्फ यह कि वेश्या आदमी बदलती रहती है और बीवी एक से ही चिपकी रहती है। दोनों अपनी रोटी और सहारे के लिए आदमी पर ही निर्भर हैं। कमला और सुमति दोनों को स्वतंत्र रहने के लिए यूनिवर्सिटी की पढ़ाई जरूर करनी चाहिए।' यह सोचकर वह खुद पर ही हँसने लगी, कि अपनी बेटियों के लिए योजना बना रही है। ये कौन हैं—उसके पति की बेटियाँ हैं, उसकी नहीं। उसने साफ़ कह दिया कि उन्हें इस दुनिया में लाने का खर्चा उसी ने किया है और पालन-पोषण भी वही करता है।

जो भी औरत अपने सहारे रह नहीं सकती, उसे दुनिया में रहने का कोई अधिकार नहीं है। तीन बज गये हैं, अब चार बजेंगे, फिर पाँच...और लोग आकर उसे घसीट ले जायेंगे।

वह उठी और सीढ़ियों से उतरी। सिर्फ एक, आखिरी सीढ़ी, बाकी थी, जो जल के भीतर थी और काई से चिकनी हो गई थी; इससे उतरकर उसके पैर रेत पर आ गये, और आगे पानी कूल्हे तक आया, फिर छातियों तक, और पीछे से बहकर आता पानी उसे धक्के देने लगा। जल में खड़े होकर उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि बच्चों की रक्षा करे...'यमराज की अदालत में मुझसे पूछा जायेगा कि तुमने पति को उलटकर जवाब क्यों दिया और उसकी आज्ञा क्यों नहीं मानी—लेकिन मैं कर भी क्या सकती थी?...क्या कर सकती थी?...नहीं, नहीं, मैं मर नहीं सकती। मुझे घर लौट जाना चाहिए' जब पानी उसकी नाक तक आ गया, तब उसे घुटन-सी महसूस हुई—लेकिन किसी ने पीछे से उसके पैर पकड़ लिये और उलट

दिया।

8

चोरी करना मारी का मुख्य धंधा नहीं था। वह सक्कर गाँव में ताले ठीक करता था, छातों की मरम्मत करता था और जरूरत पड़ने पर लोहार का काम भी कर लेता था। यह गाँव नदी पार के किनारे से करीब दो मील दूर था। वह चोरी करता था, इसके कारण कई थेः उसके स्वभाव में शिकार करना शामिल था जो शायद उसे अपने खून में पुरखों से प्राप्त हुआ था, इसलिए घर में घुसना उसे अच्छा लगता था; साहस के कार्यों से होने वाले लाभ उसे आकृष्ट करते थे; और मुख्यतः अपनी पत्नी को प्रसन्न करने के लिए वह ऐसे काम करता था। वह अपनी पत्नी को बहुत चाहता था, उसके जीवन में एक अभिलाषा यह थी कि काँसे के एक बर्तन में सिक्के और सोना भर के घर के पीछे उग आये नारियल के पेड़ के पास गाड़ दे। लोहा पीटने से उनकी आय तो पर्याप्त हो जाती थी, लेकिन यह ज्यादा नहीं होती थी, और अगर आप काम की कीमत बढ़ा दें तो ग्राहकों के दूसरे गाँव चले जाने का भय होता था; और न बढ़ायें तो आय उतनी ही बनी रहती थी—जिससे बीवी नाखुश और झगड़ालू हो जाती थी। मारी शराब के नशे में होता तो बीवी को दौड़ाता और उस पर चीजें फेंकता था—फिर भी वह उसका बहुत ख्याल रखता था।

महीने में एक बार मारी नदी पारकर मालगुडी जाता और 'ताले बनवा लो, छातों की मरम्मत करा लो' की आवाज़ लगाकर सड़कों पर घूमता रहता था। इस दौरे में अगर उसे किसी घर में ताला लगा दिखाई देता तो वह आधी रात को उसमें जा घुसता और चाँदी के बर्तन और दूसरी कीमती सामान उड़ा लेता था।

इस दिन वह शहर में ही था। यह उसके लिए काफी बुरा दिन साबित हुआ था क्योंकि सारे दिन 'ताले बनवा लो, छतरियाँ ठीक करवा लो की आवाजें लगा कर गला सुखा डालने के बाद भी उसे एक ही लेकिन बड़े कंजूस आदमी ने कुछ काम दिया था, और छतरी में एक बिलकुल नई तीली डालने के बाद भी जो उसे एक आने से ज्यादा देने को तैयार नहीं हुआ था—इसके वह छह पैसे माँग रहा था। मारी को छह पैसे की सख्त जरूरत थी, इसलिए उसने काम भी किया, लेकिन कम पैसे मिलने पर उसने छतरी में कुछ और भी कर दिया—उसने उसकी एक तीली टेढ़ी कर दी जिससे जरा सी तेज़ हवा चलने पर वह चटककर टूट जाय और कंजूस को सही पैसे न देने की सज़ा मिल जाय।

उसे जो बात सबसे ज्यादा परेशान करती थी, वह थी कि लौटने पर उसकी बीवी उम्मीद करती थी कि वह जेब में पैसा भरकर आयेगा। पहले के दिनों में शहर में दिनभर में

एक रुपए की कमाई हो जाती थी, लेकिन अब उसकी समझ में नहीं आता था कि लोगों के छाते टूटते क्यों नहीं है। वे दिन बीच चुके थे जब ताले और चाभियाँ कीमती चीजें हुआ करते थे, अब ताले की चाभी खो जाय तो लोग नई चाभी बनवाने की जगह छह पैसे में नया 'मेड इन जापान' ताला ही खरीद लेते थे।

मारी ने भीड़-भाड़ वाली मार्केट रोड, विनायक मुदाली और ग्रोव स्ट्रीट से लॉली एक्सटेंशन का रुख किया, कि वहाँ कुछ काम मिल जायेगा। यहाँ उसने और जगहों की तुलना में ज्यादा जोर की आवाजें लगाईं क्योंकि यहाँ घरों के आगे बड़े-बड़े मैदान थे और उसकी आवाज को ये मैदान, दरवाजे वगैरह पार कर भीतर घरों में पहुँचना भी जरूरी था। लेकिन उसकी यह यात्रा भी बेकार साबित हुई। मारी ने मन में सोचा कि यहाँ वह चाहे जितना चीखे, कि उसके गले से खून गिरने लगे, लेकिन कोई उसे एक पैसा नहीं देगा।

वह अपने भाग्य को बुरा-भला कहता फोर्थ क्रास रोड से गुजर रहा था कि उसे एक मकान में ताला लगा दिखाई दिया। उसने चाल धीमी की, मकान को ध्यान से देखा, सड़क पर इधर से उधर एक चक्कर लगाया और वहाँ से चला आया। मार्केट रोड पर जाते हुए वह एक धुन गुनगुना रहा था। अब उसकी जेब में दो पैसे ही हों, तो भी उसे कोई परवाह नहीं थी।

मार्केट रोड के फाटक पर एक बुढ़िया बोरा बिछाये भुनी मूँगफली बेच रही थी; रंगीन चाकलेट, ककड़ी के टुकड़े और खाने की और भी छोटी-मोटी चीजें वहाँ रखी थीं। मारी ने औजारों की अपनी पोटली वहीं रख दी और बुढ़िया के सामने बैठ गया।

बुढ़िया चिल्लाकर बोली, 'रास्ता छोड़ दो।'

मारी उसके पास और सरक आया और बोला, 'अरे अम्मा, अब तुम्हें दिखाई भी नहीं पड़ता...मैं मारी हूँ।'

बुढ़िया हँसी और कहने लगी, 'इस वक्त मुझे साफ़ दिखाई नहीं देता कि कौन आया है। लेकिन सारे दिन यही लगा रहता है, लोग आते हैं और यहीं बैठ जाते हैं...मैं चिल्लाते-चिल्लाते थक जाती हूँ।' उसने माचिस जलाई और टीन की डिब्बी में से झाँकती बत्ती में लगा दी। फिर उसने डिब्बी एक उलटकर रखी टोकरी के ऊपर जमा दी—उसकी हिलती-डुलती लौ से आसपास रोशनी हो गई। 'अब मैं कुछ-कुछ देख सकती हूँ, बेटा। तुम शहर कब आये और मेरे पास इतनी देर से क्यों आ रहे हो?'

'यहाँ आकर खरीद-फरोख्त करने से पहले मुझे कुछ कमाई करना जरूरी नहीं है क्या! अच्छा, मुझे ज़रा सा कुछ खाने को नहीं दोगी...अभी पैसे दिये बिना?'

'मैं क्या करूँ...इतनी गरीब हूँ कि एक-एक पैसा जोड़ना पड़ता है।'

'तुम लोमड़ी की तरह चालाक हो। अब तुमने काफी पैसा कमा लिया होगा, जिसमें नमक डालकर अचार बनाने के लिए कहीं रख दिया होगा। मैं सब जानता हूँ तुम्हारे दिन तो खत्म हो रहे हैं लेकिन लालच नहीं गया है। तुम अपना पैसा मेरे जैसे गरीबों को क्यों नहीं बाँट देतीं?'

इस तरह हँसी-मजाक करके मारी काम की बात पर आया। काफी सौदेबाजी के बाद उसने तीन पैसे की मूँगफली, एक पैसे का ककड़ी का एक टेढ़ा सा टुकड़ा और दो पैसे की

कुछ तली हुई चीज़ खरीदी, और बड़े ध्यान से धीरे-धीरे खाने लगा। खत्म करने के बाद बोला, 'पेट में आग की तरह भूख लगी है और इससे उसका एक कोना ही भरा है।'

'तो कुछ और खरीद लो। टोकरी में कुछ अच्छी चीज़ें भी हैं।'

'लालच दे रही हो। अच्छा, लेकिन पैसे कल दूँगा।'

'मैं उधार का काम नहीं करती', बुढ़िया ने साफ़ कह दिया। मारी उठकर मार्केट स्क्वायर पर बने फव्वारे पर गया और ओक में लेकर पानी पिया। 'अब ठीक लग रहा है', यह कहता हुआ वह बुढ़िया के पास लौट आया।' अम्मा, मुझे ज़रा सा तंबाकू और पान का टुकड़ा तो दो। ईश्वर तुम्हें स्वर्ग में जगह देगा। मैंने तुम्हें सब पैसा दे दिया है। अब कुछ नहीं बचा है। अभी तंबाकू नहीं मिला तो मैं पागल हो जाऊँगा।'

बुढ़िया ने एक चिकटी हुई कपड़े की थैली जेब से निकाली, और लैंप की धुँधुआती रोशनी में ध्यान से देखकर उसमें से तंबाकू के कुछ पत्ते और पान का एक तुड़ा-मुड़ा टुकड़ा निकाला और मारी की तरफ दोनों को फेंक दिया। बोली, 'तुम्हारे जैसा शैतान भगवान ने दूसरा नहीं बनाया। दो पैसे की चीजें खरीदीं और तीन पैसे की मुफ़्त झटक लीं।'

मारी बोला, 'अगर मेरे पास एक पैसा भी बचा हो तो मैं कोढ़ी हो जाऊँ', यह कहकर उसने पान-तंबाकू अपने मुँह में रख लिये। फिर अपना औजारों का थैला उठाया और चलने लगा। आगे जाकर सड़क पार की और मार्केट रोड पर बने विशाल रेस्ट हाउस में घुसकर बरामदे में लेट गया। तंबाकू और पान चबाने से उसके बदन में जान आने लगी थी, आँखें बंद करके कुछ देर इसका मजा लिया, फिर सो गया।

आधी रात हुई तो वह उठा। मार्केट रोड सुनसान पड़ी थी। देर से बंद होने वाली दुकानों पर बत्तियाँ झिलमिला रही थीं। सिनेमाघरों के आखिरी शो खत्म हो गये थे और सड़क पर कोई नहीं था। मारी ने चारों तरफ नज़र घुमाई, बहुत सारे लोग, यात्री, साधु-संन्यासी वगैरह इधर-उधर पड़े गहरी नींद में सो रहे थे; कुछ लोग किन्हीं कोनों में धीरे-धीरे बात कर रहे थे, दो-तीन जगह एक-दो लोग मिट्टी के पाइप में अफीम पी रहे थे, उसकी लौ ऊपर से दिखाई दे रही थी।

मारी सतर्क होकर सड़क पर चलने लगा। मुख्य मार्ग को उसने छोड़ दिया और गलियों के रास्ते होता हुआ लॉली एक्सटेंशन पहुँच गया।

यहाँ भी उसे लंबी चौड़ी सड़क पर नहीं चलना था, क्योंकि इस पर पुलिस के सिपाही रात को गश्त लगाते थे और उनकी नजर से बच पाना आसान काम नहीं था। मारी एक कम रोशनी वाली गंदी-सी गली में कान लगाये चलने लगा, जिससे पुलिस के बूटों की आवाज़ सुनाई दे जाय। जब भी आवाज़ सुनाई देती, वह साँस रोककर पास की दीवार से चिपक जाता। सिपाही गली के छोर पर प्रकट होता, नीचे जमीन पर नजरें डालता सीटी बजाता और 'कौन हो...रुक जाओ, भागो नहीं, रुको' कहता आगे निकल जाता।

मारी फोर्थ क्रास रोड पर बने बंगले के फाटक पर जा खड़ा हुआ, ऊपर-नीचे नजर डाली और कम्पाउंड की दीवार को फाँद कर भीतर पहुँच गया। फिर दरवाजे पर लगे ताले को देखा और औजार निकालने के लिए जमीन पर बैठ गया। एक चाभी निकालकर ताले में

डाली, और उसे बाहर निकालकर लोहे की रेती से इधर-उधर घिसा और ताले में डालकर देखा। इस तरह चार-पाँच दफा घिसने के बाद चाभी उसमें लग गई, और ताला खटाक से खुल गया। मारी ताला तोड़ने में विश्वास नहीं करता था, इससे एकदम शक हो जाता और चोर की तलाश शुरू हो जाती। वह सही चाभी बनाकर ताले को खोलता और काम पूरा हो जाने के बाद उसे पहले की तरह बंद करके ही घर छोड़ता था। उसका मानना था कि मकान के अनुपस्थित मालिक से इतना सद्व्यवहार तो करना ही चाहिए।

मारी घर में घुसा, दरवाज़ा भीतर से बंद किया। माचिस जलाकर चारों तरफ नजर डाली। वह एक बड़े से कमरे में खड़ा था। उसमें मेज़-कुर्सियां पड़ी थीं और पीछे एक स्टूल पर रखी ट्रे में एक अधचबाया पान पड़ा था। पान की पत्ती और सुपारी सूखकर कड़क हो गये थे, जिससे उसने अनुमान लगाया कि यहाँ के लोग तीन दिन से बाहर हैं। उसने पान-सुपारी थैले में रख लिये और ट्रे का जायज़ा लिया—जो निकल की लगती थी। उसने वापस रख दिया—इतनी मामूली चीज़ के लिए वह यह उद्योग नहीं कर रहा था।

फिर उसने अलमारियां और शेल्फ़ खोल-खोल कर देखने शुरू किये—इनमें ज्यादातर किताबें और कपड़े ही भरे थे—यानी इन लोगों के पास चाँदी की चीजें नहीं थी और थीं तो ये उन्हें सँभालकर लोहे की तिजोरियों में बंद करके ही रखते थे।

अब वह पूजा घर की तरफ गया। यहाँ उसे चाँदी की छोटी-मोटी चीजें मिल सकती थीं—देवी-देवताओं की छोटी-छोटी मूर्तियाँ, धूप दानियाँ वगैरह। उधर जाते हुए उसने किचेन में भी एक नजर डाली। यहाँ अलमारी में सब बर्तन खाली पड़े थे, सिर्फ एक में ज़रा सी छाछ पड़ी थी जो बिलकुल खट्टी हो चुकी थी। एक कागज में डबलरोटी लिपटी रखी थी, जो बिलकुल सूख चुकी थी। इसे देखकर उसे खुशी हुई, यहाँ से वह कम-से-कम भूखा तो नहीं निकलेगा। कंजूस बुढ़िया के यहाँ खाये मूँगफली के दानों से उसका कुछ नहीं हुआ था। उसने डबलरोटी मुँह में डाली तो उसके मसूढ़े और मुँह के ऊपर का हिस्सा छिलने लगे। उसने रोटी खट्टी छाछ में डालकर मुलायम की और धीरे-धीरे खा गया।

पेट भरने से संतुष्ट होकर वह पूजा घर में गया। उसे आशा थी कि कम से कम आधा इंच की देवता की मूर्ति जरूर मिलेगी, जिसकी कीमत डेढ़ रुपए से ज्यादा तो नहीं होगी, लेकिन कुछ भी नहीं से इतनी भी काफी होगी और उसकी बीवी इसी से खुश हो जायेगी।

सारी दुनिया में ये बड़े घरवाले चालाक भी बहुत होते हैं, देवताओं की बड़ी मूर्तियाँ और पूजा की अच्छी चीज़ें वे बहुत छिपाकर रखते हैं जिससे किसी के हाथ न लग जायें। देवी-देवताओं की मूर्तियों को तालों में बंद करके रखना भी क्या कोई अच्छी बात है?

इसी वक्त अँधेरे में पीछे से ऐसी आवाज़ें आई जैसे कोई छप्पर गिर रहा है। मारी बिलकुल चुप होकर खड़ा हो गया, मुँह में रखी रोटी भी चबानी बंद कर दी। फिर उसे किसी की कराहें सुनाई दीं और किसी को पुकारती एक दुर्बल सी आवाज़ इसके बाद फिर ईंट और घास-फूस गिरने और कराहों की मिली-जुली आवाज़ें जैसे किसी का दम घुटा जा रहा हो।

मारी समझ गया कि उसे इस सबकी जाँच करने की जरूरत नहीं है, उसे फौरन यहाँ से भाग निकलना चाहिए, नहीं तो जेल की हवा खानी पड़ेगी। बाहर दरवाजे की तरफ जाते

हुए उसे खिड़की में एक रोशनी दिखाई दी। घर के पिछले हिस्से में कोई रहता था—एक लड़का एक बूढ़े को, जो जोर-जोर से खाँस और कराह रहा था, दवा पिलाने की कोशिश कर रहा था। मारी ने जैसे अपने आपसे कहा, 'मैंने नहीं सोचा था कि तुम लोग यहाँ रहते हो।...लेकिन फिक्र मत करो, तुम्हारी खाँसी बहुत जल्द तुम्हारा इलाज कर देगी।'

वह घर से बाहर निकल आया। मुँह में डबलरोटी भरी थी, जिसे चबाते हुए वह चुपके-चुपके एलामन स्ट्रीट तक आ पहुँचा। शहर का यह हिस्सा खतरनाक नहीं था और यहाँ हर कोई आज़ादी से घूम-फिर सकता था, क्योंकि यहाँ सिपाही गश्त लगाने की जगह दुकानों और मकानों के सामने आराम से सोते थे और सवेरा होने पर ही आँखें खोलते थे।

निराश मारी नदी की तरफ बढ़ा। वह सोचने लगा कि और कुछ नहीं तो ट्रे ही उठा लाता। अब सारा दिन बाहर बिताकर जब वह घर पहुँचेगा, तो उसकी बीवी यह देखकर कि वह शहर से सिर्फ सूखी-साखी पान की पत्तियाँ लाया है, उसके मुँह पर थूक ही देगी। अच्छा यही होगा कि उन्हें वह खुद ही चबा ले—इसलिए नदी पर पहुँचते ही जैसे ही उसे कुल्ला करने के लिए पानी का एक घूँट मिलेगा, वह मुँह में पड़ी खट्टी रोटी थूककर बाहर निकाल देगा—उसकी वजह से उसे हिचकियों पर हिचकियाँ आ रही हैं, जिससे लोगों के सुन लेने का डर पैदा हो जाता है, एलामन और नार्थ स्ट्रीट पर आराम से पड़े सो रहे सिपाही भी उन्हें सुनकर जाग सकते हैं।

रेत पर पैर रखता हुआ वह सीढ़ियों के पास पहुँचा। यहाँ तैरकर नदी पार करने से फासला बहुत कम हो जायेगा—नहीं तो नल्लप्पा की झाड़ी तक पहले पैदल काफी दूर चलो और फिर नदी पार करो...।

तहसील दफ्तर के घंटे ने तीन बजाये। मारी ने घंटे गिने और सोचा कि चार बजे तक वह घर पहुँच जायेगा—बस, पानी में चार-छह पैर मारना और फिर सड़क पर दो मील के पत्थर नापना।

जैसे ही वह नदी के आखिरी सीढ़ी पर पहुँचा, नीचे पानी की सतह पर उसे एक छाया-सी दिखाई दी। डर के मारे वह पत्थर बन गया। जरूर यह मोहिनी है, पिशाचिनी जो राह चलते लोगों को लुभाकर अपने पास बुलाती है और फिर उनका खून पी जाती है।...वह भय और आश्चर्य से उसे देखने लगा—मोहिनी उठी और नदी के भीतर आगे बढ़ने लगी। 'अरे, भूतनी पानी पर चल रही है...आज मैं किस मुहूरत में घर से निकला था! लेकिन अभी उसने मुझे देखा नहीं है। मुझे हिलना नहीं चाहिए...।'

तब तक छाया पानी में बहुत आगे तक जा चुकी थी। उसके मुँह से आवाज़ निकली, 'मैं मर नहीं सकती...मुझे घर वापस जाना चाहिए।' इसके बाद शांति छा गई। तब तक मारी का डर काफी दूर हो चुका था, वह सोचने लगा, 'भूतनी बात नहीं करती...डूबती भी नहीं', और वह नदी में कूद पड़ा।

पेट में बहुत ज्यादा पानी भर जाने से पहले मारी ने सावित्री को बाहर निकाल लिया। वह नदी के बीच तक और कुछ आगे तक बहकर जा चुकी थी। मारी ने उसके बाल पकड़कर उसे नदी के दूसरे किनारे पर खींच लिया। फिर उसका बदन उलटा किया और पानी बाहर

निकाला। उसने आँखें खोलीं और कुछ बुदबुदाई।

मारी ने पूछा, 'क्या कह रही हो तुम?'

उसने पूछा, 'तुम घर कब आओगे?'

मारी ने जवाब दिया, 'मैं अब तक घर पहुँच गया होता...अगर तुम यहाँ न मिलती। आज मैं गाँव से निकला ही क्यों, समझ नहीं पाता...।'

'बाबू खेलने चला गया? कॉफ़ी पी ली उसने?'

'पता नहीं मुझे। पी ली होगी। तुम उठ सकती हो?'

'तो सवेरा हो गया? दूध वाला दूध दे गया?'

'सवेरा तो हो रहा है लेकिन दूध वाला मुझे कहीं दिखाई नहीं देता।'

'उसे क्या हुआ है?'

'मैं क्या बताऊँ? वह तुम्हें नदी पर तो मिलेगा नहीं।' यह कहकर मारी ने उसे हिलाया-डुलाया, उलटा-सीधा किया, हाथ-पैर खींचे, तो सावित्री की आँखें खुल गईं। अपने सामने काले भूत सा आदमी देखकर वह चिल्लाई 'अरे, कोई बचाओ...चोर, चोर!'

मारी डर गया, 'इसने मुझे पहचान लिया। अब खैर नहीं है। बड़ी चालाक है औरत...', और उसने भागना शुरू कर दिया। भागते हुए कहता गया, 'मेरी मदद के बदले यह मुझे जेल भिजवा रही है...मुझे तो इसे और गहरे पानी में बहा देना चाहिए था।'

सवेरे सावित्री की नींद खुली तो सिर और पूरे बदन में भारी दर्द था। अब उसे अपनी स्थिति समझ में आ गई थी। पुरानी परेशानी फिर उभरकर आ गई। जल और रेत के मैदान के पार, उसकी दायीं तरफ मकानों की छतों के ऊपर टाउन हाल की बुर्जी दिखाई दे रही थी। सावित्री इन्हें देखकर सोचने लगी कि इन्हीं मकानों में से किसी में वे वह उस औरत के साथ पड़ा होगा—रहने दो पड़ा...। वह पीठ करके इनकी तरफ जायेगी और, जब तक वह उस औरत को छोड़ता नहीं और माफ़ी नहीं माँग लेता, उससे बात तक नहीं करेगी। वह भी मनुष्य है और उसकी अपनी इज्ज़त है, और वह कोई भी गलत व्यवहार स्वीकार नहीं करेगी। क्या अब वह उसे ढूँढ़ रहा होगा? नहीं, वह जरूर उस औरत को घर ले आया होगा और उसे रख लिया होगा। वह बच्चों से कैसा व्यवहार कर रही होगी? सावित्री सोचने लगी कि अच्छा होता कि वह जानम्मा या गंगू से बच्चों की देखभाल करने के लिए कह आती। लेकिन...बच्चे किसके हैं? उसी के हैं बच्चे, उसी ने मिडवाइफ और नर्स के पैसे चुकाये हैं, इसलिए उसी का काम उनकी देखभाल करना है। छोड़ो बच्चों को। उसने कहा भी तो था, तुम्हारे बिना भी बच्चों की अच्छी देखभाल होगी। लेकिन अब मैं अपना क्या करूँ? भूखी मर जाऊँ?

एक काला तगड़ा आदमी और उसी तरह की एक औरत उसके सामने आ खड़े हुए। औरत ने पूछा, 'अब ठीक हो तुम?'

'तुम कौन हो?'

'मैं सक्कर गाँव में रहती हूँ और लोग मुझे पोन्नी कहते हैं। मेरा पति लोहार है। जब

वह शहर से लौट रहा था—वहाँ क्या करने गया था वगैरह छोड़ो, क्योंकि मर्द काम-धंधे पर जाते ही हैं—तो उसने नदी में तुम्हें देखा और वह कहता है कि उसने तुम्हें बचाया और फिर यहाँ किनारे पर छोड़कर चला गया।'

'तुम मुझे यूँ अकेला ही छोड़ देते', सावित्री बोली।

'यह क्यों कह रही हो? जब उसने मुझे बताया कि वह तुम्हें यहाँ अकेली छोड़ आया है तो मैं चिल्लाई, 'तुम एक औरत को वहाँ बेबस छोड़ आये...इसी वक्त वापस जाओ और देखो कि वह ठीक-ठाक है या नहीं?" लेकिन जैसे ही वह चला कि कोई अपने पहिए का चक्का ठीक कराने आ गया, और यह काम पूरा ही हुआ था, तो कोई और ताला सँभलवाने आ गया। अरे, इस धंधे में कोई आराम नहीं है...और हम गरीब लोग हैं, किसी से यह नहीं कह सकते कि बाद में आना...हमें तो उन्हीं के सहारे जिंदा रहना है...हैं न?'

'तुम ठीक कहती हो', सावित्री ने कहा।

'मुझे खुशी है कि तुम जिंदा बच गईं। तुम कितनी गोरी हो, और पैसे वाली भी लगती हो। लेकिन तुम यहाँ क्यों आईं? नदी में क्यों कूद पड़ीं?'

'ये तुम्हारे पति हैं?'

'हाँ।'

'तुम इन्हें बहुत प्यार करती हो?'

पोन्नी यह सवाल सुनकर शर्माई और ज़रा सा मुस्कराई। सावित्री बोली, 'मान लो ये तुम्हें छोड़कर किसी और औरत को रख लें। तब तुम क्या करोगी?'

पोन्नी ने मारी पर टेढ़ी नजर डाली और पूछने लगी, 'ऐसी कोई हरकत तो नहीं कर रहे तुम?'

मारी ने फौरन जवाब दिया, 'नहीं, हरगिज़ नहीं,' और सावित्री की तरफ मुड़कर पूछा, 'इससे आपका क्या मतलब है, मैडम?' सावित्री ने पोन्नी को समझाया, 'मेरा मतलब यह नहीं था कि यह कुछ कर रहा है। मैंने कहा था कि मान लो...'

मारी अब गुस्से में भरकर बोला, 'क्यों मान ले यह ऐसी फिजूल बात?'

सावित्री अपनी बात पर अड़ी रही। 'अगर ये कुछ ऐसा करें तो तुम क्या करोगी?'

पोन्नी तैश में भरकर बोली, 'ये कोशिश तो करके देखें। तब पता चलेगा कि मैं क्या कर सकती हूँ।'

सावित्री ने नदी की तरफ़ इशारा करके कहा, 'लेकिन मैं यही कर सकी। मैंने सालों उनकी गुलामी की है। बच्चे पैदा किये हैं। और अब वो किसी और औरत के चंगुल में जा फँसे हैं। अब मुझे नहीं चाहते वो...।'

पोन्नी ने अकड़कर कहा, 'बहना, मेरी बात याद रखना। मर्दों को डंडे के नीचे रखो, तभी वे ठीक रहते हैं। अगर उनकी ज्यादा परवाह करोगी तो वे तुम्हें डोरी से बाँध कर कुत्ते की तरह रखेंगे।'

मारी फिर झल्लाया, 'क्या मतलब है तुम्हारा? मैंने तुम्हें कब कुत्ते की तरह रखा है?'

'अब चुप रहो', पोन्नी ने शान से हुक्म-सा दिया। 'जब औरतें बात करती हों तो बीच

में टपकने की जरूरत नहीं है। उस पेड़ के नीचे जाकर आराम करो। जब जरूरत होगी, मैं बुला लूँगी।’ मारी एकदम वहाँ से हट गया। पोन्नी बोली, ‘देख लिया। इस तरह काबू में रखे जाते हैं मर्द। आदमी यह अच्छा है लेकिन कभी-कभी दोस्तों के बहकावे में आकर पी-पा लेता है, तब घर लौटकर बर्तन-भाँडे लोट-पोट कर देता है और मुझे भी मारता-पीटता है। लेकिन मुझे पता चल जाय कि आज यह पीकर लौटेगा तो इसके आते ही मैं इसे पीछे से धकिया कर नीचे गिरा देती हूँ और इसकी पीठ पर चढ़कर बैठ जाती हूँ। तब यह निकलने की कोशिश करता है, गालियाँ बकता है, फिर सो जाता है, और सवेरे भेड़ की तरह मिमियाता हुआ उठता है। मेरा मानना है कि दुनिया में कोई भी पति ऐसा नहीं है जिस पर काबू न किया जा सके...। बहना, मैं तुम्हें सारे दिन यहाँ ऐसे बैठे नहीं रहने दे सकती। धूप गरमाने लगी है। अब तुम कहाँ जाओगी?’

‘कहीं नहीं। यहीं रहूँगी।’

‘मैं अपने पति को शहर भेजकर तुम्हारे घरवालों को बुलवाऊँ?’

सावित्री इस सुझाव पर काँप उठी।

‘या मेरे साथ हमारे घर चलो। घर बहुत मामूली है लेकिन तुम्हारे लिए जगह बना दूँगी। सावित्री ने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। तब पोन्नी बोली, ‘मैं जानती हूँ कि तुम ब्राह्मण हो और हमारे साथ नहीं रहोगी। मैं तुम्हारी ही जात का कोई आदमी तुम से मिला दूँगी।’

‘नही, मुझे अकेला छोड़ दो तुम।’

‘या तुम हमारे ही घर रहो मैं तुम्हारी जगह अलग कर दूँगी और वहाँ खुद नहीं घुसूँगी। तुम्हारे लिए नया बर्तन और चावल भी ला दूँगी, और अपना खाना खुद बनाना। मैं उधर कभी नहीं आऊँगी और खुद भी घर में ऐसा कुछ नहीं पकाऊँगी जिससे तुम्हें एतराज़ हो। आओ मेरे साथ, बहना।’

‘मैं कहीं नहीं जाऊँगी।’

‘हमारा गाँव दो मील दूर है। हम धीरे-धीरे चलेंगे।’

‘तुम जाओ...मुझे अकेला छोड़ दो।’

अब पोन्नी को गुस्सा आ गया। बोली, ‘मैं नहीं जानती तुम चाहती क्या हो। न अपने घर जाना चाहती हो न मेरे साथ...। फिर क्या करना चाहती हो? ऐसी औरत आज तक नहीं देखी।

‘तुम मेरे लिए परेशान क्यों हो रही हो?’

‘क्यों न होऊँ परेशान! अब सुन लो कान खोलकर...या तो तुम मेरे साथ गाँव चल रही हो या शहर जा रही हो। मैं तुम्हें यहाँ नहीं छोड़ सकती। अगर तुम फिर भी नहीं मानोगी तो मैं अपने आदमी को शहर भेजकर तुम्हारे घरवालों को बुलवा लूँगी।’

सावित्री सोचने लगी कि इन मकानों में से कोई आयेगा और उसके हाथ-पैर बाँधकर साउथ एक्सटेंशन ले जायेगा। उधर वह नहीं जाना चाहती थी। इसलिए उसने पूछा, ‘हमें किधर जाना होगा?’

पोन्नी ने दूसरी दिशा में इशारा किया तो बोली, ‘ठीक है, मैं तुम्हारे साथ चल रही हूँ।

लेकिन शर्त है कि मैं न तुम्हारे घर में रहूँगी, न किसी और के घर में। मैं आसमान के नीचे रहूँगी।’

9

रमानी सवेरे सोकर उठा तो बहुत परेशान था। उसे रात भर नींद नहीं आई थी और सावित्री के सामने काफी बहादुरी दिखाने के बाद भी वह उसके अचानक बदले रुख से डर गया था। शादी के बाद पंद्रह सालों में अब तक उसने ऐसा व्यवहार कभी नहीं किया था। वह हमेशा उसके प्रति नरम रही थी और सभी आज्ञाएं मानती आई थी और आज ही उसके मन की आग बाहर निकलकर प्रकट हुई थी। यह उसके लिए एक नई बात थी और हालांकि उसने खुद सावित्री को बाहर निकल जाने के लिए कहा था लेकिन उसने यह नहीं सोचा था कि वह सचमुच घर छोड़कर चली जायेगी। उसका ख्याल था कि हमेशा की तरह वह इस दफ़ा भी अँधेरे कमरे में जाकर लेट जायेगी। हो सकता है इस दफ़ा कुछ ज्यादा दिन वहाँ जाकर पड़ी रहे, लेकिन अंत में उसका दिमाग सही हो जायेगा और वह फिर से घर के काम-काज में लग जायेगी। जब कोई तमाशा करता था तो उसे चिढ़ होती थी। हर आदमी को कभी-कभी मनोरंजन करने का अधिकार है, बस, घर पर उसका व्यवहार बदलना नहीं चाहिए। उसे घर लौटने में जरूर देर हो जाती थी, लेकिन कुछ वक्त बाद यह भी ठीक हो जाता, परंतु इस तरह की धमकी उसके बर्दाश्त के बाहर थी। वह चाहता था कि सावित्री उसकी मिन्नत करे और प्रार्थना करे, तो वह बहुत कुछ मान भी लेता—वह मानता था कि दूसरे उससे सही ढंग से कुछ भी माँगे तो वह उन्हें जो वे चाहें, दे सकता है। दूसरों को उससे व्यवहार का सही ढंग आना चाहिए। अगर कोई उसे हुक्म देकर या डरा-धमका कर कुछ कराना चाहेगा तो यह उसकी भूल होगी। उसने कभी किसी का परामर्श स्वीकार नहीं किया था—अपने पिता का भी नहीं, जिन्होंने अपने देहांत से कुछ समय पहले, जब रमानी ने मैट्रिक पास किया था, यह कहा था कि अपनी पढ़ाई जारी रखना, तो उसका उत्तर या, 'मेरे लिए क्या सही है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ।'

रमानी अपने ही बल पर जीवन में आगे बढ़ा था। उसने कभी किसी की सहायता या परामर्श की प्रतीक्षा नहीं की थी। अगर वह दूसरों की राय पर चलकर जीवन में कुछ करता तो ज्यादा से ज्यादा बी.ए. पास करके किसी दफ्तर में क्लर्क हो जाता या और हाथ-पैर मारता तो मामूली प्रैक्टिस वाला वकील बन जाता। लेकिन अब पूरी तरह अपने ही प्रयत्नों और उद्योग से वह हर महीने पूरे पाँच सौ रुपए कमाता था, जो सिर्फ उसका वेतन था, और कई-कई डिग्रीधारी लोग पचास-साठ रुपए की उसके नीचे ही नौकरी पाने के लिए उसे अर्जियाँ भेजते रहते थे। (यह बात उसे संतोष देती कि यूनिवर्सिटी की डिग्री हासिल न करके

भी वह किसी तरह के घाटे में नहीं रहा है। बी.ए. करने वालों को जब कभी वह शान मारते देखता तो पहले तो उसे अपने बी.ए. न होने पर शर्म आती, फिर एकदम यह सोचकर कि ये सौ रुपये महीना भी नहीं कमा पाते और हेकड़ी दिखाते हैं, प्रसन्न हो जाता। लेकिन कभी-कभी वह यह भी सोचता कि अगर उसके पास डिग्री होती तो वह कहीं ज्यादा हिम्मत से इन लोगों से निबट सकता था।)

उसने अपना भविष्य स्वयं ही बनाया था, इसी से यह बात भी सिद्ध होती थी कि वह हमेशा सही काम करता है, और उसे किसी के मशविरे की जरूरत नहीं और अपनी पत्नी से तो हरगिज़ नहीं थी। हाँ, वह यह जरूर मानता था कि स्त्री स्वतंत्रता का आन्दोलन किसी सीमा तक सही है, लेकिन इसका मतलब यही है कि औरतें अंग्रेजी के उपन्यास पढ़ें, टेनिस वगैरह खेलें, कभी-कभी पिक्चर देखने चली जायें और आल इंडिया वुमेन्स कान्फरेंस की मेंबर भी बन जायें लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे पत्नी और माँ के अपने मौलिक कर्तव्यों को भूल जायें और पश्चिम की स्त्रियों की तरह उनके जैसी जिंदगी बिताने लगें—जो, रमानी का विश्वास था, चरित्रहीनता और तलाक का दूसरा नाम है। उसका मानना था कि दुनिया में भारत देश का आध्यात्मिक महत्त्व यहाँ की स्त्रियों के आदर्श चरित्र और व्यवहार के ही कारण है, यानी श्रेष्ठ पत्नी और माँ बनकर दिखना ही न केवल उनका मौलिक कर्तव्य है, उनका दैवी अधिकार भी है—और जो स्त्री अपने पति की आज्ञा का पालन नहीं करती, वह इस अधिकार से वंचित हो जाती है। प्राचीन शास्त्रों और पुराणों में भी यही कहा गया है कि पति के साथ पूरी तरह एकरूप होना हर स्त्री का कर्तव्य है। उसे पुराणों में वर्णित उन अनेक स्त्रियों की कहानियाँ याद आईं जिनमें स्त्री को पति की पूरी तरह आज्ञा मानना, उसकी छाया बनकर रहना ही सर्वश्रेष्ठ आचरण बताया गया है।

क्या पति से इस प्रकार के शब्द कहे जाते हैं: 'वादा करो कि तुम उसके पास फिर कभी नहीं जाओगे,' या 'या तुम मुझे और उसे, दोनों को एक साथ नहीं रख सकते।' और नौकर की तरह घर छोड़ने की धमकी देती है...। जिंदगी भर जो भी किया, सबको भुला दिया। वह कैसे भूल गई कि नौकरी के शुरू के दिनों में ही छह तोले का नेकलेस लाकर दिया था—तब उसका बैंक अकाउन्ट भी नहीं था और बीमा करके उसके कमीशन पर ही गुजर करता था। जब-जब वह गर्भवती हुई, और उसके दर्द वगैरह उठे तब कितने दिन और रातें वह चिंता में गुजारता था। अगर यह इस तरह नहीं किया तो मैं घर छोड़कर चली जाऊँगी...। शांता बाई से उसकी मित्रता का विरोध करने का किसी को अधिकार नहीं है—कितनी शानदार और संस्कृत स्त्री है, दुनिया को कितना समझती है! सावित्री यह क्यों नहीं समझती कि मैं घटिया लोगों की तरह उसे रखैल बनाकर नहीं रखना चाहता।

रमानी ने सोच लिया था कि न वह उसकी चिंता करेगा और न उसकी तलाश करने जायेगा। वह अपनी इच्छा से घर छोड़कर गई है, इसलिए इसका नतीजा भी उसे भोगना चाहिए; इन बातों को समझने की उसकी उम्र भी है। जीवन की मुख्य आवश्यकता है दृढ़ता, और औरतों के पास सफलता का यही रहस्य है। अगर पुरुष दुर्बल हों तो वे चाबुक से उसे चलाती हैं। उसे विश्वास था कि सावित्री वापस आयेगी और जब उसका पागलपन खत्म हो

जायेगा, तो माफी भी माँग लेगी। उसका यह आचरण अँधेरे कमरे में जाकर पड़े रहने का ही दूसरा नमूना है। अब वह किसी सहेली के घर में पड़ी रूठा-राठी कर रही होगी। वह जा भी कहाँ जा सकती है? लेकिन उसे तो साबित करना है कि स्वामी वही है।

सवेरे तीनों बच्चे डरे-डरे लग रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह हो क्या रहा है। तीनों हॉल के एक कोने में एक साथ चुप बैठे थे। सुमति ने मान लिया कि माँ का रोल उसे अदा करना है। वह रसोइये के पास जाकर बोली, ‘तुम्हें सबको कॉफ़ी बनाकर देनी है।’

रसोइये ने पूछा, ‘माँ कहाँ हैं तुम्हारी?’

सुमति को कोई जवाब नहीं सूझा तो बोली, ‘एक मिनट ठहरो।’ फिर कमरे में आकर भाई से सलाह करने लगी, ‘रसोइया पूछ रहा है कि माँ कहाँ है, उसे क्या जवाब दूँ?’

‘तुमने क्या कहा?’

‘अभी कुछ नहीं।’

‘उससे कह दो, अपने काम से काम रखे।’

कमला बोली, ‘उसे पता होगा कि माँ कहाँ है, उसने रात में माँ को कहीं देखा होगा,’ और रोने लगी।

तभी रमानी इधर आया। वह सोच रहा था कि अब घर की पूरी जिम्मेदारी उस पर है। वह दिखा देना चाहता था कि सावित्री के बिना भी घर का काम चलता रह सकता है। वह सोचता था कि अब घर की बातों में वह कुछ सुधार भी कर सकता है, खर्चे-पानी का ढंग बदल सकता है, वह सब कर सकता है जिसे वह बार-बार कहता था। लेकिन बहरी सावित्री की समझ में ही नहीं आता था। एक बात तो यह कि बैंगन की सब्जी एकदम बंद कर दी जायेगी, रसोइया रात को भी घर में रहा करेगा, कॉफी की जगह चाय पी जायेगी, दूध का बिल आधा किया जायेगा, वगैरह...

उसने कमला के गाल पर चुटकी भरी, बाबू के बालों पर हाथ फेरा और सुमति की पीठ थपथपाई। बच्चों को खुश रखना सबसे जरूरी था। उन्हें अपनी माँ की कमी महसूस नहीं होनी चाहिए। उसने मुस्कराकर पूछा, ‘तुम सबने कॉफ़ी पी ली?’ पिता को हँसता देखकर बच्चों का ढाढस बँधा। उसने कहा, ‘अब मेरे कमरे में आओ।’

‘सब आयें?’ बाबू ने ताज्जुब से पूछा। पिता के कमरे में उन्हें बहुत कम जाने दिया जाता था, कमला ही कभी-कभी जाती थी।

अपने कमरे में उसने सब बच्चों को एक लाइन में बिठाया और खुद भी स्कूल मास्टर की तरह उनके सामने बैठ गया। अब वह उन्हें समझाने की मुद्रा में आ गया—यह गुण उसने नौकरी शुरू करने पर विकसित किया था, और इसी की सहायता से पहले साल में ही एक लाख के बीमे करवाकर कंपनी को दिये थे।

‘अब बच्चो, माँ, यहाँ नहीं है, इसलिए तुम लोग परेशान मत होना।’

कमला ने पूछा, ‘माँ कहाँ है?’

‘वह तालपुर गई है। उसके पिता अचानक बीमार पड़ गये, वहाँ से दफ्तर में टेलीग्राम आया था।’

बच्चों ने यह कहानी चुपचाप सुन ली। रमानी ने पूछा, 'तुम सब चुप क्यों हो?', बाबू सबसे बड़ा था, उसे इस बात पर सबसे कम विश्वास हुआ। वह कई सवाल करना चाहता था: वह आधी रात को क्यों गई, जाने से पहले उसने जेवर क्यों उतार दिये, इससे पहले लड़ाई क्यों हुई और आँसू बहाये गये, लेकिन पिता से यह सब पूछने की उसे हिम्मत नहीं हो रही थी। लेकिन कमला ने पूछ लिया, 'उसके साथ कोई स्टेशन क्यों नहीं गया?'

'उसके साथ जाने के लिए कोई था ही नहीं। तुम सब अकेले थे इसलिए मैं नहीं गया।'

'उसे स्टेशन पहुँचाने कोई गाड़ी आई थी?'

'हाँ, वह सड़क पर थी।'

'लेकिन हमने तो देखी नहीं।'

कमला ने हिम्मत की, 'लेकिन पापा, मेरा ख्याल है कि आपके साथ माँ की बड़ी लड़ाई हुई और वह देर तक रोती रही।'

रमानी ने कहा, 'वह तुम सबको साथ ले जाना चाहती थी, लेकिन मैंने मना कर दिया...क्योंकि तुम्हारे स्कूल हैं।'

'पापा, वह इतना रो क्यों रही थी?'

'क्योंकि उसके पिताजी बहुत बीमार थे। मैं इस तरह बीमार पड़ जाऊँ तो तुम नहीं रोओगे?' फिर बाबू को देखकर उसने कहा, 'तुम आँखें क्यों चला रहे हो? कुछ पूछना है?'

बाबू ने पूछ लिया, 'माँ वापस कब आयेगी?' रमानी ने कहा कि यह पिताजी की तबियत पर है। फिर पूछा, 'तुम सब नहा लिये?'

सुमति बोली, 'कमला को नहलाना बहुत मुश्किल होता है। माँ को हर रोज़ परेशानी होती थी।'

रमानी ने कमला को देखकर कहा, 'नहीं, यह ऐसी लड़की नहीं है। कमला बहुत समझदार है। है न? सुमति तुम्हें नहला देगी, क्यों कमला?'

'जी पापा।'

फिर रमानी ने अपना विचार बदल दिया। बोला, 'सुमति, तुम कमला को खुद नहाने दो। कमला, तुम अब पाँच साल की हो गई हो। अब अपने आप नहाया करो।'

'जी, पापा।'

जब बच्चे स्कूल जाने को तैयार होने लगे तो उसने पूछा, 'तुम लोग नाश्ते के लिए क्या करते हो?' लड़कियों ने बताया कि वे दोपहर बाद घर आ जाती हैं। रमानी ने कहा, 'मैं रसोइये को घर पर रहने के लिए कह दूँगा। जब लौटो तो उससे लेकर खा लेना। अब तुम्हें अपने काम खुद करना सीखना चाहिए। आत्मनिर्भरता जिंदगी का सबसे बड़ा सबक होता है। और बाबू तुम भी तभी घर आ जाते हो?'

'नहीं पापा, मैं शाम को लौटता हूँ।'

'तुम्हारा मतलब यह है कि शाम तक तुम भूखे रहते हो। यह बात ठीक नहीं है।' सावित्री इसे तब तक भूखा क्यों रखती थी? तुम दोपहर को खाने के लिए एक पैकेट बना कर ले जाया करो।' बाबू को पिता की ये हिदायतें अच्छी नहीं लग रही थीं। उसे इस तरह

पैकेट बनाकर स्कूल ले जाने और वहाँ बैठकर खाने में शर्म आती थी। उसकी माँ ने इसके लिए कहना बंद कर दिया था। अब पिता भी यही कह रहे थे। वे हम सबको अकेला क्यों नहीं छोड़ देते?

‘मैं आज स्कूल में ही कुछ खा लूँगा,’ बाबू ने कहा।

‘क्या खा लोगे? भूखे रहोगे?’ रमानी ने कहा, फिर रसोइये को बुलाकर उसके लिए नाश्ते का पैकेट बनाकर देने को कहा।

रसोइया बोला, ‘नाश्ता अभी तैयार नहीं है।’

रमानी गुर्रा कर बोला, ‘इसका क्या मतलब है? तुम नहीं जानते कि लड़के को दोपहर में खाने के लिए कुछ चाहिए? तुम यहाँ क्या कर रहे हो? इसके बाद ऐसा नहीं होना चाहिए। जैसे ही नाश्ता तैयार हो जाय, पैकेट बनाकर बाबू को स्कूल में दे आना।’ बाबू यह सुनकर परेशान हो उठा। जब वह स्कूल में नाश्ता करेगा तो उसके साथी उसे और रसोइये को देखकर हँसेंगे। यह तो हो ही नहीं सकता। उसने धीरे से इसका विरोध किया लेकिन कोई सुनने को तैयार नहीं था। ‘मैं जानता हूँ कि तुम्हारे लिए क्या सही है क्या नहीं। इस तरह बड़ों का विरोध नहीं करते।’ बाबू ने चुप रहकर मान लिया। पिता से बहस करना बेकार था। जिंदगी बुरी होती जा रही थी। ‘अब जाओ सब लोग। शाम को मेरा इन्तजार करना। मैं सबको सिनेमा ले चलूँगा।’

सुमति और कमला ने खुशी से तालियाँ बजाई लेकिन बाबू ने पूछा, ‘शाम को?’

‘जी, जनाब।’

‘वह वक्त मेरे लिए क्रिकेट का होता है।’

‘उस दिन नहीं जब मैं तुम्हें सिनेमा ले जाऊँ।’

‘हम अगले हफ्ते वाई.एम.यू. से मैच खेल रहे हैं और मैं प्रैक्टिस के लिए नहीं गया तो कैप्टेन नाराज़ होगा।’

‘सुना बाबू, तुम बहुत...’, वह चिढ़ गया था और लड़के के चरित्र की समीक्षा करने जा रहा था कि यह सोचकर चुप हो गया कि उसे तो बच्चों के साथ अच्छा व्यवहार करना है। ‘बाबू, तुम्हें अच्छा लड़का बनना चाहिए। अपनी बहनों के बारे में सोचना चाहिए, कि तुम्हारे बिना उन्हें पिक्चर अच्छी नहीं लगेगी। है न यह बात? तुम्हें दूसरों के लिए भी सोचना चाहिए, स्वार्थी नहीं होना चाहिए तुम्हें।’

‘पापा, मुझे पिक्चर अच्छी लगती है, लेकिन मैंने कहा कि मुझे मैच...।’

‘ठीक है, ठीक है। अब एक ही बात बार-बार मत दोहराओ। मैच इन्तजार कर सकता है।’ फिर दफ्तर जाने से पहले उसने रसोइये को बुलाकर कहा, ‘शाम को सबके लिए चाय बनाना। कॉफी सवेरे ही बना करेगी।’

रमानी शाम को पाँच बजे दफ्तर से निकला। रास्ते में हलवाई की दुकान पर रुककर उसने मिठाइयाँ खरीदीं। घर में घुसते ही उसने पूछा कि सबने दोपहर को दही-भात और चाय नाश्ता सही ढंग से लिया या नहीं, और यह कि बाबू का पैकेट स्कूल पहुँच गया था या नहीं।

कमला बोली, ‘मुझे चाय की बू अच्छी नहीं लगी इसलिए मैंने आधा कप ही पी, बाकी छोड़ दी।’

‘नहीं, यह नहीं चलेगा। तुम्हें चाय पसंद आनी चाहिए। बहुत अच्छी चीज़ है चाय।’

‘अच्छा पापा, मैं कल से उसे पीने की कोशिश करूँगी।’

रमानी यह सुनकर खुश हुआ। उसे अब तक पता नहीं कि उसके बच्चे कितनी जल्दी मान जाते हैं। फिर सुमति की ओर मुड़कर पूछा, ‘तुम्हें चाय अच्छी लगी, सुमति?’ उसने ‘हाँ’ कहा और साथ में यह भी जोड़ दिया कि उसके लिए चाय और कॉफी दोनों बराबर हैं।

उसने मिठाइयों का पैकेट सुमति को पकड़ा दिया और कहा, ‘आपस में बाँट लो।’

रमानी मिठाइयाँ काफी ज्यादा खरीद लाया था, इसलिए बच्चों ने बड़े उत्साह से उन्हें खाना शुरू किया लेकिन वे आधी से ज्यादा खत्म नहीं कर पाये। रमानी ने सिर हिलाकर कहा, ‘तुम्हें कुछ भी बर्बाद नहीं करना चाहिए। बाबू, तुमने ही सबसे ज्यादा छोड़ी है। यह ठीक नहीं है। तुम तो खिलाड़ी हो, तुम्हीं को सबसे ज्यादा खाना चाहिए और ताकतवर बनना चाहिए। इसे भी खत्म करे दो, नहीं तो मैं तुम्हें क्रिकेटियर कभी नहीं कहूँगा। चलो, शुरू करो।’ बाबू ने ही सबसे पहले खाना बंद किया था लेकिन अब उसने बची हुई सारी मिठाई बड़े-बड़े ग्रास लेकर गले से नीचे उतार दी और प्रशंसा के लिए पिता की ओर देखा। ‘शाबाश’, रमानी ने तारीफ की, ‘अब तुम जरूर किसी दिन ‘इंडिया इलेविन’ में आ जाओगे।’ बाबू यह सुनकर बहुत खुश हुआ, हालांकि मिठाइयाँ उसके पेट में दर्द कर रही थीं। रमानी सबको पैलेस टाकीज़ में सिनेमा दिखाने ले गया जहाँ लॉरेल एण्ड हार्डी की फिल्म लगी थी। बच्चे मगन होकर फिल्म देखते रहे। कॉमेडी अभिनेताओं की चालबाजियों में वे इस दुनिया के दुख-दर्द और माँ का अभाव भी भूल गये।

रमानी शो के बीच में ही उठा और फुसफुसाकर बच्चों से बोला, ‘जब तक मैं तुम्हें लेने वापस न आ जाऊँ, यहीं रहना। अगर मुझे देर भी हो जाय तो भी यहीं बने रहना।’

बाबू ने कहा, ‘मैं इनकी देखभाल करूँगा।’

कमला बोली, ‘पापा, अगर कोई आये और हमें बाहर निकालने लगे तो हम क्या करें?’

शांता बाई सिर के पीछे हाथ बाँधे और तकिये पर लेटी कह रही थी, ‘जिंदगी बोरियत से भरी है। मैं चाहती थी कुछ कर दिखाऊँ लेकिन यहाँ पड़ी सड़ रही हूँ। सारा दिन परेरा के हँसी-मज़ाक और कान्तंगार की कड़वी बातें सुननी पड़ती हैं और फिर यहाँ आकर लेट जाती हूँ। जैसे ‘निर्जन में बहती हवा’—आपने उमर खय्याम पड़ा है?’

‘यह कौन है?’ शांता बाई के साहित्यिक फ़िकरे रमानी को परेशान करते थे।

‘फारसी के मशहूर शायर।’

‘मुझे मुसलमानों की भाषा नहीं आती,’ उसने बेबसी से कहा और शांता बाई ने उसे उमर खैय्याम और फ़िट्ज़ ज़ेराल्ड के बारे में बताना शुरू कर दिया।

‘मैं तो रूबाइयात की एक प्रति के बिना जिंदा ही नहीं रह सकती। यह मेरे तकिये के

नीचे या बैग में हमेशा रहती है। उसका दर्शन मुझे बहुत पसंद है। कहता है, 'जो कल मर गये और परसों भी अजन्मे हैं,' या 'बिना पूछे, कहाँ जाना है, क्या करना है,' वगैरह। जिंदगी का प्याला ऊपर तक भरो और पीकर खाली कर दो फिर एक और प्याला इन यादों को डुबोने के लिए...। इस दुनिया में खैय्याम ही अकेला आदमी था जो मेरी आत्मा को समझ सकता था। मेरी जिंदगी की ट्रेजेडी यही है: कोई मुझे समझने की कोशिश नहीं करता। खैय्याम कहता है, 'इस दुनिया में आये लेकिन समझा कुछ भी नहीं...मैं निर्जन में बहती हवा हूँ।'

रमानी उसके बिस्तर के किनारे जाकर बैठ गया और हाथ थामने की कोशिश की। शांता बाई ने झटककर हाथ छुड़ा लिये और बोली, 'मुझे अकेला छोड़ दो। मेरा मूड सही नहीं है।'

'सच कह रही हो?'

'बिलकुल। यहाँ बैठना चाहो तो बैठो लेकिन मुझको छुओ नहीं।'

रमानी ने अपने हाथ हटाकर सीने पर बाँध लिये। शांता बाई ने एक धुन गुनगुनाई और सिर झटक कर बोली, 'मैं इतनी दुखी हूँ कि वायलिन भी साथ नहीं लाई। कुछ बजाने का मन कर रहा है।'

'मुझे तो इसका पता ही नहीं था।'

'तुम्हारे पास वायलिन है?'

'नहीं, लेकिन तुम्हारे लिए खरीद देता।'

'तुम मेरे लिए कितने अच्छे हो! पता नहीं, इस सबका बदला कैसे चुकाऊँगी।'

रमानी का हृदय ये शब्द सुनकर गद्‌गद हो उठा।

'मैंने तुमसे कितनी बार कहा है कि बदला चुकाने की बात कभी मत किया करो। जब मैं किसी को पसंद करता हूँ, तो बिना शर्त पसंद करता हूँ और उसके लिए कुछ भी कर सकता हूँ। अब कुछ भी चुकाने की बात मत करना।'

शांता बाई बोली, 'परेरा कह रहा था कि पैलेस में लॉरेल एण्ड हार्डी की कॉमेडी लगी है। आज उसे देखने जा सकते हैं?'

'नहीं, आज नहीं। माफ़ करना। मुझे अपने बच्चों को देखना है। पत्नी अपने घर गई हुई है।'

'अच्छा,' शांता बाई ने दुखी मन से कहा, 'मेरा भाग्य! और क्या कहूँ! आज मैं पिक्चर देखना चाहती थी। भाग्य का क्या करूँ!'

'मुझे गलत मत समझो, रानी,' रमानी ने गिड़गिड़ा कर कहा।

'नहीं, यह बात नहीं है। परिवार पहले है, मैं तो अपने भाग्य को ही दोष दे रही थी।' एक आह भरकर उसने फिल्म की आशा छोड़ दी। फिर कुछ देर तक गुनगुनाती रही, और रमानी ने कहा कि उसका गायन दिव्य है। वह बोली, 'तुम ज़रा बत्ती बुझा दोगे? मुझे लगता है कि अँधेरे में मेरी आत्मा को ज्यादा आराम मिलेगा...मुझे तो बिजली के बल्बों से नफरत है।'

रमानी ने बत्ती बुझा दी।

तहसील दफ्तर के घंटे ने नौ बजाये। रमानी ने ध्यान से उन्हें गिना, फिर उछलकर खड़ा हो गया। और बोला, 'हे भगवान! मुझे पता ही नहीं चला कि नौ बज रहे हैं। बच्चे इन्तजार कर रहे होंगे। भूखे होंगे और नींद भी आ रही होगी।'

10

जैसे ही वे गाँव में घुसे, सावित्री ने पूछा, 'पहुँच गये क्या?'

'हाँ'

'मैं यहीं रहूँगी। तुम अपने घर जाओ।'

'यहाँ? सड़क के किनारे? माफ़ करो तो कहूँ कि तुम पागलों जैसी बातें कर रही हो।'

'इसमें गलत क्या है? यहाँ नहीं तो सामने के खेत के पास चली जाती हूँ।'

'जिससे साँप काट ले? तुम बाहर खुले में कहीं नहीं रह सकतीं। तुम ऐसे लोगों में नहीं हो जो इसे सह सकें। तुम्हारे चारों तरफ भीड़ इकट्ठी हो जायेगी, और कुछ और भले ही न हो, उससे तुम्हारा दम जरूर घुट जायेगा। मैडम, बेवकूफ़ मत बनो। मेरे साथ घर चलो और कम से कम आज वहीं रहो। कल देखेंगे कि क्या किया जा सकता है। भगवान पर भरोसा रखो, वह जरूर राह दिखायेगा।' सावित्री ने यह बात मान ली। वह बहुत थक चुकी थी और उसमें बोलने की भी ताकत नहीं बची थी।

सक्कर गाँव में सौ के करीब घर थे और छह सड़कें थीं। गाँव के चारों ओर चावल के बड़े-बड़े खेत थे। पोन्नी एक झोपड़ी में रहती थी, जिसका छप्पर सामने टेढ़ी-मेढ़ी सड़क पर फैला था—वह मारी का कारखाना था।

इस वक्त तक उनके पीछे गड़रियों, बच्चों और फालतू लोगों की एक छोटी सी भीड़ जुट गई थी। लोग घरों से निकलकर सावित्री को ताज्जुब से देखते। दो-एक ने पोन्नी से पूछा, 'कौन है यह?' पोन्नी जवाब दिये बिना आगे बढ़ गई।

घर पहुँचते ही पोन्नी ने पूछा, 'तुम शहर से आई हो। वहाँ तो तुम्हारा मकान बहुत बड़ा होगा। मेरी झोपड़ी में पता नहीं तुम्हें कैसा लगेगा!' मारी पहले ही दौड़कर आ गया था और दरवाजा खोले खड़ा था। उसने जल्दी से इधर उधर पड़ा लोहा-लकड़ी जो सामने के खुले कमरे में जमा था, इकट्ठा किया और एक कोने में कर दिया। पोन्नी ने घुसते ही झाड़ू उठाई और फर्श को साफ़ कर दिया। फिर उसने अपनी सबसे अच्छी चटाई निकाली—जिस पर हाथ में छाता लिये एक जापानी लड़की की तस्वीर बनी थी—और उसे नीचे बिछा दिया और सावित्री को बैठने को कहा। सावित्री ने उस पर बैठने से इनकार कर दिया और फर्श पर बैठ गई। पोन्नी बोली, 'मैडम, मुझे तुम्हारी यही बात पसंद नहीं है।' फिर पति की तरफ मुड़कर बोली, 'मेरे साथ आओ।' मारी उसके पीछे आया। दोनों झोपड़ी के पीछे पड़ी खुली जगह में जाकर खड़े हो गये, जहाँ एक नारियल का पेड़ खड़ा था। पोन्नी ने पूछा, 'कुछ पैसा है

क्या?...वैसे मैं जानती हूँ कि कुछ नहीं होगा।'

'मैं क्या कर सकता हूँ?'

'मैं बाहर जा रही हूँ,' वह बोली। 'अब इन्हें ले आये हैं तो कुछ ऐसा खाने-पीने को देना होगा जिसे हमसे ये ले लें। यह कैसे किया जाय?' मारी की समझ में नहीं आया कि क्या कहे तो उसने आँखें दूसरी तरफ कर लीं। पोन्नी ने कहा, 'तुम ऐसा करो कि पेड़ पर चढ़ जाओ और दो नारियल तोड़ लाओ। हम इनसे कहेंगे कि कम से कम इसका पानी ही पी लें।' मारी ने पेड़ पर चढ़ना शुरू किया। वह बोली, 'देखो, नारियल टाइलों पर मत फेंकना। तैयार रखना। मैं अभी आती हूँ।' यह कहकर वह बाहर चली गई। सड़क पर थोड़ी दूर एक दुकान पर पहुँची जिसमें तरह-तरह की चीजें बिकती थीं। दुकान का मालिक रंगन्ना सामान के बीच पालथी मारकर बैठा था। पोन्नी को देखकर बोला, 'अम्मा, आपको क्या चाहिए?'

'भले-चंगे तो हो? बाल-बच्चे ठीक ठाक हैं?'

'एकदम ठीक।'

'अब तुम्हारी बीवी ठीक है?'

'हाँ, ठीक ही है—इससे ज्यादा क्या कहूँ! तुम्हें क्या चाहिए?'

'केले हों, तो चार सबसे बढ़िया दे दो।'

'देता हूँ', यह कहकर दुकानदार ने पैसों के लिए हाथ बढ़ाया।

पोन्नी ने मुँह बनाया। 'तुम शक क्यों कर रहे हो? मैं तुम्हारे पैसे लेकर भाग तो नहीं जाऊँगी।'

'मैंने यह तो नहीं कहा। मैं तो देख रहा था कि केले ठीक से पके हैं या नहीं।'

'मैं ही देख लेती हूँ,' यह कहकर वह चबूतरे पर चढ़ गई जिस पर चीजें रखी थीं। उसने केलों का एक गुच्छा उठा लिया जो लकड़ी से लटक रहा था। उसमें से चार केले चुन लिये, गुच्छे से उखाड़े और चबूतरे से उतर कर पूछा, 'कितने पैसे?'

'आठ पैसे,' दुकानदार ने कहा।

'बहुत महँगे लगा रहे हो,' पोन्नी बोली और सिर जोर से हिलाया। 'मैं तुम्हें चार पैसे, तुम्हारी खातिर पाँच पैसे दूँगी। पैसे कल दे जाऊंगी।'

'मैं उधार पर कुछ नहीं देता,' दुकानदार ने कहा, लेकिन पोन्नी तब तक जा चुकी थी। उसने टिप्पणी की, 'बड़ी खतरनाक औरत है, इससे पार पाना आसान नहीं है।'

पोन्नी ने केले और नारियल सावित्री के सामने रख दिये लेकिन उसने कहा, 'मुझे इनकी जरूरत नहीं है।'

'सिर्फ फल और नारियल हैं।' मैं जानती थी कि तुम मेरा छुआ कुछ नहीं खाओगी इसलिए मैं फल ही लाई हूँ।'

'मुझे भूख नहीं है', सावित्री बोली।

पोन्नी उसे तरह-तरह से मनाने और समझाने लगी। तो उसने बताया, 'बात यह है कि मैंने फैसला किया है कि मैं वह कोई भी चीज स्वीकार नहीं करूँगी जिसे मैंने खुद नहीं कमाया है।' यह कहते हुए झिझक भी हुई लेकिन कोई चारा नहीं था।

'यह तो तुमने बड़ी मजेदार बात कही। इन मुलायम हाथों से तुम क्या काम करोगी? और अगर मैंने तुमसे अपने लिए कुछ कराया तो मैं तो नरक में भेज दी जाऊँगी...।'

'यह बेवकूफ़ी की बात है। तुम मुझे भूखे नहीं देखना चाहतीं तो कुछ काम दो मुझे...मैं खाना बना सकती हूँ, सफाई कर सकती हूँ, सी-पिरो सकती हूँ। थोड़ा-बहुत बगीचे का काम भी आता है...कभी मेरा अपना बगीचा हुआ करता था, बहुत सुंदर। मैं बच्चों की देखभाल कर सकती हूँ। तुम्हारे बच्चे नहीं हैं?'

'अभागी हूँ मैं। शादी को बीस साल हो गये और मैं सभी देवी-देवताओं की मन्नत मान चुकी हूँ, लेकिन अभी तक मेरी गोद नहीं भरी है।'

'कितने अफसोस की बात है। मेरे तीन बच्चे हैं। बेटा तेरह साल का है। बहुत समझदार है और बिजली के काम के बारे में बहुत कुछ जानता है। दो लड़कियाँ स्कूल में पढ़ रही हैं...बहुत अच्छी हैं दोनों।'

'अम्मा, आप भाग्यवान हो। भगवान आपकी रक्षा करेगा। आपके सामने पहाड़ जैसी यह समस्या आ खड़ी हुई है, ओस की तरह गायब हो जायेगी।...बहना, ये नारियल पी लो। तुम्हें इस तरह देखकर मेरा दिल फटा जाता है। पानी में इतनी देर रही हो...।

'मुझे भूख नहीं है,' सावित्री ने कहा।

पोन्नी अपने पति के पास पहुँची। वह अपने काम में लगा था। उसने एक चरखी की मरम्मत की थी और ग्राहक से पैसों के बारे में बहस कर रहा था। पोन्नी उसे एक तरफ ले गई और बोली, 'तुम्हारे गले में रस्सी डाल दूँ?'

'नहीं।'

'तो इस अम्मा का कुछ करो। सवेरे से भूखी है और मर गई तो पुलिस हत्या के इलज़ाम में तुम्हें पकड़ ले जायेगी। और यह ठीक ही होगा क्योंकि तुम ऐसे व्यवहार कर रहे हो जैसे उसे सँभालना अकेले मेरा ही काम है, तुम्हें कुछ नहीं करना है लेकिन उसे तुम्हीं तो लाये थे।'

'वह औरत है इसलिए मैंने सोचा कि मुझे उधर नहीं जाना चाहिए।'

'बड़े भले बनते हो! तुम औरतों से बात नहीं करते? उसके लिए कुछ काम तलाशो जिससे वह खाये और जिंदा रहे।'

'यहाँ मेरे साथ धौंकनी चलाये। यह अच्छा काम है।'

'तुम और क्या करवाओगे! अच्छी जात की औरत, इस कीड़ों से भरी धौंकनी को छुएगी। जब तक मैं वापस लौटूं, कोई ढंग का काम सोच रखना।' वह चलने को हुई, फिर मुड़कर बोली, 'अगर वह मर गई तो मैं पुलिस से यही कहूँगी कि तुमने मारा है, और याद रखना, पुलिस इसे मान भी लेगी।'

जब वह चली गई तो मारी ग्राहक से कहने लगा, 'मैं अक्सर सोचता हूँ कि पुलिस सचमुच मुझे पकड़ ले और फाँसी पर चढ़ा दे, इस औरत के साथ रहने से तो वही अच्छा है।'

'पुलिस तुम्हें क्या फाँसी पर चढ़ायेगी?'

‘घर में एक पागल औरत है जो तब तक कुछ नहीं खायेगी, जब तक खुद काम करके कुछ कमा न लेगी। आजकल तो मर्दों को ही काम के लाले पड़े हैं।’

‘किस तरह की औरत है वो?’

‘जा के खुद देख आओ।’

ग्राहक भीतर गया और देखकर वापस लौट आया। बोला, ‘बड़ी खूबसूरत है। कोई भी शादी के लिए तैयार हो जायेगा। मैं ही कुछ दे दूँगा।’ यह कहकर उसने एक भद्दा मज़ाक किया।

ग्राहक को निबटाने के बाद मारी घर में गया और पत्नी से बोला, ‘मैं जाकर पता लगाता हूँ कि इसके लिए कोई काम मिलता है या नहीं। लेकिन यह कर क्या-क्या सकती है?’

‘खाना बना सकती है, झाड़ू-पोछा कर सकती है, सिलाई का काम कर सकती है। औरतों वाले सभी काम करने को तैयार है। और हाँ, बगीचे का काम भी कर सकती है।’

मारी बाहर चला गया।

वह घर से तो बड़ी फुर्ती से निकला लेकिन सड़क पर आकर ठिठक गया, क्योंकि किया क्या जाय, यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। वह यह भी नहीं जानता था कि काम कैसे ढूँढ़ा जाता है, औरतों के लिए ढूँढ़ना तो बड़ी दूर की बात थी। उसे लोहारी का अपना काम पुरखों से मिला था और कभी काम के लिए किसी से कहने की जरूरत नहीं पड़ी थी, और अब एक औरत के लिए काम ढूँढ़ने जाना पड़ रहा था...। यह सोचकर उसे परेशानी हुई। क्षण भर के लिए उसने यह भी सोचा कि उसे नदी में बह जाने दिया होता तो इस वक्त वह आज़ाद होता—अगर उसकी किस्मत अच्छी होती तो वह बच जाती, अगर मरना होता तो हर कोशिश के बाद भी जिंदा न बचती, और वह अपने से कहने लगा कि अगर वह उसे अकेला छोड़ देता तो उसकी मौत के लिए कोई उसे जिम्मेदार भी नहीं ठहराता। उसे अपनी पत्नी पर गुस्सा आया कि बेकार उसके लिए चिंता कर रही है। उसे अकेला क्यों नहीं छोड़ देती? अगर उसे खाना नहीं है तो वह जाने। औरतों को ज्यादा आज़ादी देने का यही नतीजा होता है; अगर उन पर पूरा नियंत्रण रखा जाय तभी वे ठीक रहती हैं। उसे खुद पर गुस्सा आने लगा कि वह बीवी के सामने लाचार क्यों हो जाता है...

पोन्नी ने भीतर से झाँककर कहा, ‘सड़क पर खड़े पूजा कर रहे हो?’ मारी सिर घुमाये बिना आगे बढ़ने लगा ‘चलना तो शुरू कर दिया। लेकिन जाओगे कहाँ?’ उसने पूछा।

मारी चिल्लाकर बोला, ‘यह मुझ पर छोड़ दो और तुम भीतर जाओ’, और पत्नी से इस तरह बोलने के लिए खुश भी हुआ। आगे जाकर वह रंगन्ना की दुकान पर रुका। वह अक्सर दुकान के चबूतरे पर बैठकर रंगन्ना और उसके ग्राहकों से गपशप करता था, अब उसे यह भी उम्मीद हुई कि शायह वह कुछ रास्ता सुझा सके।

रंगम्मा ने मारी से ठंडा व्यवहार किया लेकिन मारी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। वह उछलकर चबूतरे पर जा बैठा और बोला, ‘कैसे हो मेरे भाई, सब ठीक-ठाक है?’

रंगम्मा ने जवाब में कहा, 'अगर तुम्हारी बीवी यहाँ फिर आई तो मैं उसे पुलिस में दे दूँगा।'

'यह तो बड़ी भारी बात कह रहे हो तुम...उसने क्या किया है?'

'तुम पर अभी एक आना उधार है जो पता नहीं कब चुकाओगे। और यह महारानी ऐसे आती है जैसे उसी की दुकान हो...'

मारी समझ गया कि दोस्ती का वक्त नहीं है। उठता हुआ बोला, 'तुम ज़रा ज्यादा बोलते हो। लगता है, रात को तुम्हें खाँसी हो जायेगी। तुम में तो इतनी भी हिम्मत नहीं कि दुकान से कुछ भी ले जाती किसी औरत को रोक सको। अब मुझसे शिकायत क्यों करते हो?'

वह कई गलियाँ और चौराहे पार करता हुआ ब्राह्मण स्ट्रीट में आ पहुँचा। यह औरत ब्राह्मण थी, इसलिए यहाँ कोई उसे काम दे देगा। सड़क के सिरे पर खड़े होकर वह मकानों को ध्यान से देखने लगा कि किस मकान में जाना ठीक रहेगा। पहले में बड़ा ज़मींदार था जिसके घर में पोन्नी ने कई दफा काम किया था; उसमें टीचर रहता था जिससे मारी परिचित था क्योंकि उसके कुएं की चरखी उसने कई दफ़ा ठीक की थी, और उतनी ही दफा चूता हुआ बर्तन भी रांगे से जोड़ा था; सामने वाले में वह जवान सा जमींदार था जिसका मिजाज बहुत गरम था; बगल वाले घर में उसी का साला रहता था; फिर पुलिस इन्स्पेक्टर का मकान; फिर उसका जिसने बड़े जमींदार की दूसरी लड़की से शादी की थी; फिर गाँव के खजांची का मकान...

यहाँ उसे निराशा ही हाथ लगी। बड़े जमींदार के घर भागी हुई औरत के लिए कोई जगह नहीं थी, टीचर इतना पैसा नहीं कमाता था कि मेहमान या नौकर रख सके; जवान जमींदार का भी हाथ इन दिनों तंग था, और पुलिस इन्सपेक्टर के घर में घुसते-घुसते मारी ठिठक गया, 'इन लोगों से तो दूर ही रहना सही है'—उसके भीतर से आवाज़ आई।

मारी गाँव की सभी सड़कों पर घूमा, जो भी मिला, उससे बात की लेकिन कहीं से कोई मदद नहीं मिली। लोग रुचि तो दिखाते थे, पूछताछ भी करते थे, उत्तेजित भी हो उठते थे, कुछ उसके साथ जाकर उसे देखने के लिए भी उत्सुक हो उठते थे, लेकिन काम देने की बात किसी ने नहीं की—कुछ ने दान जरूर देना चाहा।

बिलकुल निराश होकर मारी घर लौटने लगा। उसने तय किया कि धौंकनी चलाने की बात वह फिर करेगा। गाँव के पुराने मंदिर के सामने से गुजरते हुए उसने रुककर भगवान से बड़ी श्रद्धा से प्रार्थना की कि कोई रास्ता सुझायें और एक विचार उसके दिमाग़ में कौंध गया।

मंदिर का बूढ़ा पुजारी उसी सड़क पर रहता था। वह घर के सामने चबूतरे पर बैठा नाती-पोतों के साथ खेल रहा था। मारी उसके सामने झुककर बोला, 'बड़े स्वामी जी, बहुत-बहुत प्रणाम!'

'कौन हो तुम?' बूढ़े ने पूछा और आँखें आधी बंद करके पहचानने की कोशिश की।

'मैं मारी हूँ स्वामी जी, आपका गुलाम।'

'अच्छा मारी हो, गुंडे बदमाश', बूढ़ा बोला।

'मैंने क्या अपराध किया है जो इतने खफ़ा हो रहे हैं, महाराज?'

'मैंने लड़के को तीन दफ़ा तुम्हारे यहाँ भेजा और तीनों दफ़ा तुम हाँ करके नहीं आये। झूठे कहीं के! आखिर एक ज़रा सा काम था, मामूली सी मरम्मत करनी थी।'

'स्वामी, मेरे पास तो कोई नहीं आया। मैं कसम खाकर कहता हूँ कि ज़रा भी आवाज़ मेरे पास पहुँच जाती तो मैं सौ काम छोड़कर उलटे पैरों यहाँ दौड़ा आता। किसको भेजा था आपने?'

'मैं किसी को क्यों भेजता? ज़रा सा काम था, तो मैंने सोचा कि तुम मंदिर आओगे तो तुमसे बात कर लूँगा। लेकिन तुम तो भगवान के पास भी नहीं फटकते, इसीलिए तुम्हारी बीवी को बच्चा नहीं होता। मुरुगन की कृपा के बिना तुम कैसे उन्नति कर सकते हो?'

'आप बड़ी ज्ञान की बात कह रहे हैं। मैं वादा करता हूँ कि इसके बाद हफ्ते में दो दफा मंदिर आऊँगा और महीने में एक दफा नारियल भी चढ़ाया करूँगा। मैं तो आपके हुक्म का बंदा हूँ।'

बूढ़ा पुजारी इन चिकनी-चुपड़ी बातों से पिघल गया। बोला, 'तुम जैसे कारीगर के लिए दस मिनट से ज्यादा का काम नहीं है। अच्छा, एक मिनट रुको।'

'आपका हुक्म सिर माथे पर,' मारी ने कहा।

बूढ़ा चबूतरे से उठा, झुर्रीदार हाथों से आँखों के ऊपर साया करके मारी पर नज़र डाली और बोला, 'तुम भी बहुत सही नज़र नहीं आ रहे, पहले से आधे रह गये हो।' नज़र कमजोर होने के कारण ही बूढ़े को मारी कमजोर दिख रहा था, लेकिन भद्रता के लिहाज़ से मारी को उसकी बात मानना जरूरी लगा, इसलिए वह बोला, 'मेरी भी उम्र हो रही है। तरह-तरह की परेशानियाँ और मुश्किलें हैं...।'

बूढ़ा भीतर गया और आधे घंटे बाद तीन पुराने छाते लेकर लौटा; उसके पीछे एक लड़का था—जो गोशाला की सफाई वगैरह करता था—जिसके सिर पर एक टोकरे में बहुत सारी टूटी-फूटी चीजें भरी थीं। उसने बड़ी मुश्किल से छाते खोले और बोला, 'ये एक तरह से नए छाते हैं, और इनकी एकाध तीली ठीक कर दी जाय या बदल दी जाय तो पूरे दस साल और चलेंगे। मैं लड़कों से कहता रहता हूँ कि तुमसे ठीक करा लायें लेकिन झूठ बोलते रहते हैं या टालते रहते हैं। सब साले मक्कार हैं।'

'मैं इन्हें एकदम नया कर दूँगा', मारी बोला। वह छातों की जाँच करता सोचता रहा कि इन्हें ठीक करने में तो घंटे लग जायेंगे, और पैसों के मामले में बूढ़ा महा कंजूस है।

फिर टोकरे में से बूढ़े ने बहुत से हुक, चार पीतल के ताले, एक कांसे की बाल्टी और एक भोथरा हँसिया निकाला, जिनको मारी की सेवा की जरूरत थी। मारी ने सोचा 'पूरे दो दिन का फालतू काम' लेकिन कहा यह, 'स्वामी, इन सबको बढ़िया बना दूँगा।'

'अब यह बताओ कि इस सारे काम का क्या लोगे?'

'आप जो चाहें दे देना। मुझे तो आपका आशीर्वाद चाहिए।'

'और टाइम कितना लगेगा?'

'तीन दिन लगेंगे, स्वामी।'

‘एक दिन में नहीं कर सकते?’

‘जरूर कोशिश करूँगा’, मारी ने जवाब दिया, और फिर अपने विषय पर आ गया। बोला, ‘स्वामी, आप देवता के मंदिर की सफाई और बगीचे की देखभाल के लिए कोई आदमी क्यों नहीं रख लेते?’

‘नहीं’, बूढ़े ने कहा। मैं यहाँ किसलिए हूँ?’

‘अहा,’ निराशा के कारण मारी का दिमाग तेज़ होने लगा था। ‘आपको तो देवता की पूजा करनी होती है, ये काम आप क्यों करें?’ फिर सावित्री के बारे में उसे बताया।

‘उससे तुम्हारा क्या लेना-देना है?’ बूढ़े ने प्रश्न किया।

‘स्वामी, कुछ भी नहीं, बस यह कि मैंने उसे अपनी झोपड़ी में सहारा दिया है।’

‘क्यों दिया है। सहारा?’

‘इसकी वजह क्या बताऊँ! कभी-कभी किस्मत हम पर ऐसी जिम्मेदारी भी डाल देती है।’

‘तुम्हें उसकी फिक्र क्यों है?’

‘दरअसल मुझे कोई फिक्र नहीं है, मेरी बीवी ने उसका जिम्मा ले लिया है। उसी का यह काम है और जब तक मैं उसके लिए कोई काम नहीं ढूँढ़ देता, मुझे चैन से नहीं बैठने देगी।’

‘अगर वह तुम्हें चैन से नहीं बैठने देती तो उसकी ठुकाई कर डालो। औरतों को सही रखने का यही ढंग है। आजकल के तुम लोग बिलकुल नपुंसक हो और अपनी औरतों को काबू में नहीं रख पाते।’ यह चुटकी काट कर बूढ़ा बोला, ‘मैं किसी औरत को मंदिर में नहीं रखूँगा। वह कुछ न कुछ करतब कर दिखायेगी और मंदिर का नाम बदनाम हो जायेगा।’ मारी ने जहाँ तक हो सकता था, उसके चरित्र का विश्वास दिलाया लेकिन बूढ़ा मानने को तैयार ही नहीं था। ‘उसके चरित्र में जरूर कोई ऐसी बात होगी कि उसे घर छोड़ना पड़ा और बाहर निकलकर रोजी-रोटी ढूँढ़नी पड़ रही है। उसके पति ने उसे निकाल दिया होगा। और कोई पति अपनी औरत को घर से क्यों निकालता है?’

मारी ने कहा, ‘मैं जानता हूँ कि किसी दुख के कारण वह घर छोड़ आई है।’ उसने सबको यही बताया था कि सावित्री गाँव के बाहर घूमती मिली थी, उसने किसी को उसके मिलने की सच्ची घटना नहीं बताई थी, नहीं तो उसी पर शक किया जाता कि इतनी रात वह वहाँ क्या कर रहा था। ‘उसने तय कर लिया है कि खाना तभी खायेगी जब कोई काम करने लगेगी। पागलों की तरह वह इस निश्चय पर अटल है। भूखी पड़ी है और फल भी नहीं खा रही। मुझे डर है कि मेरे ही घर में उसकी मौत न हो जाये।’

बूढ़ा बोला, ‘घर से बाहर निकाल दो और फिक्र छोड़ दो।’

मारी की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसने सोचा कि इसी के कामों की याद दिलाकर बात बनाई जाय। बोला, ‘मैं आपका सब काम एक ही दिन में कर दूँगा, और भी कुछ होगा तो उसे भी कर दूँगा, लेकिन इस औरत को मंदिर में जरूर रख लें।’

‘हमारे अनाज की हाँडियों के लोहे के हत्थे ढीले पड़ गये हैं। उन्हें भी ठीक कर दोगे?’

'जी स्वामी, और आप काम का एक आना भी मत देना। सिर्फ इस औरत को रख लेना।'

'मुझे नौकर रखने से कोई परहेज़ नहीं है लेकिन इनके लिए पैसा कहाँ से आयेगा? तुम लोग अब देवता को भेंट भी नहीं चढ़ाते। तुम्हारे बाप-दादा के जमाने में मैं मंदिर के लिए ऐसे दस नौकर रख सकता था, लेकिन आजकल तुम लोग फोकट में भगवान की पूजा करना चाहते हो, न कोई भेंट, न नारियल का टुकड़ा।'

मारी ने विश्वास दिलाया कि वह खुद तो धर्म-कर्म ज्यादा करेगा ही, अपने परिचितों में भी मंदिर के लिए श्रद्धा पैदा करेगा। फिर बोला, 'उसकी माँग ज्यादा नहीं है। गुजारे भर के लिए कुछ देना, उसी से संतुष्ट हो जायेगी। सिर्फ चावल भी चलेगा लेकिन रख जरूर लें। इस कृपा के लिए मैं हमेशा आपकी गुलामी करूँगा।' इसके बाद वह हुकों और छातों को बहुत ध्यान देकर उलटने-पुलटने लगा, 'इन सबको काम की जरूरत है।'

पुजारी बोला, 'मैं उसे आधा मन चावल और हर रोज़ का एक पैसा दूँगा, इस पर वह तैयार हो जायेगी?'

'मेरा ख्याल है, हो जायेगी, स्वामी।'

'फिर ठीक है। उसे यहाँ ले आओ। मैं पहले एक नजर देखूँगा, कुछ बुराई नहीं दिखाई दी—जानते हो, मुझे कोई धोखा नहीं दे सकता, मैं एक नजर में हर किसी को भाँप लेता हूँ—तो मैं उसे रख लूँगा। लेकिन जितना कहा है, उससे एक दाना ज्यादा चावल नहीं दूँगा।'

पोन्नी ने सावित्री को बताया, 'मेरे पति ने तुम्हारे लिए कुछ काम ढूँढ़ लिया है। पता नहीं तुम्हें यह अच्छा भी लगेगा या नहीं। मुझे यकीन है कि अगर वह ज़रा ज्यादा अक्ल से काम लेता तो इससे अलग काम ढूँढ़ सकता था।'

मारी ने जोर देकर कहा, 'मैं सब देवी-देवताओं की कसम खाकर कहता हूँ कि इससे अच्छा काम मुझे नहीं मिला। मैंने सब जगह तलाश किया और जो मिला उससे बात की।'

'तुम यह बताने वाले कौन हो कि अम्मा के लिए कौन सा काम अच्छा है?'

'ऐसा कुछ तो मैंने कहा ही नहीं। यही कहा कि बड़े से लेकर छोटे तक हर आदमी से बात की।'

'तुम यह कहना चाहते हो कि जो काम तुमने ढूँढ़ा है वही अम्मा के लिए सबसे अच्छा है?'

सावित्री ने अब बीच में दखल देकर कहा, 'कोई भी काम जिससे मेरी जान मेरे बदन में बनी रहे—हालांकि क्यों बनी रहे, यह मैं नहीं जानती—मेरे लिए ठीक है। मैं रोज़ अपना पेट भरने के लिए किसी पर निर्भर रहना नहीं चाहती।'

'अम्मा, आप बड़ी सख्त बातें बोलती हो। आपकी जिंदगी में पहाड़ की तरह जो इतना बड़ा दुख पैदा हो गया है, वह ओस की तरह सूखकर उड़ जाय भगवान से मैं यही प्रार्थना करती हूँ। सब देवी-देवता आपकी आत्मा के दर्द को दूर करें।' इस भूमिका के बाद पोन्नी ने सावित्री को उसके लिए ढूँढ़े गये काम का ब्योरा दिया।

सावित्री बहुत खुश थी। उसे अपने सामने एक नई जिंदगी खुलती नजर आ रही थी। उसने सोचा कि मंदिर में देवता की सेवा करने से ज्यादा अच्छा काम और क्या होगा! आधा मन चावल भी उसकी जरूरत से ज्यादा ही होगा। इतने से उसका काम अच्छी तरह चल जायेगा। वह ईश्वर की सेवा में तन-मन अर्पित कर देगी, अपनी यादों और भावनाओं को सुन्न कर देगी, दुनिया को भूल जायेगी और जीवन के शेष वर्ष यहीं बिता कर मर जायेगी। पति, घर, बच्चे, सबको हमेशा के लिए छोड़ देगी। लेकिन बच्चे...। इनके प्रति वह अपने मन को कड़ा कर लेगी। वह रात-दिन भगवान से उनके लिए प्रार्थना करेगी, और वे उनकी रक्षा करेंगे। बच्चे बड़े होंगे, पढ़ेंगे-लिखेंगे, अपने-अपने ढंग से जिंदगी जियेंगे, और भाग्य को उनके लिए जो भी मंजूर होगा, उसके अनुसार जीवन बितायेंगे। लेकिन बच्चों के लिए इतना मोह क्यों...जो खत्म ही नहीं होता। हर व्यक्ति को अपना कर्तव्य करना चाहिए और शेष की चिंता नहीं करनी चाहिए। क्या पक्षी और पशु अपने बच्चों को, जिस दिन से वे उड़ने और चलने लगते हैं, उन्हीं के ऊपर नहीं छोड़ देते? फिर वही रात-दिन अपने बच्चों की चिन्ता क्यों करती है? बाबू, सुमति और कमला, तीनों अब काफी बड़े हो गये हैं—बस, कमला ही नहाने और खाने में परेशानियाँ पैदा करती है। इससे उसका विकास सही नहीं होगा—वह गंदी और दुर्बल जो जायेगी! लेकिन अब उसे इसकी चिंता छोड़ देनी चाहिए। बच्चे अब उसके हैं। उसी ने उनके पैदा होने पर और बाद में खाने-पीने और कपड़ों पर खर्च किया है।

उसने कहा था कि मुझे उनको जगाने का अधिकार नहीं है। वह यह सब सोच रही थी कि पोन्नी आकर बोली, 'मैडम, काम पसंद नहीं आया?'

'आया...बहुत पसंद आया। अब हम वहाँ कब जायेंगे?'

'कल सवेरे। अब देर हो गई है...। अब मैं आपसे विनती करती हूँ कि और भूखी न रहें, कुछ खा लें, दो केले खाकर नारियल का पानी पी लें। रात को यहीं आराम करें। आज रात भर भी आप मेरी सेवा स्वीकार कर लेंगी तो मुझे बहुत खुशी होगी। फिर कल सवेरे वहाँ चली जायें।'

यह प्रार्थना करते हुए पोन्नी की आँखों में आँसू भर आये थे। 'मैं आपके पैरों पर लोट जाऊँगी और जब तक आप 'हाँ' नहीं कहेंगी, उठूँगी नहीं।'

सावित्री बोली, 'ठीक है। खा लूँगी।'

अपनी कमाई का ही खाने का विचार सावित्री की मनोग्रंथि बन गया था, इसलिए अब केले और नारियल का नाश्ता करने के लिए उसे किसी बहाने की जरूरत थी। उसने अपने मन को यह कहकर समझाया कि यह आखिरी बार वह किसी और का दिया खायेगी और यह भी कि उसका कर्तव्य बनता है कि पोन्नी की भावनाओं का आदर करे। उसने अपने मन से कहा कि भूख खाने का आखिरी कारण है।

दूसरे दिन सवेरे मारी और उसकी बीवी सावित्री को पुजारी के यहाँ ले गये। सावित्री ये सब काम बिना कुछ बोले करती रही, जैसे यथार्थ से उसका संबंध समाप्त हो गया था। गाँव की सड़कों पर अपरिचित व्यक्तियों के साथ आगे बढ़ती, नौकरी की तलाश में कालेज से निकले छात्र की तरह सावित्री साउथ एक्सटेंशन की पुरानी सावित्री, अमुक की पत्नी नहीं

रही थी। उसकी सहेली गंगू भी इस तरह का काम नहीं कर सकती थी।

तीनों पुजारी के घर पहुँच गये। मारी ने आवाज़ लगाई, 'स्वामी जी, बड़े स्वामी जी महाराज!' थोड़ी देर बाद एक छोटा सा लड़का बाहर निकल कर आया और बोला, 'बाबा पूजा कर रहे हैं, कह रहे हैं कि शोर मत मचाओ।'

काफी देर बाद पुजारी कंधे पर लाल रंग का शाल डाले, बाहर निकला। आराम से चबूतरे पर बैठकर बोला, 'मेरी पूजा खत्म होने तक इन्तज़ार नहीं कर सकते थे? तुम जैसे लोगों के कारण आराम से पूजा करना भी संभव नहीं रहा। ज़रा देर बाद नहीं आ सकते थे? ठीक है, जो हुआ उसे अब भूल जाओ। तुम उस औरत के लिए ही आये हो? मैं ठीक कह रहा हूँ न?'

'आप ठीक कह रहे हैं स्वामी महाराज। हम उसी को लेकर आये हैं।'

बूढ़ा हँसने लगा, उसे खुशी हुई कि उसने इनका मकसद सही-सही पहचाना है। उसने आँखों पर हथेली से साया करके पोन्नी की तरफ घूरकर देखा और पूछा, 'यही औरत है वो?' और साथ ही जोड़ा, 'क्या मामला है मैडम, आप अपना घर क्यों छोड़ आई हैं?'

'यह तो मेरी बीवी है—पोन्नी, इसे काम नहीं करना है। यह तो अम्मा के साथ आई है। वो ये हैं...,' और सावित्री से फुसफुसाकर बोला, 'मैडम, ज़रा इस तरफ आगे आ जाइये, स्वामीजी आपको देख तो लें।' सावित्री ने जगह बदली, उसे इस तरह अपनी नुमाइश अच्छी नहीं लग रही थी। पुजारी बोला, 'इस तरह छिपना है तो यहाँ आने की क्या जरूरत थी? पास आओ। एक नज़र तुमको देख तो लूँ। मैं किसी को भी देखे बिना कोई फैसला नहीं करता, और मुझे कोई धोखा नहीं दे सकता। मैं एक नज़र में आदमी को पहचान लेता हूँ, समझ में आया? पास आओ।' सावित्री को शर्म आने लगी, उसने सिर झुका लिया, इस तरह अपना प्रदर्शन करना उसे परेशान कर रहा था, सूरज की चमकती किरणें उसके आधे हिस्से पर पड़ रही थीं...

बूढ़े ने उसे देखकर ताज्जुब किया कि इस तरह की औरत बेघर होकर सड़कों पर घूम रही है। फिर उसने एक के बाद एक सवाल पूछना शुरू किया जिनके उत्तर सावित्री नहीं दे पा रही थी। दो-एक दफा जब उसने उत्तर देने के लिए ओठ खोले तो वह काँपने लगी और एक भी शब्द बाहर नहीं निकला। इस पर पोन्नी ने दखल दिया और बोली, 'स्वामी महाराज! आप ये सवाल क्यों पूछ रहे हैं? इनसे तो उसके घाव हरे हो जायेंगे।'

मारी ने उसे रोकने की कोशिश की। फुसफुसाकर बोला, 'तू चुप कर। स्वामी नाराज़ हो जायेंगे।' पोन्नी ने इसका जवाब जोर से दिया, 'तू चुप कर, मैं तो अपने महाराज से बातें जरूर करूँगी।' बूढ़े से बोली, 'मैं आपसे बातें करूँ तो नाराज़ तो नहीं होंगे?'

'तुम कौन हो? अच्छा, हाँ, तुम...मैं समझ गया। अरे, मैं नाराज़ क्यों होऊँगा? मुझसे तो कोई भी बात कर सकता है। मैं तो भगवान का सेवक हूँ। बूढ़ा आदमी हूँ।'

यह कहने से वह सावित्री से क्या बात कर रहा था, यह भूल गया। पोन्नी कहने लगी, 'महाराज जी, मैं आपकी पोती की तरह हूँ इसलिए साफ़-साफ़ बात करूँगी। भगवान ने मुझे अच्छी ज़बान नहीं दी है। मन में जो आता है, वही कह देती हूँ।'

'बिलकुल ठीक है। आदमी को सच ही बोलना चाहिए', बूढ़े ने कहा।

'मैं यही करूँगी। आप मुझे एक बात बताइये, आप मैडम को रखेंगे या नहीं?'

'नहीं रखूँगा', उसने झट से कहा।

'तो हम जा रहे हैं। चलो मेरे साथ', पोन्नी ने कहा। सावित्री को निराशा हुई। लेकिन मारी ने बूढ़े से माफी माँगी, 'नाराज़ न हों महाराज, उसका यह मतलब नहीं था।'

पोन्नी बोली, 'यही मतलब है। आप कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं। आपकी किस्मत में ही नहीं है कि इस जैसी मैडम आपके मंदिर की सेवा करे। एक और बात सुन लो—किसी को भेजकर अपनी छतरियाँ और कूड़ा-करकट वापस मँगवा लो। अगर फौरन किसी को नहीं भेजा तो मैं सब चीजें नाले में फेंक दूँगी...।'

यह धमकी सुनकर बूढ़े को होश आ गया। कहने लगा, 'तू तो बड़ी जल्दी नाराज़ हो गई। यह किसने कहा कि इसे नहीं रखा जायेगा?'

'आप ऐसी बातें क्यों पूछते हैं जिनसे आदमी को तकलीफ हो?'

'इसलिए कि यह जान सकूँ जिसे मैं रख रहा हूँ, वह सही तो है।'

'लेकिन महाराज, पूछने का आपका ढंग गलत है। मुझे आपसे यह नहीं कहना चाहिए क्योंकि आप ज्ञानी हैं, विद्वान हैं, जबकि मैं एक मूरख औरत हूँ। आप उसे देख सकते हैं और विश्वास करके, हमारे ऊपर भरोसा करके रख सकते हैं...और कभी उसमें कोई बुराई देखें तो निकाल सकते हैं। लेकिन ऐसे सवाल आपको नहीं पूछने चाहिए, जो दूसरे को दुख पहुँचायें।'

'मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि इसने घर क्यों छोड़ा। यह जाने बिना मैं उसे मंदिर में कैसे रख सकता हूँ? उसके कारण मंदिर की बदनामी होगी...।' सावित्री इस बात का अर्थ समझकर काँपने लगी।

पोन्नी बोली, 'किसी के घर छोड़ने की सैकड़ों वजहें हो सकती हैं। अगर मेरा यह आदमी कुछ ऐसा-वैसा करे तो मैं भी घर छोड़ दूँगी, और इसके बाद यह मुझे कभी नहीं देख पायेगा, और जो भी मुझसे क्यों किया, कब किया, क्या-क्या हुआ, क्या-क्या नहीं हुआ, वगैरह सवाल पूछेंगे, उन सबको मैं जवाब दे लूँगी। आप हमसे हर तरह के काम करवा लेना चाहते हैं...हम क्यों करें? सिर्फ इसलिए कि आप हमें जानते हैं। और आप हमारे लिए ज़रा सा भी कुछ करने को तैयार नहीं हैं।'

'भली औरत, मैंने तो यह नहीं कहा कि नहीं करूँगा।'

'आप इन्हें रखेंगे या नहीं? हमें सिर्फ यही जानना है?'

'जरूर रखूँगा। अब मैं बूढ़ा हो रहा हूँ। सचमुच चाहता हूँ कि कोई मंदिर की देखभाल करे।'

पचास साल पहले यह मंदिर किसी परोपकारी व्यक्ति ने गाँव में बनवाया था और शिवजी के छोटे पुत्र सुब्रह्मण्य, जो मोर पर विराजमान हैं, को समर्पित किया था। इस छोटे से ईंट और गारे के मंदिर के सिर पर गोलाकार शिखर था, जो अब मौसम और समय की मार सहकर बदरंग हो गया है, चारों ओर गोल छज्जेदार बरामदा था, और सामने चहारदीवारी

तक बड़ा मैदान था।

सावित्री और उसके साथी मंदिर के सामने खड़े थे, बूढ़ा पुजारी चाबियों का गुच्छा सँभाले दरवाजे पर लगे भारी ताले से उलझ रहा था। भीतर एक काई-लगा भूरा मोर था जो किसी जमाने में प्लास्टर के सफेद रंग से चमक रहा होगा। पुजारी ने सीने से धक्का लगाकर दरवाज़ा खोला, उसके दोनों पाट कराहते हुए धीरे-धीरे खुल गये।

'भीतर आ जाओ। सारा दिन वहीं ताकते हुए खड़े मत रहो,' पुजारी बोला और भीतर चला गया।

'स्वामीजी, आप मीठी ज़बान क्यों नहीं बोलते?' पोन्नी ने छींटा मारा।

'चुप रह', मारी ने कहा। 'उनका मतलब कुछ गलत नहीं है। इस तरह ज़बान चलायेगी तो गड़बड़ कर देगी।'

पोन्नी पति की तरफ पलटकर बोली, 'तू जाकर अपना काम कर। समझ में आयी,' मारी झिझका तो वह चिल्लाई 'अब दफ़ा हो यहाँ से। हम अपनी देखभाल कर लेंगे। जाके कुछ कमाई कर। लोग तेरा इन्तज़ार कर रहे होंगे। यहाँ आँखें फाड़कर देखता खड़ा मत रह।'

'जब तक मंदिर न खुल जाय और मैं देवता के सामने प्रार्थना न कर लूँ, जिससे मेरा काम भी अच्छा हो...तब तक तो मुझे रुक लेने दे, भागवान!'

'ठीक है। वहाँ जाकर बैठ जा। बक-बक करता हमारे पीछे मत डोल। वहीं इन्तजार कर और मंदिर खुले तो पूजा करके एकदम गायब हो जा। मेरी बात तेरी समझ में आई या नहीं?'

मारी कुछ भुनभुनाया और दीवार के पास जाकर बैठ गया। पोन्नी बोली, 'गुस्सा करने की जरूरत नहीं है।' फिर सावित्री से कहने लगी, 'आओ मैडम, इसकी बातों पर ध्यान मत देना। यह नहीं जानता कि जब इज्जतदार आदमी पास हो तो कैसे व्यवहार करना चाहिए।' पुजारी मंदिर का एक चक्कर लगा कर वापस आ गया था। वह गुर्राया, 'क्या तुम्हें बार-बार कहना पड़ेगा, 'आओ...आओ'? मैं तो मंदिर का चक्कर लगा रहा हूँ और बातें करता जा रहा हूँ, कि तुम लोग पीछे चल रहे होगे और सुन रहे होगे, लेकिन तुम अभी तक यहीं डटे हो!'

'दोबारा वे बातें यहीं हमें बता देंगे तो आपका कुछ बिगड़ नहीं जायेगा!'

'यहाँ?' पुजारी ने हाथ उठाकर कहा। 'यहाँ तुम्हें क्या बताऊँ? मैं सब जगह जा-जाकर तुम्हें यह बता रहा था कि कहाँ क्या-करना है, और तुम यहाँ मज़े कर रहे हो। तुम लोग मुझे किसी दिन मार डालोगे, इसके चारों तरफ घूम-घूम कर मैं पागल हो जाऊँगा। अब मैं जवान नहीं हूँ। यह हमेशा याद रखना।' वह लँगड़ा-लँगड़ाकर ईंटों से बनी पटरी पर चलने लगा, सावित्री और पोन्नी उसके पीछे चलीं। कई जगह कुछ-कुछ दिखाकर कहा 'यहाँ की अच्छी तरह सफाई करनी पड़ेगी।' गंदगी के हर ढेर पर रुककर वह कहता, 'यह यहाँ नहीं होना चाहिए। समझ में आया? इसी का तुम्हें पैसा दिया जायेगा।'

जब वे पटरी की उस जगह पर आये जहाँ एक बहुत बड़े पेड़ की डालियाँ फैली हुई थीं, वह आधे घंटे तक जमीन पर पड़ी एक-एक पत्ती को दिखाकर बताता रहा कि इनके कारण यहाँ कितनी गंदगी हो गई हैं। 'मैंने इन बदमाशों से कितनी दफ़ा कहा कि पेड़ का

कुछ करें लेकिन कुछ करते ही नहीं। मैं किसी दिन ये सब शाखाएं कटवा दूँगा—फिर वे मुझे भले ही अदालत में ले जायें। मैं वकीलों पर अपनी सारी जायदाद खर्च करने को तैयार हूँ।'

अब सावित्री की जुबान खुली, 'लेकिन क्यों? इन शाखाओं से तो यहाँ बड़ी अच्छी छांह हो जाती है?' 'तुम्हें छांह पसंद है?'

'जी, बहुत ज्यादा।'

'फिर ठीक है', बूढ़ा इस तरह बोला जैसे सावित्री की बात से फैसला हो गया। मुझे तुम्हारी बात अच्छी लगी लेकिन ध्यान रखना कि ज़मीन साफ-सुथरी रहे। इसी काम के लिए मैं तुम्हें आधा मन चावल और चौथाई आना रोज़ दूँगा। पत्तियों के इन ढेरों के नीचे कोबरा साँप हो सकते हैं लेकिन मैं नहीं चाहता कि दर्शन करने वालों को वे काट लें और वे मर जायें, साँपों के बिना भी लोग बहुत कम आते हैं।'

पत्थरों पर पड़े सूखे पत्ते उनके पैरों से दबकर खड़खड़ की आवाज़ कर रहे थे। दीवार के कोने में एक कोठरी सी थी जो लोहे और लकड़ी के तख्ते मिलाकर बना दी गई थी। एक टूटा-सा दरवाज़ा लगा था। बूढ़े ने ताला खोला और कहा, 'मेरा ख्याल है कि यहाँ तुम्हारा घर नहीं है।'

पोन्नी बोली, 'यहाँ घर होता तो आपके सामने क्यों आती?'

बूढ़े ने कहा, 'तुम चाहो हो यहाँ रह सकती हो। आओ, भीतर आकर देख लो। बुरी जगह नहीं है।' सावित्री भीतर घुसी। वहाँ एकदम अँधेरा था, रोशनी और हवा लोहे की चादरों के छेदों से ही भीतर आ रही थी। चूहे डरकर इधर-उधर भागने लगे, ऊपर पंखों की फड़फड़ाहट भी हुई जो पक्षियों और चमगादड़ों की हो सकती थी। कोने में सुनहरे रंग की एक चौकी, जिस पर बिठाकर देवता को जुलूस में ले जाया जाता था, मिट्टी के तेल के कुछ खाली कनस्तर और बोरे पड़े थे। एक कोने में मिट्टी का एक काला बड़ा सा चूल्हा पड़ा था। सावित्री ने बाहर निकलकर हवा में साँस ली। बूढ़ा बोला, 'तुम यहाँ अपना खाना बना सकती हो और जब काम न हो तो आराम कर सकती हो।...लेकिन याद रखना, यह तुम्हारे लिए खास सुविधा दे रहा हूँ, यह तुम्हारा अधिकार नहीं है। तुम्हारा अधिकार आधा मन चावल और चौथाई आने पर ही है, इस पर नहीं।'

'आप मुझे यह दान के रूप में दे रहे हैं?'

'और क्या! दान के रूप में दे रहा हूँ। तुम किसी से भी पूछकर देख लो, यह कमरा मैंने कभी भी किसी को नहीं दिया है।'

सावित्री बोली, 'तो मैं कमरा नहीं लूँगी। मैं किसी तरह काम चला लूँगी।'

'कैसे चला लोगी? तुम सोचती हो कि मैं मंदिर खुला छोड़ दूँगा जिससे तुम उसमें जाकर रह सको! यह मैं हरगिज़ नहीं करूँगा।'

'मुझे मंदिर नहीं चाहिए। मैं बरामदे में रह लूँगी।'

'यहाँ?' बूढ़े ने आश्चर्य से कहा और आसमान की तरफ देखा। 'इस धूप और हवा, बारिश में, और यहाँ कोई गुंडा-बदमाश भी दीवार फाँद कर आ सकता है...। नहीं, यह नहीं हो सकता। मंदिर को अपनी इज्जत बनाकर रखनी है। अगर तुम कमरे में रहने से इनकार

करोगी तो मैं तुम्हें रखूँगा ही नहीं, लेकिन इस पर तुम्हारा हक नहीं होगा।'

'तुम्हें यह पसंद न हो तो खाली वक्त बिताने के लिए मेरे घर आ जाया करना', पोन्नी ने सुझाव दिया।

उपकार! उपकार! सावित्री को लोगों के उपकार से डर लगने लगा। 'ठीक है, मैं कमरे में रहूँगी,' यह कहकर यह छोटा उपकार स्वीकार कर लिया।

बूढ़े ने पिछला दरवाज़ा खोला और उनको बगीचे में ले गया। चमेली और दो-चार दूसरे फूलों के पौधे इधर-उधर लगे थे। बाग के बीच में मिट्टी का एक कुआँ था।

'मुझे बताया गया है कि तुम बागवानी जानती हो। यहाँ तुम्हें साबित करके दिखाना है', बूढ़े ने आँखें खोलकर कहा। 'पानी बहुत है, चाहे जितना इस्तेमाल करो।'

पोन्नी ने विरोध किया, 'महाराज, इसका क्या मतलब हुआ? आप चाहते हैं कि यह चार आदमियों का काम करे। मंदिर में तो आपने पचासों काम गिना दिये, यह करो, यह भी करो; ठीक है, उसकी कोई शिकायत नहीं करेगा। लेकिन यह क्या, यह तो मंदिर नहीं है।'

'यह भी मंदिर का ही हिस्सा है। भगवान की पूजा के लिए हर दिन फूल नहीं चाहिए?'

'यह तो मैं जानती हूँ। लेकिन इस काम के लिए आप किसी और को रख सकते हैं। हम यह नहीं करेंगे।'

'ठीक है', बूढ़ा बोला। 'यह नहीं करना है, तो कुछ भी मत करो।'

'आप इसे क्या समझ रहे हैं? जानते हैं यह कौन है?'

'यह कुछ भी हो, मेरा इस बात से कोई मतलब नहीं है। यह राजा की बीवी हो या जज की बहन...मैं किसी की परवाह नहीं करता। मैं तो सुब्रह्मण्य स्वामी का सेवक हूँ, मैं दुनिया में किसी की परवाह नहीं करता।'

अंत में सावित्री को बीच में पड़कर कहना पड़ा कि बाग़ का काम उसे अच्छा लगता है और वह इसे खुशी से करेगी। पुजारी ने बगीचे में एक घंटा लगाया, हर पौधे पर झुक झुक कर और हर पत्ती के बारे में उसने कुछ न कुछ कहा और क्या करना है, यह भी बताया।

जब वे मंदिर में वापस आये तो मारी वहाँ जमीन पर बैठा था। बूढ़े ने पूछा, 'तुम यहाँ बैठे क्या कर रहे हो?'

'मैं इन्तज़ार कर रहा हूँ कि देवता के सामने अपना सिर झुकाऊँ।'

'मैं मंदिर अभी नहीं खोलूँगा। शाम को आना। यह मत सोचना कि मैं हर ऐरे-गैरे के लिए मंदिर खोल दूँगा—उनका नौकर नहीं हूँ मैं। जाओ, शाम को आ जाना।'

जब वे चलने को हुए, पोन्नी ने सावित्री से पूछा, 'आज खाने का क्या होगा?'

'इस वक्त यह सोचने की जरूरत नहीं है। इसके लिए समय है। मुझे चावल मिलने हैं न?'

'वह तो कल मिलेगा। और मुझसे यह मत कहना कि कल तक उपवास करोगी। बहुत भूखी रह ली हो!'

'कोई भूखा क्यों रहेगा?' बूढ़े ने कहा। 'मेरे घर चलो। मैं तुम्हें खाना दूँगा।' सावित्री ने इससे इनकार कर दिया। पोन्नी ने सुझाव दिया कि चावल का कुछ हिस्सा आज दे दिया

जाए। बूढ़े ने इस पर विचार किया, फिर मान लिया। बोला, 'लेकिन चौथाई आना कल से ही मिलेगा। पैसे मैं कभी भी एडवांस नहीं दूँगा।'

'महाराज, सिर्फ चावल से उसका क्या बनेगा? उसे चुटकी भर नमक और भात के साथ भी तो कुछ चाहिए!'

बूढ़े ने कानों पर हाथ रख लिये और बोला, 'अब बातें बंद करो। मैं तब से बातें ही सुन रहा हूँ। मैं पैसा किसी भी तरह एडवांस में नहीं दूँगा, कभी नहीं दूँगा। बस, कह दिया। अब वहाँ खड़े मत रहो और बातें बंद करो।'

लेकिन पोन्नी चुप नहीं रही, फिर भी बोली, 'लेकिन महाराज जी, स्वामी जी महाराज, आप उसे लकड़ी और एक बर्तन भी नहीं देंगे?'

'ठीक है, सही बात के लिए मैं कभी ना नहीं करता।'

सावित्री को यह देखकर तकलीफ हो रही थी कि सिर्फ जिंदा रहने के लिए कितनी छोटी-छोटी चीज़ों की जरूरत होती हैं। पोन्नी खुश होकर बोली, 'मैं तुम्हारे लिए नमक और छाछ ला दूँगी।'

'नहीं,' सावित्री जिद से बोली, 'तुम कुछ लाओगी तो मैं सब कुए में फेंक दूँगी।'

'तो सादा भात तुम कैसे खाओगी?'

'खा लूँगी। अगर तुमसे नमक और छाछ लेनी हो तो फिर चावल भी क्यों न ले लूँ? मैं सिर्फ चावल के लिए ही तो काम नहीं कर रही?'

दोपहर तक सावित्री ने गलियारे की सारी जगह साफ कर दी, उसने न सिर्फ पेड़ों से गिरे हुए सूखे पत्ते इकट्ठे करके फेंक दिये बल्कि भक्तों और दर्शनार्थियों द्वारा डाले गये फूल और नारियल के खोल भी झाड़ू देकर हटा दिये। पौधों की जड़ें साफ़ कीं और उनमें पानी दिया। फिर चूल्हा जलाकर अपने लिए चावल पकाते हुए उसे बड़ी खुशी हुई। 'यह चावल मेरा है, मेरा अपना, इसके लिए मैं किसी की कृतज्ञ नहीं हूँ। यह किसी ने मुझे दया करके नहीं दिया है।' अपना पकाया भात खाकर उसने पानी पिया, तो उसे बड़ी शांति महसूस हुई, उसमें विजय की भावना जगी, और चौके से बाहर आकर वह आम के पेड़ की छांह में आराम करने लेट गई। कोठरी की दहलीज़ पर सिर रख लिया, और ऊपर खुले नीले आसमान और पेड़ की गहरी हरी शाखाओं को निहारने लगी। अपनी कमाई से प्राप्त खाने के संतोष में यह सोचकर उसे धक्का-सा लग रहा था कि उसे उपकार की तरह भी कुछ स्वीकार करना पड़ रहा है। उसने अपने मन को यह कहकर समझाया कि अपने दैनिक वेतन में से कुछ बर्तन और लकड़ी के बदले वह कम करवा देगी। कल से बाहर जाकर वह जलाने के लिए लकड़ी के टुकड़े भी बीन लाया करेगी।

उसे यह याद करके भी बहुत खुशी हुई कि उसने कितनी दृढ़ता से पोन्नी की दया को अस्वीकार कर दिया...

बिना नमक के एकदम फीका भात निगलना उसके लिए काफी मुश्किल हो रहा था लेकिन इससे उसकी विजय का भाव भी दृढ़ होता था।

ठंडी हवा, आम की छांह और दोपहर का समय—उसे नींद आ गई। कुछ देर बाद कंकड़ों पर बाँस की ठक-ठक सुनकर उसकी नींद खुल गई। ‘ओ, सो रही हो, उठो फौरन, उठो!’ बूढ़ा चिल्ला रहा था। सावित्री ने आँखें खोलीं और उठकर बैठ गई।

‘चार बज गये और तुम सो ही रही हो?’

सावित्री ने खड़े होकर देखा कि सूरज आम के पेड़ के दूसरी पार उतर गया है और रोशनी की एक किरण मंदिर की दीवार पर पड़ रही है।

‘तुम्हें सोने के लिए नौकरी नहीं दी गई है,’ बूढ़े ने कहा और डंडा खट खटाता इधर-उधर उछलता रहा। वह नीचे जमीन पर बड़े ध्यान से देखता जाता था ‘तुमने हफ्ते भर का कूड़ा यहाँ छोड़ दिया है। इसे अच्छी तरह साफ़ क्यों नहीं किया?’

सावित्री ने उधर देखा, जहाँ उसने इशारा किया था।

‘यहाँ तो कोई भी कूड़ा नहीं है’, उसने काफी हिम्मत करके जवाब दिया। अब उसने साहस से काम लेने का फैसला कर लिया था।

‘उधर, यहाँ, यहाँ,’ बूढ़े ने छड़ी से इशारा करके बताया। ‘यह मत कहना कि मुझे दिखाई नहीं दिया।’

‘मेरी नजर सही है और मुझे तो कहीं कुछ दिखाई नहीं देता। मैंने सब तरफ अच्छी तरह सफाई की है।’

‘कर दी है। अच्छी बात है। मुझे लगता है, तुम काम अच्छी तरह जानती हो। मुझे ऐसे ही लोग पंसद हैं। आलसी लोग नहीं। अब मेरे साथ आओ।’

उसने मंदिर का द्वार खोला। भीतर अँधेरा था, और जले हुए तेल, फूल, धूप और चमगादड़ों की मिली-जुली गंध चारों ओर फैली थी। पुजारी ने काँसे के दो बड़े लैंप जलाये। फिर कहा, ‘फूल कहाँ है?’

‘कौन से फूल?’

‘कौन से फूल!’ बूढ़े ने उसी के शब्द दोहराये।

‘बगीचे में लगे फूल, और कौन से अब यह मत पूछना कि कौन सा बगीचा। अब तक फूल भी इकट्ठे नहीं किये?’

सावित्री दौड़कर बाग में गई और फूल ले आई। पुजारी ने फूल लिये और मूर्ति के पास गये। सावित्री ने दोनों हाथ जोड़कर मन ही मन देवता से प्रार्थना की, ‘सुमति, बाबू और कमला की रक्षा करना। वे ठीक से खायें-पियें और बड़े हों। उन्हें कभी कोई दुख न मिले।’ बूढ़ा कहने लगा, ‘आज पहला दिन है इसलिए मैं कुछ सुस्ती बरदाश्त कर लूँगा लेकिन कल से मैं यह धीरज नहीं दिखाऊँगा। अब एक कपड़ा लेकर सारे लैंप साफ कर डालो और उनमें तेल भर दो।’

‘कपड़ा कहाँ मिलेगा?’

‘कपड़ा पैदा करो, कहीं से भी करो। हर दफा यह मत पूछो कि यह कहाँ से लाऊँ, वह कहाँ है। तुम साड़ी का टुकड़ा फाड़ लो तो भी मुझे एतराज़ न होगा, लेकिन मंदिर की इज्जत हर हालत में कायम रहनी चाहिए। तुम इस तरह मुझे परेशान करती रहोगी तो यहाँ तुम्हें

रखने का फायदा ही क्या है! वह मवाली और उसकी बीवी मिन्नतें करके तुम्हें रखवा गये हैं। मैं किसी की परवाह नहीं करता, यह बात अच्छी तरह समझ लो। वह औरत गाँव में सबसे कड़वा बोलने वाली की तरह मशहूर है लेकिन मैं भी उससे कम नहीं हूँ।' बूढ़ा देवता की मूर्ति पर झुककर उसे धीरे-धीरे साफ करते हुए, उस पर पड़े सूखे फूल उठाते और जेवर चमकाते हुए बराबर इस तरह की बातें कहता रहा।

पाँच बजे दर्शन करने वालों ने आना शुरू कर दिया। बाहर खबर फैल गई थी कि एक रहस्यमय स्त्री मंदिर का काम करने के लिए रख ली गई है, इसलिए आज़ रोज़ से ज्यादा लोग आये। हर आदमी पहले चारों तरफ नज़र दौड़ाता, सावित्री को ध्यान से देखता, साथी को कुहनी मारता, फिर प्रदक्षिणा करके देवता के सामने माथा टेकता और पुजारी को दक्षिणा देता। लोगों ने सावित्री को इतना घूरा कि वह अपनी कोठरी में जाकर दरवाजा बंद करके बैठ गई।

शाम को जब दर्शनार्थियों की आवाज़ें सुनाई देना बंद हो गईं तब वह बाहर निकली। मंदिर के भीतर पुजारी नारियल, फल और सिक्के इकट्ठे करने में लगा था। आज वह बहुत खुश था। 'लोग अब ज्यादा धार्मिक होने लगे हैं,' यह कहते हुए उसके छोटे से चेहरे पर मुस्कान की लकीर उभर आई, और मूर्ति के सामने से पड़ते प्रकाश में उसके दाँत भी दिखाई दिये। फिर नारियल का एक टुकड़ा उसने सावित्री की तरफ फेंका, 'ले लो, यह तुम्हारा हिस्सा है?'

'मुझे यह नहीं चाहिए। मेरे लिए चावल ही काफी है।'

'और यह नारियल भी ले लो। तुम अच्छी औरत हो, यह तुम्हारा अधिकार है।'

'नहीं। मैं नारियल नहीं खाती।'

बूढ़ा घर जाने को तैयार हुआ। सावित्री उसे दरवाजे तक छोड़ने गई तो उसे अचानक अकेलेपन का अहसास हुआ। इस अँधेरे मंदिर में वह अकेली है, धुँधियाते लैंप, सितारों और दीवार के पीछे से दूर तक फैले आम के पेड़ के नीचे निपट अकेली। बूढ़े ने कहा, 'अगर यहाँ अकेले में डर लगे तो मेरे साथ घर चलो। वहाँ औरतों के साथ रात को सो जाना।'

'मुझे किस बात का डर है?' सावित्री ने पूछा और सोचने लगी कि दया और डर से कहीं भी छुटकारा नहीं है।

'इसका मुझे क्या पता?' बूढ़े ने कहा।

'मुझे किसी बात का डर नहीं है,' सावित्री ने दृढ़ता से कहा, 'मैं भगवान के घर में रहूँगी और वह मेरी रक्षा करेगा।'

लेकिन इन वीरतापूर्ण शब्दों का प्रभाव ज्यादा देर तक नहीं ठहरा। बूढ़े के बाहर जाते ही वह सोचने लगी कि उसने यह प्रस्ताव स्वीकार क्यों नहीं कर लिया। अब उसे हर चीज से डर लग रहा था। हवा भारी थी, चारों तरफ फैली चीजें डरावने आकार लेकर उसकी ओर घूर-घूरकर देख रही थीं। वह कोठरी की तरफ भागी और भीतर से दरवाज़ा बंद कर लिया। मिट्टी के एक छोटे से बर्तन में जरा सा तेल डालकर रूई की बत्ती उसमें जलाई।

समय बीतने के साथ वातावरण की शांति गहराती गई और उसके मन का भय भी

बढ़ता चला गया। उसे अपने ऊपर यह सोचकर गुस्सा आया कि ईश्वर ने हमें इतना दुर्बल क्यों बनाया है कि किसी के सहारे के बिना हम जिंदा नहीं रह सकते। मैं उस बाँस के डंडे की तरह हूँ जो दीवार के बिना खड़ा नहीं रह सकता...।

उसे घर की याद आने लगी। बच्चों का मोह, घर और आराम की आदतें उसे चारों तरफ से घेरने लगीं। खुरदरी जमीन पर छोटे से दिये के बगल में लेटे उसकी आत्मा तरह-तरह के संकटों से तड़पने लगी, और घर में मिलने वाली सुविधाओं, सुरक्षा और संग-साथ की भावनाओं से इन स्थितियों का विरोध उसकी समझ में आने लगा। वहाँ दरवाज़ा बंद करके और बत्तियाँ बुझाकर जब वह बिस्तर पर लेट जाती थी, तब उसे कितनी अच्छी नींद आ जाती थी! और उसके सामने यहाँ की यह दशा...और उसके बच्चे। उनके कारण जिंदगी में कितना अभाव महसूस हो रहा है। 'मुझे उन्हें देखना है। मुझे बाबू को देखना है, सुमति को देखना है, कमला को देखना है!' और वे प्रतिज्ञाएं, आधी रात को घर छोड़ देना...

आज की व्यर्थता, हताशा और स्वयं अपनी दुर्बलता...इन सबसे आक्रांत सावित्री हिचकियाँ ले-लेकर रोने लगी। 'मेरा दुर्भाग्य था कि मैं डूब नहीं पाई। अब मैं कभी पानी के पास नहीं जा सकूँगी। यह मेरी हार है। मुझे स्वीकार है यह। मैं इस लड़ाई के लिए नहीं बनी हूँ। मैं बाँस का डंडा भर हूँ...। शायद सुमति और कमला के बाल तब से काढ़े ही नहीं गये होंगे।'

सवेरा होते ही सावित्री बूढ़े पुजारी के घर गई और बोली, 'मैं जा रही हूँ।'

'क्या हुआ?'

'मैं अपने बच्चों और घर से अलग नहीं रह सकती।'

'ठीक है। मैंने तो तुमसे कहा नहीं था कि यहाँ आकर काम करो।'

'यह बर्तन है जो आपने कल मुझे दिया था और यह कमरे की चाभी है।'

'कमरे की हर चीज़ ज्यों की त्यों है?'

'हाँ। आप देख ही रहे हैं कि मेरे पास और कुछ नहीं है।'

'हुँ...वहाँ ले जाने लायक कुछ है भी नहीं।'

कुछ देर दोनों चुप रहे, फिर बूढ़ा बोला, 'अब यहाँ खड़ी क्या कर रही हो? मैंने तुम्हें कल का वेतन पहले ही दे दिया था।'

'हाँ', उसने कहा, हालांकि बूढ़े ने चावल ही दिया था, चौथाई आना नहीं दिया था। 'मैं आपके आशीर्वाद का इन्तजार कर रही हूँ।'

'ठीक है, भगवान तुम्हारा भला करे। अपने बच्चों को इस तरह छोड़कर फिर कभी कहीं मत जाना। अब तुम जा सकती हो।'

वह पोन्नी के घर पहुँचकर क्षण भर रुकी। उसकी पहली इच्छा हुई कि बिना बताये चली जाय...पराजय के लिए घोषणा करने की जरूरत नहीं होती...

उसने दरवाज़ा खटखटाया। पोन्नी ने भीतर आने को कहा। 'नहीं, मैं जा रही हूँ। यही बताने आई हूँ कि मैं अपने घर जा रही हूँ।'

यह सुनकर पोन्नी खुशी से खिल उठी।

'पहले मैंने सोचा कि तुम्हें बताये बिना चली जाऊँ।'

'ऐसा क्यों सोचा तुमने?'

'लेकिन मैं नहीं जा सकी। मैं सारी जिंदगी तुम्हारा प्यार और मदद याद करती रहूँगी। भगवान तुम्हारी गोद भर दे!'

'शहर तुम कैसे पहुँचोगी?'

'दो-तीन मील ही तो है। मैं चली जाऊँगी। फिक्र मत करो।'

'यह नहीं हो सकता,' पोन्नी ने कहा और बाहर निकल आई। फिर पड़ोसी के यहाँ आवाज़ देकर कहा, 'ज़रा घर की देखभाल करना। भीतर कोई नहीं है।'

दोनों मुख्य मार्ग पर आ गईं, उसके दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे पेड़ खड़े थे। पोन्नी बताने लगी कि पति कहाँ गया है। कहीं एक गाड़ी टूट गई, तो उसके लोग आये और सवेरा होने से पहले ही उसे साथ ले गये। बेचारे को बहुत मेहनत करनी पड़ती है।' हर गुजरने वाली गाड़ी को रोककर वह पूछती, 'भैया, शहर जा रहे हो क्या? एक सवारी ले जाओगे?' आखिरकार एक गाड़ी वाला मिल गया जो उधर ही जा रहा था। लेकिन वह पैसे ज्यादा माँग रहा था, इसलिए पोन्नी आधे घंटे तक उससे झगड़ती रही। आखिर फैसला हो गया और पोन्नी ने कहा, 'अब तुम गाड़ी में बैठो और मैं वापस चलूँ। खुश चेहरा लेकर घर में जाना। उदास मत दिखना। याद रखना, पुरुष बहुत अच्छे होते हैं, बस, उन्हें काबू में रखने की जरूरत होती है। मजबूत बनी रहो तो वे भी ठीक रहते हैं।'

'ठीक है,' सावित्री बोली। 'मैं याद रखूँगी।' उसने सोचा कि पोन्नी और मारी को अपने घर आने के लिए कहे, लेकिन रुक गई, वह किसी को बुलाने वाली कौन होती है!

'मुरुगन तुम्हारी रक्षा करे। तुम्हारे बच्चों की रक्षा करे और उन्हें सुख दे। मारी कभी-कभी एकाध आना कमाने के लिए शहर जाता है। मैं उससे कहूँगी कि तुमसे मिलकर आये', पोन्नी ने आखिरी बात कही, आँखों से निकलते आँसू पोंछे और सड़क के बीचों-बीच खड़ी होकर तब तक गाड़ी देखती रही जब तक वह नजर से ओझल न हो गई।

11

बच्चे हॉल में बल्ब के इर्द-गिर्द बैठे थे।

बाबू बोला, 'मेरी समझ में नहीं आ रहा है। हमें कुछ करना चाहिए। मुझे पापा पर विश्वास नहीं है।

कमला ने कहा, 'पापा कह रहे थे कि माँ दादाजी को देखने घर गई हैं।'

'मुझे विश्वास नहीं है, क्योंकि अगर वह...तुम अभी बच्चे हो। जो पापा कहते हैं, उसे मान लेते हो, लेकिन मैं नहीं मान सकता। क्यों, यह नहीं बताऊँगा।' इस पर कमला रोने को हुई। सुमति ने उसे बाँहों से घेर लिया और बाबू को आँखें दिखाईं। तुम इस तरह बात करके कमला को क्यों डरा रहे हो?'

बाबू बोला, 'मैं तो मज़ाक कर रहा था। चुप हो जाओ। माँ दादा को देखने गई हैं, जल्दी वापस आ जायेंगी। अब मत रोओ, छुटकी। मैं कल तुम्हें चंद्रू के घर ले जाऊँगा और उसने जो बिजली की ट्राम बनाई है, उसे दिखाऊँगा।'

कमला ने आँसुओं से भरा चेहरा ऊपर उठाया और पूछा, 'वादा करते हो?'

'हाँ।'

'कसम खाओ कि तोड़ोगे नहीं।'

'मैं कसम नहीं खाता। तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है तो मत करो। और क्या?'

'ऐसी बातें करोगे तो मैं रोने लगूँगी', कमला ने जवाब दिया। बाबू बोला, 'तुम्हें रोना नहीं चाहिए। इस तरह रोओगी तो अपने पाठ कैसे याद करोगी, इम्तहान कैसे पास करोगी और डाक्टर कैसे बनोगी?'

'मुझे डाक्टर नहीं बनना', कमला ने तुनक कर कहा।

'तो फिर क्या बनोगी? तुम तो कह रही थीं कि जब बड़ी हो जाओगी तो लेडी डाक्टर की तरह डाक्टर बनोगी?'

'मैं कुछ भी बनूँ, तुम्हें क्या करना! तुम अपने काम से मतलब रखो।'

'ढीठ मत बनो। बड़ों से कैसे बातें करते हैं, यह सीखो', बाबू ने गर्मी दिखाते हुए कहा तो कमला ने फिर रोने की तैयारी की।

सुमति ने कहा, 'अब तुम लोग मुझे अकेला छोड़ दो। नहीं तो मैं रसोइये को बुलाऊँगी।' उसने रसोइये को बुलाया और कहा, 'बाबू मुझे और कमला को तंग कर रहा है, हमें डाँट रहा है।'

रसोइये ने उँगली उठाकर बाबू को मना किया।

'मालिक घर आयेंगे तो मैं उनसे कह दूँगा। इन्हें छोड़कर अपनी पढ़ाई करो।'

'तुम अपना काम करो। तुम कौन होते हो मुझे धमकाने वाले?'

रसोइया दरी पर पालथी मार कर बैठ गया और बोला, 'अब मेरी आँखों में देखकर यह बात कहो।' उसने बाबू की आँखों में आँखें डाल दीं। बाबू बोला, 'ठीक है, मैं जाता हूँ। लेकिन मैं तुम्हारे जादू से डरने वाला नहीं।' लड़कियां चीखीं और अपने हाथों से बाबू की आँखें ढक दीं, उसका मुँह भी बंद कर दिया, जिससे वह और कुछ न बोल सके।

'हाथ हटाओ', रसोइये ने कहा, वह खतरनाक दिख रहा था।

'बस करो। हमारे लिए माफ कर दो। अब बाबू कुछ नहीं करेगा। उस पर से अपनी आँखें हटा लो।' इसके पीछे यह विश्वास था कि जो भी ऐसे वक्त रसोइये की आँखों में देखेगा, वह पत्थर हो जायेगा। उन्हें बताया गया था कि यहाँ मील भर सड़क पर जो पत्थर लगे हैं, वे उन लोगों के हैं जिन्होंने कभी रसोइये की आँखों में इस तरह देखा था। जब वे पत्थर बन गये तो सरकारी लोग उन्हें उठा ले गये और काट-पीट कर उन्हें सड़क पर लगा दिया।

लड़कियों ने बाबू को, रसोइये की नज़रों से बचाने के लिए जमीन पर पटक ही दिया और बाबू साँस लेने के लिए तड़पने लगा। तभी कहीं से रंगा वहाँ आ धमका और रसोइये ने उससे पूछा कि यह बताये कि बाबू को पत्थर बनाया जाये या नहीं। रंगा ने एक मिनट सोचा और बोला, 'नहीं, इसे छोड़ दो। अब इसकी माँ भी नहीं है।' फिर वह इस घटना के बारे में कहने लगा, 'लोग पता नहीं क्या-क्या कह रहे हैं! बात बिगड़ती ही जा रही है...।' उसने बताया कि इंजीनियर के घर में काम कर रहे उसके एक दोस्त ने इंजीनियर की बीवी को यह कहते सुना कि किसी घर की औरत एकदम अचानक घर छोड़कर चली गई, और जहाँ तक उसे पता है—क्योंकि वह भी तालपुर की रहने वाली थी और वहाँ से उसे ख़त आते रहते थे—कि औरत के पिता को कुछ नहीं हुआ है; और रंगा के दोस्त ने दफ्तर में एक नई औरत के बारे में भी कहानियाँ सुनी थीं जिसकी वजह से घर में झमेला हुआ।

रसोइया बोला, 'यह सही भी हो सकता है, गलत भी हो सकता है। तुम इन अफवाहों पर ध्यान क्यों देते हो? हमें अपना काम करते रहना है। और क्या कर रहे हैं, इससे हमें क्या मतलब! आज शाम कॉफ़ी हाउस में भी यहीं बातें हो रही थीं, और मैंने कहा कि उसका घर छोड़कर जाना अचानक ही हुआ और जहाँ तक हमें पता है, बूढ़े की सेहत के बारे में कोई तार या चिट्ठी नहीं आई थी, इसलिए अगर यह सच है तो भी किसी को इस पर विश्वास करने के लिए कैसे कहा जा सकता है? किसी से यह कहना कि यह ठीक है या ठीक नहीं है, इसका कोई मतलब नहीं है, फिर भी मैंने सबको सच बात यह बता दी कि काफी दिन से अमुक-अमुक वक्त पर घर नहीं लौट रहे हैं। मैंने यह जो कहा, इसमें क्या गलत बात है?'

'नहीं, गलत कुछ भी नहीं है', रंगा ने कहा। 'तुमने तो सच ही कहा...है न यह बात?'

कमला ने पूछा, 'तुम माँ की बात कर रहे हो?'

'क्यों?'

'क्योंकि हम माँ के बारे में जानना चाहते हैं कि उसके बारे में तुम्हें क्या पता है?'

रसोइया बोला, 'नहीं नहीं, हम किसी और की बात कर रहे हैं। तुम्हारी माँ की बात हम क्यों करेंगे? तुम भी किसी और की बात कर रहे थे, है न रंगा?'

'हाँ, हाँ, और की...।'

'मैं अपने चाचा की बात कर रहा था जिनके पास बहुत सारा पैसा है और जो वक्त पर घर नहीं लौटते, जिस वजह से लोग उन्हें घर से निकाल देना चाहते हैं।'

'कहाँ जाते हैं वो?'

'उनकी बहुत सी रखैलें हैं, उन्हीं के साथ रहते हैं।'

'रखैलें क्या होती हैं?' कमला ने सवाल किया।

बाबू ने रंगा को चेतावनी दी, 'तुम बच्चों से गलत शब्द बोल रहे हो, चुप रहो।'

'इस शब्द में गलत क्या है? "बीवी" भी तो ऐसा ही शब्द है। हम इसे भी तो बोलते हैं।'

सुमति बोली, 'अगर गलत शब्द है तो उसे छोड़ क्यों नहीं देते?' कमला ने कहा, 'हम इस वक्त कोई गलत शब्द नहीं सुनना चाहते। इसलिए इसे छोड़ दो। लेकिन मुझे यह बताओ, कि अगर तुम हमारी माँ के बारे में नहीं, अपने चाचा के बारे में बात कर रहे हो, तो तुमने तालपुर में दादा का जिक्र क्यों किया?'

'मेरे चाचा की बहिन के दादा भी तालपुर के हैं और वे बीमार थे, इसलिए वह वहाँ उसे देखने गई है।'

'लेकिन तुमने यह भी कहा कि कोई तार या खत नहीं मिला?'

'हाँ, कोई तार या खत नहीं आया, फिर भी वह यह सोचकर चली गई कि दादा बीमार हो सकते हैं...। अब तुम खाना शुरू करो, तो मैं और भी बताऊँगा। डिनर के लिए आ जाओ। देर हो रही है।'

रमानी घर आ गया। वह सीधा किचेन में गया और दहलीज़ पर खड़े होकर बच्चों को खाते देखने लगा।

'बाबू, आज शाम तुमने कितने रन बनाये?'

'मुझे एक बार बैटिंग करने को मिली और मैंने बीस रन बनाये।'

'बस, सिर्फ बीस? मैं जब तुम्हारी उम्र का था तो पचास से कम कभी नहीं बनाता था। इसकी वजह यह थी कि मैं खूब खाता था और तगड़ा बना रहता था। तुम बहुत दुबले हो और कुछ खाते भी नहीं हो। अपनी प्लेट पर नजर डालो, ज़रा सा चावल है। मैं इससे चौगुना चावल खाता था। डटकर खाओ, तभी ज्यादा रन बना पाओगे।...बाबू को और चावल दो।'

फिर कमला की तरफ देखकर रमानी बोला, 'तुम्हारे बाल क्यों उलझ रहे हैं? आज शाम को कंघी नहीं की?'

'पापा, भूल गई', कमला ने जवाब दिया।

सुमति बोली, 'इसने मुझे ठीक से बाल काढ़ने ही नहीं दिये। माँ को भी इसी तरह तंग करती थी।'

रमानी ने कमला पर तेज़ नज़र डाली और बोला, 'तुम इस तरह परेशान करती हो? तुम्हारे बाल सींक की तरह सीधे खड़े हैं और तुम बीमार लग रही हो। अब तुम्हें अच्छी लड़की बनना है। सुमति, तुम्हें और ज्यादा ध्यान देना चाहिए। इस तरह नहीं चलेगा।' जब तक बच्चों ने खाना खत्म नहीं कर लिया, वह उन्हें देखता रहा, फिर कपड़े बदलने चला गया।

खाकर हाथ धो लेने के बाद बाबू सुमति को एक तरफ ले गया और बोला, 'पता है, जानम्मा ने शाम को मुझसे क्या कहा?'

'नहीं।'

'कि माँ तालपुर नहीं गई हैं। मैं भी कुछ यही सोच रहा था।'

'फिर कहाँ हैं?'

'क्या पता? हो सकता है, डाकू उठा ले गये हों या शेर-चीतों ने खा लिया हो!'

सुमति यह सुनकर काँपने लगी और हाथ आँखों पर रख लिये। बाबू ने उसे डाँटकर कहा, 'यह मत करो। नाटक की जरूरत नहीं है। रोओगी तो मैं तुमसे बात नहीं करूँगा।'

'लेकिन अब हमें क्या करना चाहिए?' सुमति ने पूछा।

'यह तुम मुझ पर छोड़ दो। मैं पापा से बात करूँगा और कहूँगा कि माँ को ढूँढ़ना शुरू करें।'

'वो तुमसे नाराज़ हो जायेंगे।'

'नाराज़ हुए तो मैं कुछ और करूँगा।' उसने निश्चय कर लिया था कि अगर जरूरत पड़ी तो वह चंद्रू की मदद से पुलिस को खबर कर देगा।

कमला के सो जाने तक बाबू ने इन्तजार किया, इसके बाद हलके कदमों से रमानी के कमरे में पहुँचा। दरवाज़े पर खड़े होकर भीतर झाँका। पापा आराम कुर्सी पर लेटे उपन्यास पढ़ रहे थे। बाबू को सिर्फ उनकी पीठ दिखाई पड़ रही थी, इसलिए उसे पता नहीं लगा कि उनका मूड कैसा है, वह चाहता था कि एक नज़र उनका चेहरा देख ले, इसलिए वह अपनी मेज़ पर जाकर भूगोल की किताब निकालकर पढ़ने लगा—लेकिन एक शब्द भी उसके दिमाग़ में नहीं घुस रहा था। वह बेचैन हो उठा। सोचने लगा कि अगर वह यह वाहियात भूगोल की किताब ही पढ़ता रहा, तो माँ को बचाये जाने का आखिरी मौका भी खो देगा। किताब नीचे फेंककर वह फिर रमानी के कमरे की तरफ चला। उसकी पीठ ही दिखाई दे रही थी, वह एक क्षण के लिए ठिठका...। अगर माँ का नाम लेते ही पापा उसे पीटना शुरू कर दें, तो? अगर वे मारेंगे, तो वह जोर लगाकर अपने को छुड़ा लेगा, घर से बाहर दौड़कर निकल जायेगा और चंद्रू की मदद से पुलिस को खबर कर देगा...लेकिन कुछ वक्त और इन्तज़ार करे और फिर कभी पापा से बात करे? फिर एकदम इस विचार को दबा दिया और दृढ़ता से भीतर जाकर उनके सामने खड़ा हो गया।

'तुमने आज की पढ़ाई खत्म कर ली?' रमानी ने किताब से सिर उठा कर पूछा।

'जी।'

'तो जाकर सो जाओ।'

‘ठीक है...लेकिन मैं माँ के बारे में बात करने आया हूँ।’

‘क्या है माँ के बारे में?’

‘वह जिंदा है?’ यह कहकर वह एकदम रो पड़ा। रमानी को भी डर-सा लगा। आज सवेरे से वह भी परेशान हो रहा था। सावित्री को घर से निकले तीन दिन हो गये थे लेकिन अब तक कोई खबर नहीं आई थी। उसके भीतर का बलवान व्यक्ति जहाँ यह कह रहा था कि वह कहीं दूर नहीं गई होगी और अपनी गलती समझते ही वापस लौट आयेगी, वहीं उसका दुर्बल व्यक्तित्व—जिससे वह अब तक परिचित नहीं हुआ था—उसे बार-बार याद दिला रहा था कि उसे गये दो दिन और तीन रातें हो गई हैं, और अगर उसने कोई सख्त कदम उठा लिया या उसे कुछ हो गया, तो वह अपने बच्चों, उसके घर वालों और दुनिया वालों को क्या जवाब देगा? लोग बातें करेंगे: ‘इंग्लेडिया इन्श्योरेंस कंपनी के सेक्रेटरी की बीवी...यह सोचकर वह काँप उठा। अगर उसे कुछ हो गया तो उसे मालगुडी ही छोड़ना पड़ जायेगा...। और अब यह लड़का...।’

‘तुम रो क्यों रहे हो?’ उसने पूछा। बाबू ने हिचकियाँ लेते हुए कहा कि उसे पता चला है कि माँ तालपुर नहीं गई है और उसे भी इस बात का पता है। रमानी को यह सुनकर क्रोध आ गया। यह ज़रा सा बच्चा डरावनी कल्पनाएं लेकर मुझे और भी परेशान कर रहा है। ‘सुनो, मुझे ऐसी बातें पसंद नहीं हैं। बेवकूफी की बातों को सुनने की जरूरत नहीं है। जाकर सो जाओ।’

लेकिन बाबू वहीं खड़ा रहा। वह हिल ही नहीं रहा था, और जोर-जोर से रोये जा रहा था। रमानी ने बेबस क्रोध से उसे देखा। इच्छा हुई कि दो थप्पड़ रसीद करे, सावित्री होती तो कर भी देता। लेकिन इस समय वह कुछ नहीं कर पा रहा था। इसे भी अपनी माँ का हिस्टीरिया स्वभाव मिला लगता है! इस तरह तो यह सीन खड़ा कर देगा, जिसमें दूसरे बच्चे भी शामिल हो जायेंगे। उसने बाबू का हाथ पकड़ कर अपनी तरफ खींचा और कहा, ‘रोओ मत। तुम्हारी माँ सुरक्षित है। तुम अब बड़े हो गये हो, क्रिकेट वगैरह खेलते हो। माँ ज़रा सी बाहर चली गईं तो बच्चों की तरह रो रहे हो...।’

‘ऐसी बात नहीं है। मुझे शक होने लगा हैं,’ बाबू ने कहा और हाथ लगाकर जोर से नाक छिनकी; पिता के व्यवहार से उसे ताकत मिली थी। उसने बताया कि जानम्मा क्या कह रही थी। रमानी की बेचैनी बढ़ गई, उसे बाबू के साथ डर लगने लगा। अब वह यहाँ नहीं रह सकता था। वह आराम कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और बोला, ‘मैं नहीं जानता था। कि तुम इतने दुखी हो। मैं डाकखाने जा रहा हूँ, तुम्हारी माँ को तार देने कि फौरन वापस आ जाय।’

‘माँ वहीं है?’

‘हाँ, वहीं है। तुम्हें शक क्यों हो रहा है?’ उसने जल्दी से कपड़े पहने और बाहर निकल गया।’ मुझे कुछ और भी काम है। हो सकता है, देर हो जाये। अगर तुम्हें अकेले सोने में डर लगे तो रसोइये को भी हॉल में सुला लेना।

बाबू ने लौटकर अपनी बहनों को बताया, ‘पापा देर से आयेंगे। कह गये हैं कि रसोइये को हॉल में सुला लेना।’ कमला खुशी के मारे उछलने लगी। सुमति रसोइये को बुलाने चली

गई। बाबू भी उसके पीछे गया और कान में फुसफुसाकर बताया, ‘पापा माँ को तार करने गये हैं। वो जल्दी वापस आ जायेंगी। और पापा नाराज़ भी नहीं हुए।’

रमानी सड़कों पर निरुद्देश्य चक्कर लगाता यह सोचता रहा कि अब क्या करना चाहिए। कुछ देर बाद उसकी समझ में आया कि उसे अपने दोस्त पुलिस इन्सपेक्टर नायडू से मिलना चाहिए और उससे बात करनी चाहिए। हो सकता है, इससे काम आसान हो जाये। सोचकर उसने मार्केट रोड का रुख किया जहाँ सैंट्रल पुलिस स्टेशन के पीछे नायडू का क्वार्टर था।

‘हलो, रमानी’, इन्सपेक्टर ने उसे देखकर कहा, ‘अब तो तुम ईद का चाँद हो गये हो। बताओ, इस वक्त यहाँ कैसे—चोरी, डाका या आगजनी? क्या सेवा करूँ तुम्हारी?’

‘मैं इधर से गुजर रहा था, सोचा, मिलता चलूँ,’ रमानी ने कहा। वह आधा घंटा इन्स्पेक्टर के साथ रहा और शहर की बातें करता रहा, फिर निकल आया।

उसने गाड़ी मार्केट रोड से नार्थ स्ट्रीट की ओर घुमाई और नदी पर आ पहुँचा। ‘मैं यहाँ क्यों आया हूँ?’ अपने से पूछने लगा। ‘कोई अपनी बीवी की तलाश कैसे करता है?’ गाड़ी में बैठे-बैठे उसने अँधेरे में सामने फैली रेत पर नज़र डाली, जैसे उम्मीद कर रहा हो कि सावित्री अभी पानी में से निकलेगी और सीधे उसके पास आकर खड़ी हो जायेगी। वह देर तक इसी तरह देखता रहा। उसे अपने से नफरत हो रही थी कि वह इतनी चिंता कर रहा है। उसे सावित्री से नफरत हो रही थी जिसने उसे यहाँ आने के लिए विवश कर दिया था, बाबू से नफरत हो रही थी जिसने उसकी बेचैनी बढ़ा दी थी। उसे सब परेशान ही करते हैं, जिंदगी में कहीं भी चैन नहीं है।’ वह देर तक सोचता रहा, फिर अपने से बोला, ‘मैं एक दिन इन्तज़ार और करूँगा।’ इस मुसीबत से निकलने का यह उपाय, जो ज़रा भी स्पष्ट नहीं था, सोचकर कुछ देर के लिए वह खुश हो उठा। उसने गाड़ी पीछे घुमाई और वापस चला। अब शांत पड़ी मार्केट रोड से गुजरते हुए उसका मन हलका था। चौराहे पर पहुँचकर वह बायीं तरफ मुड़ा, रेसकोर्स रोड पर आया और अपने दफ्तर के सामने गाड़ी रोक दी।

12

सावित्री को घर पहुँचे एक घंटे से ज्यादा हो चुका था। बच्चों की उत्तेजना भी कम हो गई थी। उसने पूछने की हिम्मत की, 'तुम्हारे पापा कहाँ हैं?'

'कल रात तुम्हें तार देने गये थे लेकिन अभी वापस नहीं आये हैं। कह गये थे कि रसोइये को हॉल में सुला लेना। उसने आधी रात तक बड़ी मजेदार कहानी सुनाई लेकिन बाबू को अच्छा नहीं लग रहा था...'

'तुमने कहानी क्यों न सुनने दी, बाबू?'

'सारी रात कहानी सुनते रहते? तुम भी बकवास कर रही हो...।'

'तुम कहीं और जाकर सो जाते, हमें तो सुन लेने देते!'

'माँ, उसने कहा कि आज रात कहानी पूरी सुना देगा। हमें तुम्हारे बिना ज़रा भी डर नहीं लगा। हम रात भर बत्ती जलाकर रखते थे।'

'पापा हमें सिनेमा दिखाने ले गये और मिठाइयाँ भी लाये।'

बाहर गाड़ी का हार्न बजा। सुमति और कमला दौड़कर गये और बताया, 'माँ आ गई है।'

'आ गई?' रमानी ने पूछा और घर में घुसा। एक क्षण वह पायदान के पास ठिठका, फिर अपने कमरे में चला गया। सावित्री डायनिंग रूप के सामने बैठी काँप रही थी। अब वह क्या करेगा? क्या फिर घर से निकाल देगा?

घंटे भर बाद रमानी उसकी तरफ़ आया। सावित्री उठकर खड़ी हो गई। उसने उस पर हलकी सी नज़र डाली, उसकी बदरंग हालत देखी, फिर डायनिंग रूप में चला गया। रसोइये से बोला, 'जल्दी करो, मुझे दफ्तर जाना हैं...।' सावित्री सामने गलियारे में कुछ देर तक खड़ी रही। उसने खाना शुरू कर दिया था। फिर डायनिंग रूम के भीतर आ गई और उसके सामने आकर खड़ी होकर पत्ते की तरफ देखने लगी। पत्ते का कोना खाली था।'

'सब्जी और मँगाऊँ?'

'नहीं,' रमानी ने सिर उठाये बिना कहा।

'दही?' सावित्री ने पूछा।

'हाँ।'

सावित्री अलमारी खोलकर दही का बर्तन निकाल लाई।

शाम को साढ़े आठ बजे बच्चे खाना खाकर सावित्री को घेरे बैठे, बातों पर बातें किये

जा रहे थे, सवाल पूछ रहे थे, और आपस में झगड़ भी रहे थे। एक फर्लांग दूर से गाड़ी का हार्न सुनाई पड़ा—पहले लंबी आवाज़, फिर एकदम हलकी, जिसे सावित्री समझ गई कि उसका मूड आज सही है। पहले तो पुरानी आदत उस पर हावी हुई, कि रंगा को आवाज़ देकर फौरन गैराज खोलने को कहे, जिससे मालिक का घर में शांतिपूर्ण प्रवेश हो और कोई झंझट सामने न आये...लेकिन फिर उसने स्वयं को रोक लिया।

'गाड़ी आ गई,' बच्चे कूदने लगे।

'आ गई तो क्या हुआ?' सावित्री बोली; कार गैराज के सामने खड़ी हार्न पर हार्न बजाये जा रही थी।

'हमेशा की तरह रंगा गायब है और गैराज का दरवाज़ा नहीं खुला है', बाबू बोला।

'रंगा को ढूँढ़ो, या तुम खुद जाकर खोल दो,' सावित्री ने कहा।

रमानी पायदान पर रुका और चारों तरफ नज़र डालकर मीठी आवाज़ में बोला, 'आज हम सब कैसे हैं?' बच्चों ने जवाब में कुछ अस्पष्ट आवाजें कीं, तो उसने पूछा, 'तुम्हारी माँ ने क्या कहा?' और सब खिलखिलाकर हँसने लगे। वह कपड़े बदलने चला गया।

बाद में उसने पूछा, 'बच्चों ने खाना खा लिया?'

सावित्री ने जवाब दिया, 'हाँ।'

'तुमने भी खा लिया?'

'नहीं।'

'मेरा इन्तज़ार कर रही थीं?'

'हाँ।'

'कितनी अच्छी पत्नी हो,' वह बोला और हँसने लगा। वह उसे भी हँसने, मजाक करने और खुश होने के लिए उकसा रहा था।

फिर उसकी तरफ शैतानी-भरी नज़रों से देखकर बोला, 'मुझे तुम्हारे लिए चमेली के फूल लाने थे।' सावित्री ने मुस्कराने की कोशिश की।

वह कुछ देर तक उसे खाना खाते देखता रहा, फिर बोला, 'कितना कम खाती हो तुम! थोड़ा घी और लो। खूब खाओ और मोटी होकर दिखाओ। यह मत सोचना कि तुम्हारे खाने से मैं दिवालिया हो जाऊँगा।'

सावित्री ने हँसने की कोशिश की, और उसी के बीच बुदबुदाई, 'मोटी हो गई तो लोग मुझे पहचानेंगे भी नहीं।', लेकिन वह जानती थी कि यह कोई विशेष मजाक नहीं है। वह सोच रही थी, 'मेरे भीतर कुछ मर गया है।'

रमानी कहने लगा, 'आज मैं तुम्हारी ही खातिर जल्दी घर आया हूँ और तुम हो कि ढंग से बात भी नहीं कर रही हो। क्या हुआ है तुम्हें?'

'पता नहीं। मैं ठीक हूँ। थक गई हूँ और सोना चाहती हूँ।'

वह कहने लगा, 'आधा घंटा मुझे दो। साढ़े दस बजे सो जाना। कुछ बातें करेंगे। मैं सिर्फ तुम्हारे लिए जल्दी आया हूँ।'

'मैं खड़ी भी नहीं हो पा रही। बहुत थकान है।'

‘ठीक है, सो जाओ’, यह कहकर वह अपने कमरे में चला गया।

कुछ दिन बाद, एक दोपहर सावित्री हॉल में दरी पर अधसोई पड़ी थी। (बेंच अभी भी दफ्तर में ही थी)। पति दफ्तर चले गये थे, बच्चे स्कूल में थे, रसोइया अपना काम खत्म करके घूमने निकल गया था, और रंगा घर के पीछे कपड़े धो रहा था।

तभी कहीं से आवाज़ सुनाई दीं, ‘ताले ठीक करवा लो, छतरियों की मरम्मत करवा लो।’ सावित्री दरी से उठी और खिड़की पर बैठकर सड़क की तरफ़ देखने लगी। आवाज़ पास आती गई और उसने मारी को धूल-भरी सड़क से गुजरते देखा, कंधे पर औज़ारों का थैला लटका था और बगल में दो-तीन छतरियाँ दबी थीं, उसका काला चेहरा तेज धूप से पसीना-पसीना चमक रहा था।

सावित्री उत्तेजित हो उठी। वह उसे खाना खिलायेगी, पानी पिलायेगी, अच्छी-सी भेंट देगी और अपनी सबसे महत्वपूर्ण दोस्त पोन्नी के हाल-चाल पूछेगी; हो सकता है कि पोन्नी ने ही उसे शहर भेजा हो। वह खिड़की से उसे आवाज़ लगाने ही लगी थी, वह कुछ सोचकर रुक गई और उसे गुज़र जाने दिया। मारी घर से आगे निकल गया था। उसे अफसोस हुआ कि निकल जाने दिया; यह कितनी घटिया बात थी, कितनी अन्यायपूर्ण...

फिर दूसरी सड़क से उसकी आवाज़ आई ‘ताले ठीक करा लो।’

पसीने से उसका चेहरा चमक रहा था। शायद वह बिना कुछ खाये-पिये इस तेज़ धूप में घूम रहा था, शायद अभी तक उसकी एक पैसे की भी कमाई नहीं हुई थी। इस आदमी और इसकी बीवी ने केले खाने और नारियल का पानी पीने के लिए उसकी कितनी मिन्नत की थी...

‘उसे इस तरह जाने देना अच्छा नहीं है, लेकिन मैं भी क्या करूँ?’ वह सोचती रही।

उसने रंगा को बुलाकर कहा, ‘उस ताले वाले को बुला लाओ जो उस सड़क पर आवाज़ लगा रहा है...अभी तो यहीं था।’

‘जी, मैडम!’

लेकिन जैसे ही रंगा बाहर जाने को हुआ, उसने अपना विचार बदल दिया, ‘रहने दो, मत बुलाओ, जाने दो उसे...’, और सोचा, ‘मैं उसे कैसे बुला सकती हूँ? मेरे पास उसके लिए है क्या?’

फिर काफी दूर से उसकी आवाज़ सुनाई दी, ‘ताले ठीक करवा लो, छाते ठीक करवा लो...।’

सुमित्रा देर तक खिड़की पर बैठी उसके भूखे चमकते चेहरे और आवाज़ ‘ताले...छतरियाँ...’ सुनती रही, आवाजें बंद हो गईं, तब भी वह यही सुनती रही।

◘◘◘

हमारे अन्य श्रेष्ठ प्रकाशन

चर्चित पुस्तकें

आवारा मसीहा, विष्णु प्रभाकर, **अदम्य साहस** डॉ. अब्दुल कलाम, **प्रेरणात्मक विचार** डॉ. अब्दुल कलाम, **मेरी आपबीती** बेनज़ीर भुट्टो, **मेरे सपनों का भारत** महात्मा गांधी, **सत्य के प्रयोग** महात्मा गांधी, **मेरा जीवन दर्शन** डॉ. कर्णसिंह, **परिवर्तन और राजनीति** एन.के. सिंह, **भारतीय अर्थतंत्र**, **इतिहास और संस्कृति** अमर्त्य सेन, **आर्थिक विकास और स्वातन्त्र्य** अमर्त्य सेन, **आर्थिक विषमताएं** अमर्त्य सेन, **गरीबी और अकाल** अमर्त्य सेन, **भारत विकास की दिशाएं** अमर्त्य सेन, **भारतीय राज्यों का विकास** अमर्त्य सेन, **हिंसा और अस्मिता का संकट** अमर्त्य सेन, **भारतीय दर्शन** डॉ. राधाकृष्णन्,

शब्दकोश : कोश : शिक्षा

राजपाल बृहत् हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश डॉ. हरदेव बाहरी, **राजपाल वृहत् अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश** डॉ. हरदेव बाहरी, **राजपाल हिन्दी शब्दकोश** डॉ. हरदेव बाहरी, **शिक्षार्थी हिन्दी-अंग्रेज़ी शब्दकोश** डॉ. हरदेव बाहरी, **राजपाल अंग्रेज़ी-हिन्दी शब्दकोश** डॉ. हरदेव बाहरी, **राजपाल अंग्रेज़ी-हिन्दी पारिभाषिक शब्दकोश** डॉ. हरदेव बाहरी, **राजपाल हिन्दी-अंग्रेज़ी थेसॉरस** गोपीनाथ श्रीवास्तव, **राजपाल अंग्रेजी-हिन्दी राजभाषा प्रयोगकोश** गोपीनाथ श्रीवास्तव, **राजपाल लोकोक्ति कोश** हरिवंश राय शर्मा, **राजपाल साहित्यिक मुहावरा कोश** हरिवंश राय शर्मा, **राजपाल साहित्यिक सुभाषित कोश** हरिवंश राय शर्मा, **विद्यार्थी हिन्दी शब्दकोश** डॉ. ओमप्रकाश, **शब्दार्थ-विचार कोश** आचार्य रामचन्द्र वर्मा, **शब्द-परिवार कोश** डॉ. बदरीनाथ कपूर, **व्यावहारिक उर्दू-हिन्दी शब्दकोश** डॉ. सैयद असद अली, **कहावत कोश** समर सिंह

विश्वकोश : संदर्भ-ग्रंथ

विश्वकोश-I (पृथ्वी-आकाश-खनिज) डॉ. बालकृष्ण, **विश्वकोश-II (आविष्कार-खोज)** डॉ. बालकृष्ण, **विश्वकोश-III (जीव-जंतु : पेड़-पौधे)** डॉ. बालकृष्ण, **विश्वकोश-IV (विज्ञान-वैज्ञानिक)** डॉ. बालकृष्ण, **भारतीय संस्कृति कोश** लीलाधर शर्मा पर्वतीय, **भारतीय चरित कोश** लीलाधर शर्मा पर्वतीय, **अंतरराष्ट्रीय व्यक्ति कोश** विश्वमित्र शर्मा, **भारत रत्न** विश्वमित्र शर्मा, **20वीं सदी के सौ प्रसिद्ध भारतीय** विश्वमित्र शर्मा, **नोबेल पुरस्कार कोश** विश्वमित्र शर्मा, **नोबेल पुरस्कार सम्मानित भारतीय** विश्वमित्र शर्मा, **भारत के राष्ट्रपति** भगवतीशरण मिश्र, **भारत के प्रधानमंत्री** भगवतीशरण मिश्र, **नोबेल पुरस्कार विजेता साहित्यकार** राजबहादुर सिंह, **विश्व के महान वैज्ञानिक** फिलिप केन, **विश्व की महिला अंतरिक्ष यात्री** कालीशंकर, **भारतीय भाषाओं के पुरस्कृत साहित्यकार** डॉ. आरसू, **50 क्रांतिकारी** राजेन्द्र पटोरिया, **100 प्रसिद्ध भारतीय खिलाड़ी** चित्रा गर्ग

उपन्यास

मानस का हंस (पुरस्कृत) अमृतलाल नागर, **नाष्यौ बहतु गोपाल** अमृतलाल नागर, **खंजन नयन** अमृतलाल नागर, **बिखरे तिनके** अमृतलाल नागर, **पीढ़ियां** अमृतलाल नागर, **करवट** अमृतलाल नागर **सेठ बांकेमल** अमृतलाल नागर, **भूख** अमृतलाल नागर, **सात घूंघट वाला मुखड़ा** अमृतलाल नागर, **सोमनाथ** आचार्य चतुरसेन, **वयं रक्षामः** आचार्य चतुरसेन, **वैशाली की नगरवधू** आचार्य चतुरसेन, **सोना और खून** (चार भागों में) आचार्य चतुरसेन, **कब तक पुकारूं** रांगेय राघव, **घरौंदा** रांगेय राघव, **धरती मेरा घर** रांगेय राघव, **न आने वाला कल** मोहन राकेश, **समग्र उपन्यास** कमलेश्वर, **कितने पाकिस्तान** कमलेश्वर, **एक सड़क सत्तावन गलियां** कमलेश्वर, **काली आँधी** कमलेश्वर, **सुबह दोपहर शाम** कमलेश्वर, रेगिस्तान कमलेश्वर, **अभिज्ञान** नरेन्द्र कोहली, **आतंक** नरेन्द्र कोहली, **साथ सहा गया दुख** नरेन्द्र कोहली, **जंगल** नरेन्द्र कोहली, **एक नौकरानी की डायरी** कृष्ण बलदेव वैद, **शिकस्त की आवाज़** कृष्ण बलदेव वैद, **नर नारी** कृष्ण बलदेव वैद, **एक इंच मुस्कान** राजेन्द्र यादव/मन्नू भंडारी, **जंगल के फूल** राजेन्द्र अवस्थी, **अकेली आवाज़** राजेन्द्र अवस्थी, **कुहरे में युद्ध** शिवप्रसाद सिंह, **औरत** शिवप्रसाद सिंह, **रात भारी है** अमृता प्रीतम, **कैली कामिनी और अनीता** अमृता प्रीतम, **जलते बुझते लोग** (एक ही जिल्द में तीन उपन्यास) अमृता प्रीतम, **यह कलम यह कागज़ यह अक्षर** अमृता प्रीतम, **ययाति** वि.स. खांडेकर, **कोणार्क** प्रतिभा राय, **उसका अपना आकाश** प्रतिभा राय, **चित्रप्रिया** अखिलन, **एक गधे की आत्मकथा** कृश्न चंदर, **तापसी** कुसुम अंसल, **पहाड़ चोर** सुभाष पंत, **गोदान** प्रेमचंद, **गबन** प्रेमचंद, **औरतें** खुशवंत सिंह, **समुद्र की लहरों में** खुशवंत सिंह, **मुजरिम हाज़िर** विमल मित्र, **अन्तर्गाथा** पी.वी. नरसिंह राव, **कुली** मुल्कराज आनंद, **अछूत** मुल्कराज आनंद, **सात साल** मुल्कराज आनंद, **दिशाएं बदल गईं** नरेश भारतीय, **सावित्री** व्योहार राजेन्द्रसिंह **कुली बैरिस्टर** राजेन्द्रमोहन भटनागर, **गाइड** आर.के. नारायण, **स्वामी और उसके दोस्त** आर.के. नारायण, **वध** मनहर चौहान।

कविता

मधुशाला बच्चन, **मधुबाला** बच्चन, **मधुकलश** बच्चन, **खैयाम की मधुशाला** बच्चन, **मेरी श्रेष्ठ कविताएं** बच्चन, **निशा निमंत्रण** बच्चन, **जाल समेटा** बच्चन, **दो चट्टानें** बच्चन, **सतरंगिनी** बच्चन, **मिलन यामिनी** बच्चन, **आत्मिका** महादेवी, **नीलांबरा** महादेवी, **दीपगीत** महादेवी, **चुनी हुई कविताएं** अज्ञेय, **गीतांजलि** रवीन्द्रनाथ टैगोर, **साधना** रवीन्द्रनाथ टैगोर, **पथ का गीत** रवीन्द्रनाथ टैगोर, **आखिर यह मौसम भी आया** रमानाथ अवस्थी, **क्या खोया क्या पाया** अटलबिहारी वाजपेयी, **अंग्रेजी के श्रेष्ठ कवि और उनकी श्रेष्ठ कविताएं** कुलदीप सलिल, **अन्तरा** विश्वनाथ।

कहानियाँ

मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियां मोहन राकेश, **अज्ञेय की संपूर्ण कहानियां** अज्ञेय,

एक दिल हज़ार अफ़साने अमृतलाल नागर, **मालगुड़ी की कहानियां** आर.के. नारायण, **सत्यजित राय की कहानियाँ** सत्यजित राय, **समग्र कहानियां** कमलेश्वर **मेरी प्रिय कहानियां** अज्ञेय, आचार्य चतुरसेन, भगवतीचरण वर्मा, रांगेय राघव, अमृतलाल नागर, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, राजेन्द्र यादव, कृश्न चन्दर, कमलेश्वर, मन्नू भंडारी, फणीश्वनाथ रेणु, यशपाल, इलाचन्द्र जोशी, भीष्म साहनी,

राजपाल



मेरा कुछ नहीं है इस दुनिया में। औरत के पास उसके बदन के अलावा अपना और क्या है? इसके अलावा सब कुछ उसके बाप का है, पति का है, बेटे का है। बच्चे तुम्हारे हैं, क्योंकि तुमने मिडवाइफ और नर्स को पैसा दिया है। तुम इनके कपड़ों और पढ़ाई का खर्चा देते हो और यह सब भी लो...' यह कहकर उसने अपनी हीरे की अँगूठी, नथ, नेकलेस, सोने की चूड़ियाँ, सब ज़ेवर उतारे और उसके सामने फेंक दिये।

इस उपन्यास में पति-पत्नी के बनते-बिगड़ते सम्बन्धों का बहुत ही मार्मिक और हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है। साहित्य अकादमी से पुरस्कृत आर. के. नारायण की अन्य लोकप्रिय पुस्तकें हैं—'मालगुड़ी की कहानियाँ', 'स्वामी और उसके दोस्त', 'गाइड' और 'इंग्लिश टीचर'।

डार्क रूम

आर. के. नारायण

राजपाल